अष्टसिद्धिः

व्ययभार वृद्धि सहित मू ८०।-

श्रीगणेशाय नमः

अष्टसिद्धि

हिन्दीटीकासहित

जिसको

मुरादाबादनिवासिमिश्रसुखानन्दात्मजपण्डितकन्हैयालालमिश्रने अनेक तान्त्रिकग्रन्थोंद्वारा संग्रह करके सरल भाषानुवादसे विभूषित किया ।

★

देवीनां च यथा दुर्गा वर्णानां ब्राह्मणो यथा ।
तथा समस्तशास्त्राणां तन्त्रशास्त्रमनुत्तमम् ॥

★

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
मालिक–"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस
कल्याण–बम्बई.

संवत् २०४२, सन् १९८५

संस्करण १९८५

© प्रकाशक

व्ययभारवृद्धिसहित मूल्य १५ रुपये मात्र

मुद्रक व प्रकाशक :
मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
बम्बई–४०० ००४ के लिए
दे. स. शर्मा मैनेजर द्वारा
श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेतवाड़ी बम्बई ४ में मुद्रित

भूमिका

प्रिय पाठकगण !

कलियुगमें एकमात्र तंत्रही मनुष्योंको धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करनेवाले हैं, देव देव भगवान् महादेवजी मुक्तकंठसे ऐसा कह गये हैं। तन्त्रोक्त मन्त्रोंके बलसे पूर्वकालिक ऋषिगण जो जो अद्‌भुत कार्य कर गये हैं, उनका वर्णन करना कठिन है। जगत्‌में ऐसा कोई कार्य नहीं है, कि जो मंत्रके बलसे सिद्ध न हो सके। किंतु सब कार्योंमेंही योग्य गुरुसे दीक्षित होकर उनकी आज्ञानुसार कार्य करना चाहिये, तब अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी। पुस्तक तो केवल उपलक्षणमात्र है। इसी कारण मैंने सर्व साधारणके हितार्थ अनेक तन्त्रोंसे अनेक प्रकारके मंजुघोषदेवता, सुरसुंदरी, मनोहरा, कनकवती, कामेश्वरी, रतिसुंदरी महाविद्या, यक्षिणी, प्रचंडचंडिका, छिन्नमस्ता, षोडशी बटुकभैरव, श्यामा, आदि देवियोंके मंत्र, ध्यान, यंत्र, जप आदि विषयों का और विविध साधनादिका संग्रह करके 'अष्टसिद्धि' नामक यह पुस्तक प्रकाशित की है और साथही सबके समझने योग्य प्रतिश्लोक का भाषाटीका भी लिखा है। तथा शुद्धतापरभी विशेष दृष्टि रक्खी गई है।

अब यह पुस्तक सर्वसत्वसहित अपने परम हितैषी, परमोदार माननीय मुंबईस्थ "श्रीवेंङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसके मालिक तथा कल्याणस्थित लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेसके मालिक श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीके करकमलमें अर्पण करता हूं.

यदि साधकमंडलीको इसके द्वारा कुछभी लाभ पहुँचा तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा।

विनीतनिवेदक–**कन्हैयालालमिश्र.**

मुहल्ला–**दीनदारपुरा, मुरादाबाद सिटी.**

(युक्तप्रदेश.)

श्रीगणेशाय नमः

अष्टसिद्धिविषयानुक्रमणिका

विषय :	पृष्ठांक.
मंगलाचरण	५
मंजुघोषमंत्र	५
उक्त देवताका करांगन्यास ...	८
कुक्कुटेश्वरतंत्रस्थ मंजुघोषमंत्र ...	११
उक्त देवताका ध्यानादि	१२
भैरवतंत्रस्थ मंजुघोषमंत्र	१९
मंजुघोषमंत्र का उद्धार	२१
सुरसुंदरीसाधन	२३
मनोहरासाधन	२७
कनकवतीसाधन	२९
कामेश्वरीयोगिनीसाधन ...	३१
रतिसुंदरीसाधन	३३
महाविद्या (नटिनी) साधन ...	३६
अन्यमहाविद्यासाधन	३८
यक्षिणीसाधन	४०
प्रचंडचंडिकासाधन	४१
प्रचंडचंडिकामंत्रपूजा	४२
छिन्नमस्तादेवीकी पूजाप्रणाली ...	४४
छिन्नमस्तादेवीकी पूजाका यंत्र ...	५१
छिन्नमस्तादेवीका अन्य मंत्र ...	५७
षोडशीविद्याकी प्रशंसा	६०
अन्य मंत्र	६२
हनुमत्कल्प	६४
हनुमत्साधनवर्णन	६५
हनुमानका ध्यान	६६
वीरसाधन	६९
पारिभाषिकषोडशीमंत्र ...	७१
महाषोडशीमंत्र	७२
बीजावलीषोडशी मंत्र	७९
षोडशीके अन्यान्य मंत्र	८०
कामराजमंत्र और लोपामुद्रामंत्र ...	८४

विषयः	पृष्ठांक.
अन्य मंत्र	८६
सृष्टि स्थिति आदिके मंत्र ...	९०
स्वप्नावती और मधुमतीके मंत्र ...	९१
पंचमीविद्या	९२
शक्तिकूट	९३
दीपनीमंत्र	९६
बटुकभैरवमंत्र	९८
न्यास	९९
ध्यान	१००
राजस ध्यान	१०१
तामस ध्यान	,,
ध्यानोंका फल	१०२
बलिदान	१०५
श्यामाप्रकरण	१०६
श्यामामंत्र	१०७
दक्षिणकालिकाकी पूजाप्रणाली ...	१०८
षोढान्यास	११२
बीजन्यास	११५
अन्य प्रकारका ध्यान	११८
पूजाका यंत्र	१२०
पीठपूजा	१२१
दक्षिणकालिकादेवीके अन्य मंत्र. ...	१३१
सबमें प्रधान मंत्र	१३३
विश्वसारतंत्रमें लिखे हुए दक्षिण कालिकाके मंत्र	१३७
विंशतिवर्णात्मक मंत्र	१४३
अन्यान्य मंत्र	,,
गुह्यकालीमंत्र	१४६
भद्रकालीमंत्र	१४९
उच्छिष्टगणेशमंत्र	१५२

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

श्रीगणेशाय नमः

अष्टसिद्धि

हिन्दी टीका सहित

मङ्गलाचरण

यस्येश्वरस्य विमलं चरणारविन्दं
संसेव्यते विबुधसिद्धमधुव्रतेन ।
निर्माणशातकगुणाष्टकवर्गपूर्णं तं
शङ्करं सकलदुःखहरं नमामि ॥ १ ॥

श्रीशङ्कर शङ्कर सदा, मदन जलावनहार ।
मिश्र कन्हैयालालके, कारज देहु सँवार ॥ १ ॥
तुमरी कृपाकटाक्षतैं, सिद्धि होत सब काम ।
मम हिय गगन इन्दु इव, करहु सदा विश्राम ॥ २ ॥

जाड्यौघतिमिरध्वंसी संसारार्णवतारकः ।
श्रीमञ्जुघोषो जयतां साधकानां सुखावहः ॥ १ ॥

जो साधकजनोंकी जडता [मूर्खता] का नाश करके उनको संसारसागरसे उद्धार करते हैं, साधकोंको शुभ देनेवाले उन देवादिदेव श्रीमंजुघोषकी जय हो ॥ १ ॥

तत्र आगमोत्तरे मंजुघोषमन्त्रः

मातृकादिं समुद्धृत्य वह्निबीजं समुद्धरेत् । वामांशं कूर्मसंज्ञं च ततो मेषेशमुद्धरेत् ॥ मीनेशं च ततः कुर्याद्वामनेत्रेन्दुसंयुतम् । षडक्षरो मनुः प्रोक्तो मंजुघोषस्य शम्भुना ॥ मातृकादिरकारः, वामांशोऽन्तस्थचतुर्थः,

कूर्मेश्चकारः, मेषेशो लकारः, मीनेशो धकारः ॥ इयं तु दीपनी प्रोक्ता मूलमन्त्रस्तु कथ्यते । अङ्कुशं शक्तिबीजं च रमाबीजं ततः प्रिये ॥ बीजत्रयात्मको मन्त्रो जाड्योघध्वान्तनाशनः । शक्तिबीजं रमाबीजं कामबीजं ततः प्रिये॥ विद्या श्रुतिधरी प्रोक्ता एषा वर्णत्रयात्मिका। हकारो वह्निमारूढो वामनेत्रेन्दुभूषितः ॥ प्रोक्ता सार्वज्ञविद्येयं एकवर्णात्मिकाप्रिये। सिद्धः साध्यः सुसिद्धो वा साधकस्य रिपुश्च वा ॥ तदा मन्त्रो भवेद्भक्त्या शुभदो बुद्धिदो भवेत् ॥

मंजुघोषका मन्त्र कहा जाता है। अ र व च ल तां महादेवजीने आगमोत्तरमें मंजुघोषका यह षडक्षर मन्त्र कहा है। यही मञ्जुघोषका दीपन मन्त्र है। मूलमन्त्र कहा जाता है। मूलमन्त्र यथा–क्रों ह्रीं श्रीं मंजुघोष देवका यह त्र्यक्षर-मन्त्र जडताको नष्ट करता है। ह्रीं श्रीं क्लीं इस त्र्यक्षरमन्त्रसे मञ्जुघोषकी आराधना करनेपर साधक श्रुतिधर होता है। ह्रीं यह एकाक्षर मन्त्र साधकको सर्वज्ञता प्रदान करता है। यह मन्त्र साधकका सिध्य साध्य सुसिद्ध अथवा रिपु होनेपर भी आराधनामें कोई दोष नहीं होता। यह शुभदायक मन्त्र भक्तिपूर्वक जपनेसे साधकको बुद्धि प्रदान करता है ॥ १ ॥

मध्याह्ने सलिले चैव भोजने भाजने तथा। गोमये तु बहिर्देशे मैथुने रमणीकुचे॥ गोष्ठे च निशि गोमुण्डे यन्त्रं डमरुसन्निभम्। विलिख्य मन्त्रवर्णांश्च त्रिंश ऊर्ध्वं अधस्तथा ॥ लिखेच्चन्दनलेखन्या प्रयत्नात् साधको-

त्तमः । उच्चाटने लिखेद्य (मन्त्रं) गोचर्मणि विशेषतः ॥ सलिले विजयी नित्यं भोजने च महेश्वरः । गोमये वावदूकः स्याद् गोष्ठे सर्वज्ञतांव्रजेत् ॥ कुचे श्रुतिधरो नित्यं गोमुण्डे च महाकविः । गोमूत्रं बदरीमूलं चन्दनं पांशुमेव च ॥ एकीकृत्याष्टधा जप्त्वा तिलकं धारयेत् सदा। नमस्कृत्य वरं श्रेष्ठं प्रार्थयेद् भक्तितत्परः॥ वरं प्राप्य च तस्माद्वै विहरेत्तु यथासुखम् । नानादेवार्चनं स्नानं प्रणवोच्चारणं न तु ॥ वस्त्राञ्चलेन दन्तानां शोधनं लवणेन वा । रात्रिवासा न मुञ्चेत न शुचिः स्यात्कदाचन ॥ एवं कृत्वा प्रयत्नेन ज्ञात्वा गुरुमुखात् सुधीः । मासैकेन कवीन्द्रः स्याद् द्विमासेनैव ईश्वरः ॥ त्रिभिर्मासैर्भवेन्मर्त्यः सर्वशास्त्रविशारदः । पुत्रार्थी लभते पुत्रं धनार्थी विपुलं धनम् ॥ आयुरारोग्यकामस्तु सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ २ ॥

मध्याह्नके समय जलमें, भोजनोपरान्त भोजनके पात्रमें, ग्रामके बाहिरी भागमें गोमयपर, मैथुनकालमें रमणीके स्तनपर और रात्रिके समय गोष्ठस्थानमें गोमुण्डपर डमरुसन्निभ यन्त्र लिखकर यन्त्रके ऊर्ध्वमें मन्त्रके तीन वर्ण और अधोभागमें तीन वर्ण लिखे । साधक चन्दनकाष्ठकी कलम बनाकर उसके द्वारा यत्नपूर्वक यन्त्र अंकित करे । उच्चाटनकार्यमें गोचर्मपर यंत्र अंकित करना चाहिये । जलमें स्थित होकर इस मन्त्रका जप करनेपर साधक विजयी होता है । और भोजनकालमें इस देवताकी आराधना करनेपर महा धनशाली

होता है । गोमय पर यन्त्र अंकित करके मंत्र जपनेसे साधककी वाक्‌शक्ति बढ जाती है। गोष्ठस्थानमें आराधना करनेपर साधक सर्वज्ञता लाभ करता है । युवतीके स्तनपर यन्त्र लिखकर जप करनेसे साधक श्रुतिधर और गोमुण्डपर यन्त्र अंकित करके पूजा करनेसे महाकवि होता है । इस देवताकी आराधनामें गोमूत्र बदरीमूल चन्दन और धूलि यह सब पदार्थ इकट्ठे करके उन पर मूलमन्त्र आठबार जपकर तद्द्वारा ललाटमें तिलक धारण करें । फिर देवताको नमस्कार करके भक्तियुक्त होकर अभिलषित वरकी प्रार्थना करे । इस प्रकार देवतासे वर पाकर यथासुख विचरण करे । मंजुघोषकी आराधनामें अन्य देवताकी पूजा, स्नान और ॐ यह शब्द उच्चारण न करे । वस्त्राञ्चल अथवा लवण द्वारा दांत शोधन करे । रात्रिवास (रातके कपडे) परित्याग न करे, सर्वदा अशुद्ध रहे, साधक गुरुमुखसे यह मन्त्र ग्रहण करके उक्त प्रकार एक मासपर्यन्त आराधना करनेपर प्रधानकवि, दो मासमें महाधनशाली और तीन मास आराधना करनेपर सब शास्त्रोंमें महापंडित होता है। इस मन्त्रसे आराधना करनेपर धनार्थी मनुष्य विपुल धन, पुत्रकी अभिलाषा करनेवाला पुत्र, आयुष्यकामी आयु और आरोग्यकी कामना करनेवाला आरोग्य लाभ करता है और जो मनुष्य जिस जिस कामनासे इस देवताकी आराधना करता है उसकी वही वही कामना पूर्ण होती है ॥ २ ॥

ततः कराङ्गन्यासौ । क्षां शां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिषु । तथा च तन्त्रे सर्म्वन्तको वकेशश्च द्वौ वर्णौ

कथितो प्रिये। षड्दीर्घभाग्भ्यामेताभ्यां षडङ्गानि समाचरेत् ॥ सम्वर्त्तकः क्षकारः वकेशः शकारः ॥ ध्यानम् । शशधरमिव शुभ्रं खड्गपुस्ताङ्कपाणिं सुरुचिरमतिशान्तं पञ्चचूडं कुमारम् । पृथुतरवरमुख्यं पद्मपत्रायताक्षं कुमतिदहनदक्षं मञ्जुघोषं नमामि ॥ पीठपूजां ततः कुर्यादाधाराद्यादिशक्तिभिः । भूतप्रेतादिभिः कुर्यात् पीठासनमनन्तरम् ॥ ज्ञानदात्रे नमः पाद्यं बुद्धिदात्रे तथाचमम् । जाड्यनाशाय गन्धस्यादर्घ्यं यक्षाधिपाय वै ॥ सर्वसिद्धिप्रदायेति पुष्पं दद्याद्विचक्षणः । कुन्दपुष्पं समादाय भैरवान् पूजयेत्ततः ॥ असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोध उ मत्तसंज्ञकः । कपाली भीषणश्चैव संहारश्चाष्टमः स्मृतः ॥ ततो धूपादिकं दत्त्वा प्रसूनानि विसर्जयेत् । तैः पुष्पैः पूजयेदष्टौ यक्षिणीश्च विशेषतः ॥ सुरादिसुन्दरी चैव मनोहारिण्यनन्तरम् । कनकावती तथा कामेश्वरी च ॥ रतिकर्यथ पद्मिनी च नटी चैव अनुरागिण्यनन्तरम् । पूज्या एतास्तु योगिन्यो ह्रल्लेखा बीजपूर्विकाः ॥ एवं संपूज्य देवेशं लक्षषट्कं जपेन्मनुम् । घृताक्तकुन्दपुष्पैश्च एकादशशतानि च ॥ जुहुयादेधिते वह्नौ कान्तारे पितृवेश्मनि । एवं सिद्धमनुर्मन्त्री महायोगीश्वरो भवेत् ॥ ३ ॥

उक्त देवताका कराङ्गन्यास । यथा–क्षां शां अंगुष्ठाभ्यां नमः, क्षीं शीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, क्षूं शूं मध्यमाभ्यां वषट्, क्षैं शैं अनामिकाभ्यां हुं, क्षौं शौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्, क्षः शः

करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । इसी प्रकार क्षां शां हृदयाय नमः इत्यादिरीतिसे अङ्गन्यास करे । इस कराङ्गन्यासका प्रमाण तन्त्रमें लिखा है फिर ध्यान करे यथा–मञ्जुघोषदेव शशधरकी समान शुभ्रवर्ण, कुमारअवस्थायुक्त और शांतमूर्ति हैं । इनके एक हाथमें खड्ग और दूसरे हाथमें पुस्तक है । शरीर अति-मनोरम और मस्तकमें पांच चूडा हैं तथा दोनों नेत्र कमलके पत्तेके समान चौडे हैं । यह लम्बोदर और साधक पुरुषोंकी कुमतिका नाश करनेवाले हैं । इनको नमस्कार करता हूं । इस प्रकार ध्यान करके आधारशक्त्ये नमः इत्यादि पीठपूजा करे । अनन्तर हसौः भूतप्रेतासनाय नमः इस भांति पीठासनकी पूजा करनी चाहिये । पीछे पुनर्वार ध्यानादि करके यथाशक्ति पाद्यादि उपहार द्वारा पूजा करे । इस पूजाका विशेष नियम यह है कि मूलमन्त्र उच्चारण करके एतत्पाद्यं ज्ञानदात्रे नमः इसी प्रकार आचमनीयं बुद्धिदात्रे नमः, एष गन्धः जाड्य-नाशाय नमः, इदमर्घ्यं यक्षाधिपाय नमः एतत्पुष्पं सर्वसिद्धि-प्रदाय नमः इस भांति मूलदेवताकी पूजा करके कुन्दपुष्पद्वारा असिताङ्गादि अष्ट भैरवदेवकी पूजा करनी चाहिये । ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः, ॐ रुरुभैरवाय नमः, ॐ चण्डभैरवाय नमः, ॐ क्रोधभैरवाय नमः, ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः, ॐ कपा-लिभैरवाय नमः, ॐ भीषणभैरवाय नमः, ॐ संहारभैरवाय नमः, इस प्रकार अष्टभैरवगणोंकी पूजा करके धूपादि प्रदान-पूर्वक पुष्प विसर्जन करे । उन सब पुष्पोंसे आठ यक्षिणीकी पूजा करनी चाहिये । ह्रीं सुरसुन्दर्यै नमः, ह्रीं मनोहारिण्यै

नमः, ह्रीं कनकवत्यै नमः, ह्रीं कामेश्वर्यै नमः, ह्रीं रतिकर्य्यै नमः, ह्रीं पद्मिन्यै नमः, ह्रीं नट्यै नमः, ह्रीं अनुरागिण्यै नमः, इस प्रकार पूजा करके छः लाख मन्त्र जपना चाहिये । फिर घीमें सने कुन्दपुष्प द्वारा श्मशानस्थान अथवा कान्तारमें जलती हुई अग्निमें ग्यारह हजार होम करे । इस प्रकार पूजा और पुरश्चरणादि करके सिद्ध होनेपर साधक महायोगेश्वर हो सकता है ॥ ३ ॥

कुक्कुटेश्वरतन्त्रे

मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् । शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम् ॥ श्रीपार्वत्युवाच। भगवन् शर्व सर्वज्ञ सर्वशास्त्रागमादिषु । वाञ्छितार्थप्रदं लोके मञ्जुघोषं ब्रवीहि मे ॥ विशेषतोऽपि जप्त्वा किं कवित्वपददं नृणाम् । सर्वकामप्रदं चैव मनःसिद्धप्रदं तथा । भक्तानां कामदं मन्त्रं कल्पवृक्षमिवापरम् ॥ श्रीशंकर उवाच । शृणु देवि महामन्त्रं साधकानां सुखावहम् । यज्ज्ञात्वा जडधीः प्रायो वाचस्पतिसमो भवेत् ॥ अङ्गन्यासकरन्यासबहिर्न्याससमन्वितम् । जपात्सिद्धिप्रदं मन्त्रं विना होमार्चनादिषु ॥ जपेद्वा जापयेद्वापि साधको विधिपूर्वकम् । सर्वज्ञत्वमवाप्नोति सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥ कार्तिकेयमुखं यावत्तावल्लक्षं जपेन्मनुम् । सर्वशास्त्रेषु सोऽप्युच्चैर्बृहस्पतिसमो भवेत् ॥ ४ ॥

कुक्कुटेश्वरतन्त्रमें लिखा है कि सुमेरुपर्वतपर सुखपूर्वक बैठे हुए देवदेव जगद्गुरु श्रीमहादेवजीसे पार्वतीजीने पूंछा ।

पार्वतीजी बोलीं । हे भगवन् ! आप सर्वज्ञ और सब प्रकार शास्त्रागमादिका मर्म जानते हैं, इस समय संपूर्ण अभीष्टफल-दायक मञ्जुघोषका मन्त्र मुझसे कहिये । विशेषतः जिस मन्त्रके जपनेपर मनुष्यको कवित्वशक्ति (कविता करनेकी सामर्थ्य) प्राप्त होती है, कल्पवृक्षके समान साधकको सब कामनाओंका देनेवाला और सर्वसिद्धिदायक वह मन्त्र वर्णन कीजिये । श्रीमहादेवजीने कहा । हे देवि ! साधकजनोंको सुखदायक मन्त्र श्रवण कीजिये । जिस मन्त्रका ज्ञान हो जानेपर जडबुद्धि मनुष्य भी बृहस्पतिके समान महाकवि हो जाता है वही मन्त्र आपसे वर्णन करता हूं । होम और पूजाके विना अङ्गन्यास और करन्यासपूर्वक केवल मन्त्रका जप करनेपरही मन्त्र सिद्ध होता है । हे पार्वती ! यदि साधक विधानानुसार स्वयं अथवा दूसरेके द्वारा जप करावे तो उसको निःसन्देह सर्वज्ञता लाभ होती है, कभी इसके अन्यथा नहीं होता । मञ्जुघोषदेवका मन्त्र छः लाख जपनेपर साधक सब शास्त्रोंमें बृहस्पतिके समान पारदर्शी हो जाता है ॥ ४ ॥

श्रीपार्वत्युवाच । कोऽप्यत्रापि ऋषिश्छन्दः पूज्यते कात्र देवता । ध्येयः को वात्र तत्सर्वं ब्रूहि मे भक्तवत्सल ॥ ईश्वर उवाच । बृहदारण्यको नामर्षिर्विराट् छन्द एव च । स एव मञ्जुघोषाख्यो भक्तिदानेन मुक्तिदः ॥ ध्यात्वा भैरवरूपेण जपेन्मन्त्रमनन्यधीः । तदा मुक्तिप्रदो मन्त्रो नात्र कार्या विचारणा ॥ ध्यानं तत्र प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः । यथा ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं तन्मे निग-

दतः शृणु ॥ सात्त्विकं राजसं चैव तामसं तदनन्तरम् । ध्यानं वक्ष्ये महेशानि क्रमेण हितकाम्यया ॥ ५ ॥

श्रीपार्वतीजी बोलीं ! हे भक्तवत्सल ! इस मन्त्रका ऋषि कौन है? छन्द कौन है? किस देवताकी पूजा की जाती है? और किसका ध्यान किया जाता है? यह सब विषय मेरे प्रति वर्णन कीजिये । श्रीमहादेवजी बोले । हे पार्वती ! इस मन्त्रके बृहदारण्यक ऋषि विराट् छन्द और मञ्जुघोष देवता हैं । भक्तिपूर्वक इन देवताकी आराधना करनेपर मुक्ति मिल जाती है । साधक एकाग्र चित्तसे भैरवरूपमें देवताका ध्यान कर मन्त्र जपनेपर निःसंदेह मुक्ति पा लेता है। महात्मा मञ्जुघोष भैरवका ध्यान कहता हूं, जिस प्रकार ध्यान करके मन्त्र जपा जाता है वही ध्यान आप सुनिये । ध्यान तीन प्रकारका होता है सात्त्विक, राजसिक और तामसिक साधकके हितकी कामनासे यह तीनों प्रकारका ध्यान कहता हूं ॥ ५॥

सद्यः सिद्धिकरं रूपं ध्यात्वा जपेच्च सात्विकम् । सिद्धिप्रदं साधकानां भक्तानां चिन्तितप्रदम् ॥ मन्त्रोद्धारमिमं देवि त्रैलोक्यस्यापि दुर्लभम् । अप्रकाश्यं परं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यतरं प्रिये ॥ विष्णवग्निपाशिशशियुक्चलधीस्वरूपं षड्वर्णमन्त्र उदितो जगतां सुखाय। सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते वेदान्तवेदनिरतस्य वसुप्रदः स्यात् ॥ आद्यमन्त्रं जपेन्मंत्री अयुतं यदि साधकः । बलिनैवेद्यभुक् साक्षाद्बृहस्पतिरिवापरः॥ मासमात्रेण यः कुर्या-

त्पुरश्चरणवान्नरः । तस्यापि वदनाद्वाणी निःसरेद्रसवर्त्तिनी ॥ मासत्रयेण सततं कविरेव न संशयः ॥६॥

यह सात्त्विक ध्यान करके जप करनेपर तत्क्षण मन्त्रकी सिद्धि होती है और भक्त साधकके अभिलषित कार्यकी सिद्धि होती है। हे देवि ! इस देवताका मन्त्रोद्धार त्रिभुवनमें दुर्लभ है। इस मन्त्रको प्रकाशित न करे, सदा छिपाकर रक्खे और साधारण मनुष्यको प्रदान न करे। हे प्यारी! जो मन्त्र आपसे कहता हूं वह अत्यन्त गोपनीय है। अ र व च ल धीं। यह छः अक्षरका मन्त्र जगत्‌के हितार्थ कहा गया है। इस मन्त्रसे आराधना करनेपर साधकको सर्वज्ञता लाभ होती है। सभामें वाक्पटुता (वाणीकी चतुराई) उत्पन्न होती है, तथा साधक वेद वेदान्त इत्यादि शास्त्रोंमें पारदर्शी और धनवान् होता है। यदि साधक बलि नैवेद्यादि प्रदान करके उक्त मन्त्र दश हजार जपे तो वह दूसरे बृहस्पतिके समान पूजनीय होता है। जो मनुष्य केवल एक महीने इस मन्त्रका पुरश्चरण करता है उस मनुष्यके मुखसे अनवरत सरस गद्यपद्यमयी वाणी निकलती है और तीन महीनेतक पुनश्चरण करनेपर वह निःसंदेह असाधारण कवित्वशक्तिसम्पन्न होता है ॥ ६ ॥

गोमुण्डे गवि पृष्ठे च चक्रे वापि च गोमये। यन्त्रे मन्त्रं लिखेदादौ पश्चान्मंत्र जपेत्पुनः ॥ ध्यानमात्रं विधायादौ भावयित्वा चिरं सुधीः । निर्जनं स्थानमागत्य जपेन्मन्त्रमधोमुखः ॥ पौर्णमासीं समारभ्य कुन्दस्य कुसुमैः शतैः । अष्टाधिकैश्च सम्पूज्य जपेन्मन्त्रं चतु-

ष्पथे ॥ त्रिमुण्डारोहणं कृत्वा निशीथे मुक्तकुन्तलः । षण्मासमात्रं हि जपेद्यदि कृत्वा विधानवित् ॥ बृहस्पतिसमो वक्ता नात्र कार्या विचारणा । कुक्कुटस्य च मुण्डैकं मुण्डं क्रोष्टुर्वृषस्य च ॥ त्रिमुण्डमेतद्विख्यातं साधकानां सुखावहम् ॥ ७ ॥

गोमुण्डपर, गोपृष्ठपर, चक्र अथवा गोमयपर यंत्र अंकित करके प्रथम उसमें मन्त्र लिखे और पीछे जप करे। मञ्जुघोष देवका ध्यान करके भावना करता हुआ सूने स्थानमें अधोमुख हो नीचेको मुख किये पौर्णमासीमें आरंभ करके एक सौ आठ कुन्दपुष्पद्वारा पूजापूर्वक चौराहेमें जप करना चाहिये, त्रिमुण्डपर बैठकर बाल खोले हुए आधी रातमें जप करे। विधिका जाननेवाला साधक इस प्रकार छः महीनेतक जप करनेपर बृहस्पतिके समान वक्ता हो सकता है इसमें सन्देह नहीं। कुत्तेका मुण्ड, बकरेका मुण्ड और वृषभका मुण्ड इन तीन मुण्डोंको त्रिमुण्ड कहा जाता है, यह तीनों मुण्ड साधकका अभिलाषित कार्य सिद्ध करते हैं ॥ ७ ॥

आसनं चैव गोमुण्डेवामे कुक्कुरमुण्डकम् । दक्षिणे च शिवामुण्डं कृत्वा पूजां समाचरेत् ॥ अर्द्धचन्द्रा कृति साक्षाद्बालचन्द्रोपमं स्फुटम् । यन्त्रं लिखेत्तत्र पूजा कुन्दस्य कुसुमेन च ॥ सव्येन पाणिकमलेन जपादिपूजां शृङ्गारशीलनविधौ खलु दक्षिणेन । राधासुधाकरतुषारमरीचिगौरं ध्यात्वा चतुष्पथतटे वृषमस्तकस्थः ॥ सञ्चित्य कुक्कुरशिरः शिरसाधिरूढःकुन्देन साधकतमो

जपति प्रकामम् । गोचर्मणा विरचितं रसकोणमात्रं चक्रं ततोऽपि नवकुंकुमरोचनाभिः ॥ निर्माय सव्यविधिना विजने श्मशाने सम्पूजयेद्वनभवैश्च नवैः पलाशैः । सपूर्णमण्डलतुषारमरीचिमध्ये बालं विचिन्त्य धवलं वरखड्गहस्तम् ॥ उद्दामकेशनिवहं वरपुस्तकाढ्यं नग्नं भजेत्क्षतजपद्मदलायताक्षम् । अरिष्टगेहे निशितैलमेत्रमादाय यत्नात्करपल्लवेन ॥ तेनाश्चितं काञ्चनपुष्पमेव निवेद्य तस्मै जपति प्रकामम् । आकिंशुकाक्षोड्तरोश्च मूले विलिप्य पादौ वदनामृतेन ॥ त्रिमुण्डमात्राश्रित एव रात्रौ जपेद्यथाशक्ति तु पौर्णमास्याम् ॥ लकुचतरुतलस्थो मुण्डमात्रैकरूढो हिमकरकरगौरं चिन्तयित्वा निशीथे । यदि जपति जडो वा मन्त्रमेनं त्रिलक्षं भवति जपति साक्षाद्गीष्पतिर्नात्र चित्रम् ॥ ८ ॥

गोमुण्डपर बैठकर वामभागमें कुत्तेका मुण्ड और दक्षिण भागमें गीदडका मुण्ड रखकर पूजा करे। अर्द्धचन्द्रमाकी समान आकृतियुक्त और बालचन्द्रमाकी समान समुज्ज्वल यंत्र लिखकर तिसपर कुन्दपुष्पद्वारा पूजा करे, बांयें हाथसे इस देवताका जप पूजादि कार्य करे और विचारमतानुसार शृङ्गाररसादियुक्त होकर कार्यसमापनपूर्वक दाहिने हाथसे जप करे। पूर्णिमाके चन्द्रमाकी समान और तुषारकी समान धवलवर्ण मञ्जुघोष देवका ध्यान करके चौराहेमें वृषभमुण्डपर बैठे और फिर कुत्तेके मस्तककी चिन्ता करता हुआ कुन्दपुष्पद्वारा पूजा

करके जप करनेपर अभिलाषित कार्य सिद्ध होता है। गोचर्मपर षट्कोण (छः कोन) चक्र बनाकर उसपर कुंकुम और रोचना (रोली) द्वारा यन्त्र अंकित करके निर्जन श्मशानमें बैठ कुन्दपुष्प और वनोत्पन्न पल्लव द्वारा बांयें हाथसे पूजा करे। तुषारकी समान धवलमण्डलमें वरमुद्रा और खड्गधारी बालरूपी खुले बाल वर पुस्तकहस्त (हाथमें वर पुस्तक लिये नग्न पद्मपत्रायताक्ष (कमलनयन) मञ्जुघोष देवका भजन करता हूं। रात्रिकालमें सूतिकागृह (सोवर) का तेल लाकर दोनों हाथमें मर्दनपूर्वक उसी हाथ द्वारा कांचनपुष्प अञ्चित करके वह पुष्प देवताको निवेदन करे और फिर मन्त्रको जपे। पलाशवृक्ष (ढाक) और अशोकवृक्षकी जडमें बैठकर वदनामृतद्वारा पादलेपनपूर्वक त्रिमुण्डपर बैठकर पूर्णिमाकी रात्रिमें यथा शक्ति जप करना चाहिये। आधीरातके समय लकुचवृक्षके नीचे पूर्वोक्त त्रिमुण्डमें किसी एक मुण्डपर बैठकर चन्द्रमाकी समान गौरवर्ण मञ्जुघोष देवकी चिंता करता हुआ यदि कोई जडमति मनुष्य भी उक्त मन्त्र तीन लाख जप करे तो वह मनुष्य साक्षात् बृहस्पतिकी समान वाग्मी होता है इसमें संदेह नहीं ॥ ८ ॥

भुक्तान्नशेषकदलीतरुमूलसंस्थ आस्तीर्णपुष्परचितासनसन्निविष्टः। राकाविधूद्गमसुपेत्य करोति पूजां यः सोऽप्यजेय इह वाक्पतिरीश्वरः स्यात् ॥ जिह्वां विमृज्य निजपाणिसरोरुहाभ्यां रास्नाप्रसूनशतकैः परिपूज्य गोष्ठे। यो वै जपेदनुदिनं रसलक्षमात्रं ईशं जयेत्कि-

मुत वाक्प्रतिमेव चित्रम् ॥ स्थित्वा निशीथसमये रजकस्य काष्ठे खड्गान्वितो जपति यद्यपि पौर्णमास्याम् । सम्पूर्णमासमथवा ऽतरसापि तस्य वक्राद्विनिःसरति गीरमृतायमाना ॥ यो दन्तधावनकृतैश्च करञ्जकाष्ठैस्तस्यापि गीष्पतिवचो नियतं सुलभ्यम् ॥ तिलतैलेन मतिमान् कुन्दकैरवपुष्पकैः । जुहुयाद्यत्नतो मन्त्री सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ मञ्जिष्ठतोयदवचासितभानुमूलैः स्वीयांगशोणितयुतैः समकुष्ठकैश्च । कृत्वा ललाटफलके तिलकं व्रतस्थो विद्याप्रबोधविषये नवगीष्पतिः स्यात् ॥ ९ ॥

भोजनोपरान्त केलेके वृक्षकी जडमें पुष्पासन बनाकर उस पर बैठ पूर्णिमाके चन्द्रोदयकालमें जो व्यक्ति मञ्जुघोषदेवकी पूजा करता है, वह व्यक्ति इस लोकमें बृहस्पतिके समान अजेय होता है । अपने दोनों हाथोंसे जीभ साफ करके गोष्ठस्थानमें शतसंख्यक रास्नापुष्पद्वारा पूजा करके जो मनुष्य नित्य एक लाख मंजुघोषका मन्त्र जपता है, वह व्यक्ति ईश्वर को भी जय कर सकता है । बृहस्पति उसके निकट निःसंदेह पराजित होते हैं । पूर्णिमाकी आधीरातमें धोतीके पट्टेपर बैठकर खड्गधारी होकर जप करे । जो मनुष्य इस प्रकार एक महीनेभर जप कर सकता है उसके मुखसे अनर्गल अमृततुल्य अत्यन्त मधुर गद्यपद्यमयी वाणी निकलती है । जो व्यक्ति दँतौन किये हुए करञ्जकाष्ठपर बैठकर मंत्र जपता है, वह व्यक्ति सहजही बृहस्पतिकी तुल्य वाक्यरचना करनेमें समर्थ

होता है । तिलतैलके साथ कुन्दकलिका और कुन्दपुष्पद्वारा होम करने पर साधक सर्व सिद्धि पालेता है । मजीठ मोथा वच सफेद आककी जड अपने गात्रका रुधिर और कूठ यह सब पदार्थ इकट्ठे करके कपालमें तिलक धारणपूर्वक मंजुघोष देवकी अराधना करनेपर वह व्यक्ति दूसरे बृहस्पतिके समान होता है ॥ ९ ॥

भैरवतन्त्रेऽपि

मञ्जुघोषाख्यममलं मन्त्रमाकर्णय प्रिये । धनवंशप्रदं रम्यं सार्वज्ञवाग्मिताप्रदम् ॥ अदोषकवितामूलं सर्वत्र प्रतिभाप्रदम् ॥ १० ॥

भैरवतन्त्रमें श्रीमहादेवजीने पार्वतीजीसे कहा है हे प्रिये ! निर्मल मंजुघोष मन्त्र श्रवण कीजिये । यह मंत्र धन, वंश, सर्वज्ञता और वाक्शक्ति प्रदान करता है । इस मन्त्रसे आराधना करनेपर निर्दोष कविता करनेकी शक्ति और संपूर्ण शास्त्रोंमें ज्ञान उत्पन्न होता है ॥ १० ॥

देव्युवाच

भगवन् गिरिजानाथ! कथयत्वं यथोचितम् । मञ्जुघोषः स कः कीदृक् तस्यानुष्ठानमेव हि ॥ ११ ॥

देवीने कहा । हे भगवन् ! हे गिरिजानाथ ! मंजुघोष कैसे देवता हैं और उनकी आराधनाका अनुष्ठान किस प्रकार किया जाता है ? वह मुझसे वर्णन कीजिये ॥ ११ ॥

ईश्वर उवाच

श्रूयतां देवि मे वाक्यं नात्र कार्या विचारणा । मञ्जुघोषस्तु यो देवः सोऽहं देवि न संशयः ॥ एकोऽहं

शङ्करो देवि नानामूर्तिधरः स्वयम् । तस्यानुष्ठानमधुना श्रूयतां मम तत्त्वतः ॥ मंत्रः षडक्षरः सारः सद्यः कुमतिनाशनः रसलक्षावधिस्तस्य जाप्य एव सुरेप्सितः॥ त्रिपक्षजपनाद्देवि वाग्मी भवति मानवः । सुकवित्वं भवेत्तस्य प्रतिमा विश्वजित्वरी ॥ मासत्रयं जपेद्यस्तु पण्डितोऽपण्डितो यदि । षण्मासं यस्तु जपति स सर्वज्ञः कुशाग्रधीः ॥ अब्देन सिद्धयः सर्वा भवन्ति सत्यमीश्वरि । आहारोऽस्य नृणां वर्चो नैवेद्यं चक्षुषोर्मलम् ॥ मूत्रैः पाद्यं ददेत्तस्य गन्धो विट् खदिरोद्भवम्। आरण्यकस्य पत्राणि पुष्पाण्येव सुनिश्चितम् ॥ एरण्डमूलैःकार्पासबीजमर्घ्यं प्रचक्ष्यते । तुण्डको नालदानेन भवेदाचमनीयकम् ॥ ध्यानं वक्ष्ये महादेवि सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ शशधरमिव शुभ्रं खड्गपुस्तांकपाणिं सुरुचिरमतिशान्तं पञ्चचूडं कुमारम् । पृथुतरवरमुख्यं पद्मपत्रायताक्षं कुमतिदहनदक्षं मञ्जुघोषं नमामि ॥ १२ ॥

महादेवजी बोले हे देवि ! मेरा वचन सुनो । इसमें कुछ विचार मत करना । हे देवि ! आपने जिन मंजुघोष देवके विषयमें पूछा मैंही वह मंजुघोष हूं । इसमें संदेह नहीं । एक मैंही अनेक रूप धारण करता हूं । अब इस समय मुझसे उन मंजुघोष देवकी उपासनापद्धति सुनिये । मंजुघोषका मंत्र षडक्षर है, इस मंत्रकी आराधना करने पर तत्क्षण कुमतिका नाश हो जाता है । छः लाख जपनेपर मंजुघोषमंत्रका पुरश्चरण होता है । मनुष्य तीन पक्षपर्यंत इस मंत्रके जपनेपर वाक्शक्ति सम्पन्न

होता है और उसकी असाधारण कवित्वशक्ति और विश्वविजयिनी बुद्धि होती है। अपण्डित (मूर्ख) व्यक्ति भी यदि तीन मास तक इस मन्त्रका जप करे तो वह श्रेष्ठ पंडित हो सकता है। जो मनुष्य छः मास तक इस मन्त्रको जपता है, वह कुशाग्रकी समान सूक्ष्मबुद्धिसम्पन्न और सर्वज्ञ होता है। हे ईश्वरी! एक वर्षपर्यन्त उक्त मंजुघोषदेवका मन्त्र जपने पर वह सर्वसिद्धिसम्पन्न होता है। इस देवताका भोजन नरविष्ठा, नैवेद्य आँखोंका कीचड, पाद्य मूत्र और गन्ध विट्खदिर है, बनके वृक्षोंके पत्ते और फूलों द्वारा पूजा करे। अंडके तेलके संग विनौलोंके द्वारा अर्घ्य देवे और अपने वदनामृतद्वारा आचमनीय प्रदान करे। हे महादेवि! सर्वसिद्धिदायक मंजुघोषका ध्यान कहता हूं। मंजुघोष चन्द्रमाकी समानशुभ्रवर्ण, खड्गपुस्तकधारी, मनोरम देहयुक्त और शान्तमूर्ति है। इनके नेत्र कमलपत्रकी समान विस्तृत हैं। और यह साधककी कुमतिका नाश कर देते हैं। ऐसे मंजुघोष देवको मैं प्रणाम करता हूं॥ १२॥

मंत्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि नमस्कारोपदेशतः॥ श्रुणु देवि महाभागे कलौ सद्यः फलप्रदम्॥ मंत्रं सर्वार्थदं सारं वशीकरणरूपकम्। अमलंनिर्गुणं सारं गुणिनं सर्वकामदम्॥ तं नमामि हितं नाथं मञ्जुघोषं नमाम्यहम्। वरीशं परमं सारं स्तुतं ब्रह्मादिभिः सुरैः॥ रक्तं रजोगुणैर्युक्तं मञ्जुघोषं नमाम्यहम्। वचनेन न जानन्ति कायेन न च कोविदाः॥ तं शान्तं तमसा युक्तं पीत-

वस्त्रं नमाम्यहम् । चरणे पतिता देवा दैत्यानां जयहेतवे ॥ चरणे पतितो जीवो बुद्धये तं नमाम्यहम् । न जानन्ति सुरा यस्य तत्त्वं सत्त्वगुणेन वै ॥ दृष्टं समस्तसारं च मञ्जुघोषं नमाम्यहम् ॥ ध्यात्वा विश्वेश्वरं चैव प्रतिपत्त्यादिहेतुकम् ॥ सकलं निष्कलं चैव तं नमामि हितप्रदम् । ऋषिः कण्वो भवेत्पंक्तिश्छन्दोऽङ्गानि षडक्षरैः ॥ दक्षिणां शक्तितो दद्याद्गुरुतुष्टिर्यथा भवेत् । गुरुसन्तोषमात्रेण सिद्धिर्भवति निश्चितम् ॥ पिता गुरुर्न कार्यो वै दीक्षाकर्मणि पार्वति । यावत् कालं सुतो दुःखी पिता तु नरकं व्रजेत् ॥ १३ ॥

हे देवि ! हे महाभागे ! मञ्जुघोषके मन्त्रका उद्धार कहता हूं श्रवण कीजिये । इस मन्त्रसे आराधना करनेपर तत्काल फल मिलता है । यह मन्त्र सब मन्त्रोंमें प्रधान, सर्वार्थप्रद और वशीकारक है । मञ्जुघोष देव निर्मल निर्गुण सब देवताओंमें श्रेष्ठ, सर्वगुणशाली, सब कामनाओंके दाता, साधकके हितकारी और जगत्के आश्रय हैं, उनको नमस्कार करता हूं । मञ्जुघोषदेव सर्वश्रेष्ठ, सारतर ब्रह्मादि देवताओंके पूज्य और रजोगुणयुक्त हैं, उनको प्रणाम करता हूं । कोई पण्डित व्यक्ति वाक्य अथवा शरीर द्वारा जिनको नहीं जान सकता, जो शान्तमूर्ति, तमोगुणयुक्त और पीतवस्त्रधारी हैं, उन मञ्जुघोषको प्रणाम करता हूं । देवतालोग दैत्योंको जीतनेके लिये जिनके चरणोंमें गिरे थे और संपूर्ण जीव जिनके चरण कमलोंमें पडे हुए हैं ज्ञानकी प्राप्तिके निमित्त मैं उन्हीं मञ्जुघोषको प्रणाम

करता हूं। सत्त्वगुणावलम्बी देवतालोग जिनका तत्व नहीं जान सकते, सबके सारभूत प्रहृष्ट उन्हीं मञ्जुघोषको प्रणाम करता हूं। विश्वेश्वर मञ्जुघोषका ध्यान करनेपर सब शास्त्रोंमें ज्ञान लाभ होता है। उन निष्कलंक मञ्जुघोषदेवको नमस्कार करता हूं। इस मन्त्रके कण्वऋषि और पंक्ति छन्द है। मंत्र-मध्यगत षडाक्षरद्वारा षडाङ्गन्यास करे। मञ्जुघोषकका मन्त्र ग्रहण करके अपनी शक्तिके अनुसार गुरुके सन्तोषार्थ सुवर्णादिकी दक्षिणा प्रदान करे। गुरुदेवके सन्तुष्ट होनेपर मन्त्रकी सिद्धि होती है। हे पार्वती! दीक्षाकार्यमें पिताको गुरु नहीं करे। पिताको गुरु मानकर उनसे मन्त्र ग्रहण करनेपर पुत्र समस्त जीवन दुःख पाता है और पिता नरकमें चला जाता है ॥ १३ ॥

इति मंजुघोषमन्त्र समाप्त।

अथ योगिनीसाधनम्।

भूतडामरे।

अथातः संप्रवक्ष्यामि योगिनीसाधनोत्तमम्। सर्वार्थसाधनं नाम देहिनां सर्वसिद्धिदम् ॥ अतिगुह्या महाविद्या देवानामपि दुर्लभा। यासामभ्यर्चनं कृत्वा यक्षेशोऽभूद्धनाधिपः ॥ तासामाद्यां प्रवक्ष्यामि सुराणां सुन्दरीं प्रिये। अस्या अभ्यर्चनेनैव राजत्वं लभते नरः ॥ अथ प्रातः समुत्थाय कृत्वा स्नानादिकं शुभम्। प्रसादं च समासाद्य कुर्यादाचमनं ततः ॥ प्रणवान्ते

सहस्रारं हुँ फट् दिग्बन्धनं चरेत् । प्राणायामं ततः कुर्यान्मूलमन्त्रेण मन्त्रवित् ॥ षडंगं मायया कुर्यात्पद्ममष्टदलं लिखेत् । तस्मिन्पद्मे महामन्त्रं जीवन्यासं समाचरेत् ॥ पीठे देवीः समावाह्य ध्यायेद्देवीं जगत्प्रियाम् । पूर्णचंद्रनिभां गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम् ॥ पीनोत्तुंगकुचां वामां सर्वेषामभयप्रदाम् । इति ध्यात्वा च मूलेन दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ॥ पुनर्धूपं निवेद्यैव नैवेद्यं मूलमन्त्रतः । गंधचंदनतांबूलं सकर्पूरं सुशोभनम् ॥ प्रणवांते भुवनेशीमागच्छ सुरसुंदरि । वह्निभार्यां जपेन्मन्त्रं त्रिसन्ध्यं च दिने दिने ॥ सहस्रैकप्रमाणेन ध्यात्वा देवीं सदा बुधः । मासान्ते व्याप्य दिवसं बलिपूजां सुशोभनाम् ॥ कृत्वा च प्रजपेन्मंत्रं निशीथे याति सुन्दरी । सुदृढं साधकं मत्वा याति सा साधकालये ॥ सुप्रसन्ना साधकाग्रे सदा स्मेरमुखी ततः । दृष्ट्वा देवीं साधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ॥ सुचन्दनं सुमनसो दत्त्वाभिलाषितं वदेत् मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा भक्ति भावतः ॥ यदि माता तदा देवि द्रव्यं च सुमनोहरम् । भूपतित्वं प्रार्थितं यत्तद्ददाति दिने दिने ॥ पुत्रवत्पालितं लोके सत्यं सत्यं सुनिश्चितं । स्वसा ददाति द्रव्यं च दिव्यवस्त्रं तथैव च ॥ दिव्यां कन्यां समादाय नागकन्यां दिने दिने । यद्यद्भवति भूतं च भविष्यतीति यत्पुनः ॥ तत्सर्वं साधकेंद्राय निवेदयति निश्चितम् । यद्यत्प्रार्थयते सर्वं सा ददाति दिने दिने ॥ भ्रातृवत्पालितं लोके

कामनाभिर्मनोगतैः ॥ भार्या स्याद्यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा ॥ राजेन्द्रः सर्वराजानां संसारे साधकोत्तमः । स्वर्गे मर्त्ये च पाताले गतिः सर्वत्र निश्चितम् ॥ यद्यद्ददाति सा देवी कथितुं नैव शक्यते । तया सार्द्धं च संभोगं करोति साधकोत्तमः ॥ अन्य स्त्रीगमनं त्यक्त्वा अन्यथा नश्यति ध्रुवम् ॥ १ ॥

अब योगिनीसाधनकी प्रणाली कही जाती है । भूतडामरमें लिखा है कि प्राणियोंके हितसाधनार्थ योगिनीसाधन कहता हूं । यह महाविद्या अत्यन्त गोपनीय और देवताओंको भी दुर्लभ है। इन सब योगिनियोंकी पूजा करके कुबेर धनाधिप हुए हैं । इन सब योगिनीगणमें सर्व प्रधान सुरसुन्दरी हैं, इनकी पूजा करनेपर मनुष्य राजत्व लाभ करता है। सुरसुन्दरीकी पूजाप्रणाली यथा प्रातःकालमें गात्रोत्थान करके स्नानादिक नित्यक्रिया समानपूर्वक हौं इस मन्त्रसे आचमन करके ॐ हुं फट् इस मंत्रसे दिग्बन्धन करे । फिर मूलमंत्रसे प्राणायाम करके (ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः) इत्यादिक्रमसे कराङ्गन्यास करे । पीछे अष्टदलपद्म अंकित करके उस पद्ममें देवीका जीवन्यास करे और पीठदेवताका आवाहन करके सुरसुन्दरीका ध्यान करे । यह योगिनी जगत्प्रिया हैं, इनका मुख चन्द्रमाके समान सुदृश्य, शरीर गौरवर्ण, पहिरावा विचित्रवस्त्र तथा दोनों स्तन ऊंचे और स्थूल हैं । यह सबको अभयदान करती हैं इस प्रकार मूलमंत्रसे देवीकी पूजा करे । मूलमंत्र उच्चारण करके पाद्यादि प्रदानपूर्वक धूप दीप नैवेद्य गन्ध चन्दन और ताम्बूल निवेदन

करे । ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा इस मंत्रसे पूजा करे। साधक प्रतिदिन तीनों संध्यामें ध्यान करके एक एक सहस्रके हिसाबसे जप करे। इस प्रकार एक महीने जप करके महीनेके अन्तिम दिनमें बलि इत्यादि विविध उपहारोंके द्वारा देवीकी पूजा करनी चाहिये। पूजाके अवसानमें पूर्वोक्त मंत्र जपता रहे, इस प्रकार जप करनेपर आधी रातके समय देवी साधकके निकट आती हैं। सुरसुन्दरी देवीसाधकको दृढ़प्रतिज्ञ जानकर उसके घरमें जाती हैं। साधक सुरसुन्दरीको सन्मुख सुप्रसन्न और हस-मुख देखकर पुनर्वार पाद्यादिद्वारा पूजा करे तथा उत्तम चन्दन और सुशोभित पुष्प प्रदान करके अपने अभिलाषित वरकी प्रार्थना करे। उस काल साधक देवीजीको माता बहन और भार्या कहकर संबोधन करे। साधक यदि सुरसुन्दरीका मातृभावसे भजन करे तो देवी साधकको मनोहर विविध द्रव्य प्रदान करती हैं और राज्यकी प्रार्थना करने पर वह भी दे देती हैं। देवी प्रतिदिन साधकके निकट आकर उसका पुत्रके समान लालन पालन करती हैं। यदि साधक देवीको बहनके भावमें भावना (आराधन) करे तो वे नाना प्रकारके पदार्थ और वस्त्र प्रदान करती हैं, तथा दिव्यकन्या और नागकन्या ला देती हैं। भूत भविष्य और वर्त्तमान जो सब घटना होती हैं, वह साधकको जता देती हैं। साधक देवीके निकट जिस बातकी प्रार्थना करता है देवी तत्काल वही प्रदान करती हैं। देवी साधकका भाईकी समान पालन करती हैं और उसकी सारी अभिलाषाओंको पूर्ण कर देती हैं। यदि साधक देवीकी

भार्यारूपमें आराधना करे तो वह साधक संसारके सब राजाओंमें प्रधान होता है तथा स्वर्ग मर्त्य और पातालमें सर्वत्र विना रोक टोक विचरण कर सकता है और देवी जो सब पदार्थ अर्पण करती है उनको वर्णन नहीं कर सकता। साधक उनके साथ सुख संभोग करता हुआ समय बिताता है, इस प्रकार देवीको भार्यारूपमें सिद्ध करनेपर साधक दूसरी स्त्रीकी आसक्ति त्याग देवे। नहीं तो देवी क्रोधित होकर साधकका नाश कर देती हैं॥ १॥

ततोऽन्यत्साधनं वक्ष्ये निर्मितं ब्रह्मणा पुरा। नदीतीरं समासाद्य कुर्यात्स्नानादिकं ततः॥ पूर्ववत्सकलं कार्यं चन्दनैर्मण्डलंलिखेत्। स्वमन्त्रं तत्र संलिख्यावाह्य ध्यायेन्मनोहराम्॥ कुरङ्गनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिम्बाधरां चन्दनगन्धलिप्ताम्। चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामांसदा कामदुघां विचित्राम्॥एवं ध्यात्वा जपेद्देवीमगरुधूपदीपकैः।गन्धं पुष्परसं चैव ताम्बूलादींश्च मूलतः॥ तारं माया गच्छ मनोहरे पावकवल्लभा। कृत्वायुतं प्रतिदिनं जपेन्मंत्रं प्रसन्नधीः॥ मासांते व्याप्य दिवसं कुर्याच्च जपमुत्तमम्। आनिशीथं जपेन्मंत्रं ज्ञात्वा च साधकं दृढम्॥ गत्वा च साधकाभ्यासे सुप्रसन्नो मनोहरा। वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्त्तते॥ साधकेन्द्रोऽपि तां ध्यात्वा पाद्याद्यैरर्चयेन्मुदा। प्राणायामं षडङ्गं च मायया च समाचरेत्। सद्यो मांसबलिं दत्त्वा पूजयेच्च समाहितः। चन्दनोदकपुष्पेण फलेन

च मनोहराम् ॥ ततोऽर्चिता प्रसन्ना सा पुष्णाति प्रार्थितं च यत्। स्वर्ण शतं साधकाय ददाति सा दिने दिने॥ सावशेषं व्ययं कुर्यात् स्थिते तत्तु न दास्यति। अन्य-स्त्रीगमनं तस्य न भवेत्सत्यमीरितम्॥ अव्याहतगति-स्तस्य भवतीति न संशयः। इयं ते कथिता विद्या सुगोप्या या सुरासुरैः॥ तव स्नेहेन भक्त्या च वक्ष्येऽहं परमेश्वरि॥ २॥

अब अन्य योगिनीसाधनकी प्रणाली और मन्त्र कहा जाता है। जो कि पूर्वकालमें ब्रह्माजीने निर्मित की है। नदीके तटपर जाकर साधक स्नानादि नित्यक्रिया समापनपूर्वक पूर्ववत् न्यासादि सब कार्य करे। फिर चन्दन द्वारा मण्डल अंकित करके उस मण्डलमें देवीका मन्त्र लिखना चाहिये और मनोहरा नाम्नी योगिनीका ध्यान करे। देवीके नेत्र हिरनके नेत्रोंकी समान सुदृश्य, मुख शरद्के चंद्रमाकी समान सुशोभित, अथवा बिम्बाफलके समान अरुण वर्ण, सर्वांग सुगंधित, चन्दनसे अनुलिप्त, पहिरावा चीनवस्त्र और दोनों स्तन अत्यन्त स्थूल हैं, यह श्यामवर्ण है और कामधेनुकी समान साधककी सब कामना पूर्ण करती हैं तथा यह विचित्र वर्ण हैं। इस प्रकार देवीका ध्यान करके पूजापूर्वक मन्त्र जपना चाहिये। साधक अगर धूप दीप गंध पुष्प मधु और ताम्बूलादिके द्वारा मूलमन्त्रसे पूजा करे। 'ॐ ह्रीं मनोहरे आगच्छ स्वाहा' इस मंत्रको नित्य अयुत [दश हजार] जपना चाहिये। इस प्रकार एक महीने जप करके महीनेके अंतिम दिनमें प्रातःकालसे

आरंभ करके सारे दिन मंत्र जपे। आधी राततक जप करनेपर मनोहरा देवी प्रसन्न होती हैं और साधकको दृढप्रतिज्ञ जानकर उसके पास आती हैं तथा साधकसे कहती हैं कि 'आपके मनमें जो अभिलाषा हो, वही वर माँग लो' तब साधक पुनर्वार देवीका ध्यान करके पाद्यादि उपचारसे पूजा करे। इस योगिनीकी पूजामें 'ह्रीं' इस मंत्रसे प्राणायाम और 'ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि प्रकारसे कराङ्गन्यास करे। अनन्तर साधक संयत [सावधान] होकर सद्यो मांसद्वारा बलिप्रदानपूर्वक चन्दनका जल और नानाविधि पुष्पोंद्वारा मनोहरा देवीकी पूजा करे। इस प्रकार पूजा करनेपर देवी प्रसन्न होकर साधकके मनकी सब अभिलाषा पूर्ण करती हैं और प्रतिदिन साधकको सौ सुवर्णमुद्रा (अशर्फी) प्रदान करती हैं। साधकको प्रति दिन जो मिले उस सबको व्यय (खर्च) कर डाले क्योंकि किञ्चिन्मात्र भी शेष (बाकी) रहने पर देवी कुपित होकर फिर कुछ नहीं देतीं। इस योगिनीका साधन करनेपर अन्य स्त्रीका सहवास परित्याग करे। साधक इस साधनाके प्रभावसे सर्वत्र अव्याहतगति होकर विचरण कर सकता है इसमें सन्देह नहीं। यह जो योगिनीसाधन कहा गया, यह सुरासुरगणोंके पक्षमें भी अत्यन्त गोपनीय है, हे देवी ! आपके स्नेहके वशीभूत होकरही आपसे वर्णन किया गया है ॥ २ ॥

ततोऽन्यत् साधनं वक्ष्ये शृणुष्वैकमनाः प्रिये। गत्वा वटतलं देवीं पूजयेत्साधकोत्तमः ॥ प्राणायामं षडंगं च

माययाथ समाचरेत् । सद्योमांसंबलिं दत्त्वा पूजयेत्तां समाहितः ॥ अर्घ्यमुच्छिष्टरक्तेन दद्यात्तस्मै दिने दिने । प्रचण्डवदनां देवीं पक्कबिम्बाधरां प्रिये ॥ रक्ताम्बरधरां बालां सर्वकामप्रदां शुभाम् । एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमयुतं साधकोत्तमः ॥ सप्तदिनं समभ्यर्च्य चाष्टमे विधिवच्चरेत् । कायेन मनसा वाचा पूजयेच्च दिने दिने ॥ तारं माया तथा कूर्चं रक्तकर्मणि तद्बहिः । आयच्छ कनकान्ते तु वति स्वाहा महामनुः ॥ आनिशीथं जपेन्मंत्रं बलिं दत्त्वा मनोहरम् । साधकेंद्रं दृढं मत्त्वा आयाति साधकालये ॥ साधकेंद्रोऽपि तां दृष्ट्वा दद्यादर्घ्यादिकं ततः । ततः सपरिवारेण भार्या स्यात्कामभोजनैः ॥ वस्त्रभूषणादिकं त्यक्त्वा याति सा निजमंदिरम् । एवं भार्या भवेन्नित्यं साधकाज्ञानुरूपतः ॥ आत्मभार्यां परित्यज्य भजेत्तां च विचक्षणः ॥ ३ ॥

महादेवजी बोले हे प्यारी ! अब अन्य योगिनीसाधनकी प्रणाली और मंत्र कहता हूं आप एकाग्रचित्तसे श्रवण कीजिये। साधक वटके वृक्षके नीचे देवीकी पूजा करे । ह्रीं इस मंत्रसे प्राणायाम और ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि प्रकारसे कराङ्गन्यास करे । साधक संयत होकर सद्योमांसद्वारा बलिप्रदानपूर्वक पूजा करे। उच्छिष्ट रक्तद्वारा अर्घ्य प्रदान करके प्रतिदिन पूजा करनी चाहिये । यह योगिनी प्रचण्डवदना इनके अधपके हुए बिम्बाफलकी समान रक्तवर्ण और पहिरावा रक्तवस्त्र है । यह बालिकारूपिणी और साधकको सर्व कामनाओंकी

देनेवाली है। साधकको इस प्रकार ध्यान करके प्रतिदिन दस हजार मंत्र जपना चाहिये। सात दिन इस प्रकार पूजा और मंत्र जपकर आठवें दिन यथाविधि पूजा करे। इस प्रकार काय मनोवाक्यसे प्रतिदिन देवीकी आराधना करनी चाहिये। ॐ ह्रीं हुं रक्षकर्मणि आगच्छ कनकवति स्वाहा। इस मंत्रसे पूजा और जप करे। साधक देवीको मनोहर बलिप्रदान करके आधीरातपर्यन्त मंत्रका जप करे। देवी साधकको दृढप्रतिज्ञ जानकर उसके घर आती हैं। साधक देवीका दर्शन करके अर्घ्यादिद्वारा पूजा करे। इससे देवी अपनी टहलिनियोंसहित साधककी भार्या होकर साधकको विविध अभिलाषित भोज्यवस्तु प्रदान करती हैं और अपने भूषण वस्त्रादि परित्याग करके अपने घरको चली जाती हैं। विद्वान् साधक इस प्रकारसे सिद्धि करके अपनी भार्याको परित्यागपूर्वक कनकावतीकी भजना करे॥ ३॥

ततः कामेश्वरीं वक्ष्ये सर्वकामफलप्रदाम्। प्रणवं भुवनेशानीं चागच्छ कामेश्वरि ततः॥ वह्नेर्भार्या महामन्त्रः साधकानां सुखावहः। पूर्ववत्सकलं कृत्वा भूर्जपत्रे सुशोभने॥ गोरोचनाभिः प्रतिमां विनिर्माय स्वलंकृताम्। शय्यामारुह्य प्रजपेन्मत्रमेकमनास्ततः। सहस्रैकप्रमाणेन मासमेकं जपेद्बुधः। घृतेन मधुना दीपं दद्याच्च सुसमाहितः॥ कामेश्वरीं शशाङ्कास्यां चलत्खञ्जनलोचनाम्। सदालोलगतिं कान्तां कुसुमास्त्रशिलीमुखीम्॥ एवं ध्यात्वा जपेन्मत्रं निशीथे याति सा तदा। दृष्ट्वा तु साधक श्रेष्ठमाज्ञां देहीति तां वदेत्॥ स्त्रीभावेन-

तदा तस्यै दद्यात्पाद्यादिकं ततः। सुप्रसन्ना मुदा देवी साधकं तोषयेत्सदा॥ अन्नाद्यै रतिभोगेन पतिवत्पालयेत्सदा। नीत्वा रात्रौ सुखैश्वर्यं दत्त्वा च विपुलं धनम्॥ वस्त्रालंकारद्रव्यादीन्प्रभाते याति निश्चितम्। एवं प्रतिदिनं तस्य सिद्धिः स्यात्कामरूपतः॥ ४॥

अनन्तर सब कामनाओंका फल देनेवाली कामेश्वरी योगिनीकी साधनप्रणाली और मन्त्र कहा जाता है। ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा। यह महामन्त्र साधकको सुख देनेवाला है। साधक पूर्ववत् पूजादि करके शोभायमान भोजपत्रपर गोरोचनाद्वारा सब गहनोंसे विभूषित देवीकी प्रतिमूर्ति अंकित करे और शय्यापर बैठकर एकाग्रचित्तसे पूर्वकथित मन्त्र जपे। एक महीनेतक नित्य एक हजार मन्त्र जपना चाहिये। इस देवताकी पूजा और मंत्र जपनेके समय घृत और मधुद्वारा दीपक जलाना उचित है। कामेश्वरी देवी चन्द्रमुखी, इनके नेत्र खञ्जनकी समान चञ्चल और यह सदा चञ्चलगतिसे विचरती रहती है इनके हाथमें पुष्पबाण है। इस प्रकार ध्यान करके पूजा और जप करनेपर देवी आगमन करती हैं और सन्तुष्ट होकर साधकसे कहती हैं आपको किस आज्ञाका पालन करना होगा, अनन्तर साधक देवीकी स्त्रीभावसे पाद्यादिद्वारा पूजा करे। ऐसा होनेपर देवी अत्यन्त प्रसन्न होकर साधकको परितुष्ट करती हैं और अन्नादि अनेक भोज्यपदार्थोंद्वारा पतिकी समान पालन करती हैं। देवी साधकके निकट रात्रि बिताकर ऐश्वर्यादि सुख भोगनेकी सामग्री विपुल धन और नाना प्रकारके

वस्त्र गहने इत्यादि प्रदानपूर्वक प्रातःकालमें चली जाती हैं। इस प्रकार प्रतिदिन साधककी अभिलाषानुसार सिद्धि प्रदान करती हैं ॥ ४ ॥

ततः पटे विनिर्माय पुत्तलीं ध्यानरूपतः । सुवर्णवर्णां गौरांगीं सर्वालंकारभूषिताम् ॥ नूपुरांगदहाराढ्यां रम्यां च पुष्करेक्षणाम् । एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं दत्त्वा च पाद्यमुत्तमम् ॥ सचंदनेन पुष्पेण जातीपुष्पेण साधकः । गुग्गुलुधूपदीपौ च दद्यान्मूलेन साधकः ॥ मंत्रस्तु ॥ तारं माया तथा गच्छ रतिसुन्दरिपदं ततः । वह्निजायाष्टसाहस्रं जपेन्मंत्रं दिने दिने ॥ मासान्ते दिवसं व्याप्य कुर्यात्पूजादिकं शुभम् । घृतदीपं तथा गंधं पुष्पं ताम्बूलमेव च ॥ तावन्मंत्रं जपेद्विद्वान्यावदायाति सुंदरी । ज्ञात्वा दृढं साधकेंद्रं निशीथे याति निश्चितम् ॥ ततस्तमर्चयेद्भक्त्या जातीकुसुममालया । सुसंतुष्टा साधकेंद्रं तोषयेद्रतिभोजनैः ॥ भूत्वा भार्या च सा तस्मै ददाति वाञ्छितं वरम् । भूषादिकं परित्यज्य प्रभाते याति सा ध्रुवम् ॥ ५ ॥

अन्य योगिनीसाधनकी प्रणाली यथा—प्रथम योगिनीकी ध्यानानुसार पट (वस्त्र) में प्रतिमूर्ति अंकित करे। देवीका ध्यान यथा—देवी सुवर्णकी समान वर्णवाली गौराङ्गी और सब प्रकारके गहनोंसे अलंकृत हैं। पायजेब, बाजूबन्द और हार इत्यादि अनेक प्रकारके गहनोंसे सजी हुई हैं। दोनों नेत्र खिले हुए कमलकी समान सुदृश्य है। इस भांति देवीके रूपकी

चिन्ता करके पाद्य चन्दन और जाती (चंबेली) प्रभृति अनेक पुष्पोंसे पूजा करके मन्त्र जपना चाहिये। अनन्तर साधक मूलमन्त्रसे गूगल धूप और दीप प्रदान करे। ॐ ह्रीं आगच्छ रतिसुंदरि स्वाहा, इस मंत्रको प्रतिदिन आठ हजार जपना चाहिये। एक महीने भर इस प्रकार जप करके महीनेके अंतिम दिनमें फिर पूजा करे। घीका दीपक गंध पुष्प और ताम्बूल निवेदन करके सुंदरीके आनेकी प्रतीक्षामें जप करे। जबतक देवी नहीं आवे, तबतक जप करता रहे। देवी साधकको दृढप्रतिज्ञ जानकर रात्रिकालमें निःसंदेह आती है। तब साधक देवीकी जातीपुष्परचित माला द्वारा भक्तिपूर्वक पूजा करे। ऐसा होनेपर देवी साधकके प्रति सन्तुष्ट होकर रति और भोज्यपदार्थ प्रदानपूर्वक उसको संतुष्ट करती है और साधककी भार्या होकर उसको वाञ्छित वर प्रदान करती है। देवी साधकके निकट रात्रि बिताकर वस्त्राभूषणादि परित्यागपूर्वक प्रभातकालमें चली जाती हैं और फिर साधककी आज्ञानुसार प्रतिदिन आती जाती रहती हैं इसमें सन्देह नहीं ॥ ५ ॥

ततोऽन्यत् साधनं वक्ष्ये स्वगृहे शिवसन्निधौ। वेदाद्यं भुवनेशी च गच्छ पद्मिनि वल्लभा॥ पावकस्य महामंत्रं पूर्ववत्सकलं ततः। मण्डलं चन्दनैः कृत्वा मूलमंत्रं लिखेत्ततः॥ पद्माननां श्यामवर्णां पीनोत्तुङ्गपयोधराम्। कोमलाङ्गीं स्मेरमुखीं रक्तोत्पलदलेक्षणाम्॥ एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं सहस्रं च दिने दिने। मासान्ते पूर्णिमां प्राप्य विधिवत्पूजयेत्सदा॥ आनिशीथं जपे-

न्मंत्रं दृढाभ्यासेन साधकः। सर्वत्र कुशलं ज्ञात्वा याति सा साधकालयम् ॥ भूत्वा भार्या साधकं हि साधयेद्विविधैरपि। भोज्यैर्दिव्यैर्भूषणाद्यैः पद्मिनी सा दिने दिने ॥ पूर्ववत्पालितं लोके नित्यं स्वर्गं च सर्वदा। त्यक्त्वा भार्यां भजेत्तां च साधकेन्द्रः सदा प्रिये ॥ ६ ॥

अब अन्य योगिनीकी साधनप्रणाली कहते हैं। साधक अपने घर अथवा शिवके समीपमें यह कार्य करे। ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि स्वाहा। इस मन्त्रसे साधन करे। पूर्ववत् पूजादि करके फिर चन्दनद्वारा मंडल अंकित करे और उस मण्डलमें मूलमंत्र लिखे। देवीका आकार यथा-यह कमलकी समान मुखवाली और श्यामवर्ण हैं, इनके दोनों पयोधर स्थूल और ऊंचे हैं, शरीर बहुतही कोमल है, मुखमें सदा कुछेक हँसी विराजमान रहती है, दोनों नेत्र लाल कमलके समान हैं। इस प्रकार ध्यान करके प्रतिदिन एक हजार जप करे। एक महीने इस भांति जप करके मासके अंतिम दिनमें पूर्णिमातिथिमें यथाविधि पूजा करे और आधी राततक जप करता रहे तब देवी साधकको दृढप्रतिज्ञ जानकर उसके समीप आती हैं और साधकका सर्वप्रकार मंगल बढाती हुई उसके घरमें उपस्थित होती है। इस भांति पद्मिनी साधककी भार्या होकर विविध आहारीय पदार्थ और नाना प्रकारके गहने इत्यादिकोंके द्वारा साधकको सन्तुष्ट करती है। पद्मिनी साधककी भार्या होकर उसका पतिकी समान पालन करती है। अतएव साधक अन्य भार्या परित्याग करके पद्मिनीकी भजना करे ॥ ६ ॥

ततो वक्ष्ये महाविद्यां विश्वमित्रेण धीमता । ज्ञात्वा या साधिता विद्या बला चातिबला प्रिये ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रणवान्ते महामाया नटिनि पावकप्रिया । महाविद्येति कथिता गोपनीया प्रयत्नतः ॥ अशोकस्य तटं गत्वा स्नानं पूर्ववदाचरेत् । मूलमंत्रेण सकलं कुर्याच्च सुसमाहितः ॥ त्रैलोक्यमोहिनीं गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम् । विचित्रालंकृतां रम्यां नर्त्तकीवेषधारिणीम् ॥ एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं सहस्रं च दिने दिने । मांसोपहारैः संपूज्य धूपदीपौ निवेदयेत् ॥ गंधचंदेनतांबूलं दद्यात्तस्यै सदा बुधः । मासमेक तु तां भक्त्या पूजयेत्साधकोत्तमः ॥ मासांते दिवसं प्राप्य कुर्याच्च पूजनं महत् । अर्द्धरात्रौ भयं दत्त्वा किञ्चित्साधकसत्तमे ॥ सुदृढं साधकं मत्त्वा याति सा साधकालयम् । विद्याभिः सकलाभिश्च किञ्चित्स्मेरमुखी ततः ॥ वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्त्तते । तच्छ्रुत्वा साधकश्रेष्ठो भावयेन्मनसा धिया ॥ मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा प्रीतिभावतः । कृत्वा संतोषयेद्भक्त्या नटिनी तत्करोत्यलम् ॥ माता स्याद्यदि सा देवी पुत्रवत्पालितं मुदा । स्वर्णशतं सिद्धिद्रव्यं ददाति सा दिने दिने ॥ भगिनी यदि सा कन्या देवस्य नागकन्यकाम् । राजकन्यां समानीय ददाति सा दिने दिने ॥ अतीतागतां वार्त्तां सर्वां जानाति साधकम् । भार्या स्याद्यदि सा देवी ददाति विपुलं धनम् ॥ अन्नाद्यैरुपचारैस्तु ददाति कामभोजनम् । स्वर्णशतं सदा तस्मै सा ददाति ध्रुवं प्रिये ॥ ७ ॥

अब अन्य महामन्त्र कहा जाता है। इस मंत्रसे बुद्धिमान् विश्वामित्रजीने साधना की थी। ॐ ह्रीं नटिनि स्वाहा। यह महाविद्या कही गई है इसको यत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये। इस मंत्रकी साधना करनेके समय अशोकवृक्षके नीचे जाकर पूर्ववत् स्नान करे और मूलमंत्रसे पूजाका कार्य करना चाहिये। उक्त देवीकी आकृति इस प्रकार है। यह अपने रूप लावण्यमें तीनों भुवनोंको मोहित करती हैं, और यह गौरवर्णवाली, विचित्रवस्त्रधारिणी विचित्र गहनोंसे विभूषित और नर्त्तकीरूपधारिणी हैं। इस प्रकार ध्यान करके प्रतिदिन एक हजार जप करे। मांसोपहारसे देवीकी पूजा करके धूप निवेदन करे! एवं गंध पुष्प ताम्बूल देवीको प्रदान करे। साधक इस प्रकार एक मास पूजा और मंत्रका जप करे। फिर महीनेके अंतिम दिनमें महापूजा करनी चाहिये। देवी आधी रातके समय आकर साधकको भय दिखाती हैं। उससे साधक भीत न होकर मंत्रको जपता रहे। देवी साधकको दृढप्रतिज्ञ जानकर उसके घर गमन करती हैं। उस काल संपूर्ण त्रियावती देवी कुछेक हास्य करके साधकसे कहती हैं कि 'तुम अपना अभिलाषित वर माँगो' साधक देवीका वचन सुन मनमें स्थिर कर अपनी इच्छानुसार माता, बहन अथवा भार्याका सम्बोधन करके तदनुरूप साधक करे। फिर साधक नटिनीको भक्तिद्वारा संतुष्ट करे। इससे नटिनी संतुष्ट होकर साधकका मनोरथ पूर्ण करती है। यदि साधक देवीकी मातृभावमें भजना करे तो देवी साधकको पुत्रकी समान पालती हैं और प्रतिदिन शत-

संख्यक स्वर्णमुद्रा (सौ अशर्फी) और अभिलाषित पदार्थ प्रदान करती हैं। यदि भगिनीरूपमें संभाषण किया जावे तो देवी प्रतिदिन नागकन्या और राजकन्या लाकर देती हैं साधक इस साधन के बलसे अतीत [बीती हुई] और भविष्यत् (होनहार) सब घटना जान सकता है। यदि साधक देवीकी भार्याके भावमें भजना करे, तो देवी प्रतिदिन विपुल धन प्रदान करती है और अन्नादि नाना प्रकारके उपचार द्वारा यथेप्सित भोजन और शतसुवर्ण मुद्रा (सौ अशर्फी) प्रदान करती हैं ॥ ७ ॥

महाविद्यां प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय। कुंकुमेन समालिख्य भूर्जपत्रे स्त्रियं मुदा ॥ ततोऽष्टदलमालिख्य कुर्यान्न्यासादिकं प्रिये। जीवन्यासादिकं कृत्वा ध्यायेत्तत्र प्रसन्नधीः ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशां नानालंकारभूषिताम्। मञ्जीरहारकेयूररत्नकुण्डलमण्डिताम् ॥ एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं सहस्रं तु दिने दिने। प्रतिपद्दिनमारभ्य पूजयेत्कुसुमादिभिः ॥ धूपदीपविधानैश्च त्रिसंध्यं पूजयेन्मुदा। पूर्णिमां प्राप्य गंधाद्यैः पूजयेत्साधकोत्तमः ॥ घृतदीपं तथा धूपं नैवेद्यं च मनोरमम्। रात्रौ च दिवसे जाप्यं कुर्याच्च सुसमाहितः ॥ प्रभाते समये याति साधकस्यान्तिकं ध्रुवम् ॥ प्रसन्नवदना भूत्वा तोषयेद्रतिभोजनैः ॥ देवदानवगन्धर्वविद्याधृग्यक्षरक्षसाम्। कन्याभीं रत्नभूषाभिः साधकेन्द्रं मुहुर्मुहुः ॥ चर्व्यचोष्यादिकं द्रव्यं दिव्यं ददाति सा ध्रुवम्। स्वर्गे मर्त्ये च पाताले यद्वस्तु विद्यते प्रिये ॥ आनीय दीयते

सत्यं साधकाज्ञानुरूपतः । स्वर्णशतं सदा तस्मै ददाति सा दिने दिने ॥ साधकाय वरं दत्त्वा याति सा निजमन्दिरम् । तस्या वरप्रसादेन चिरजीवी निरामयः ॥ सर्वज्ञः सुन्दरः श्रीमान्सर्वगो भवति ध्रुवम् । रेमे सार्द्धं तया देवि साधकेन्द्रो दिने दिने ॥ मन्त्रस्तु ॥ तारं माया गच्छानुरागिणि मैथुनप्रिये । वह्निभार्या मनुः प्रोक्तः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ एषा मधुमती तु स्यात्सर्वसिद्धिप्रदा प्रिये । गुह्याद्गुह्यतरा ह्येषा तत्र स्नेहात्प्रकीर्तिता॥८॥

अब अन्य महाविद्या कहते हैं। सावधानीसे श्रवण कीजिये। भोजपत्रपर कुंकुमद्वारा स्त्रीकी प्रतिमूर्ति अंकित करके उसके बाहिरी भागमें अष्टदल पद्म अंकित करके न्यासादि करे और जीवन्यास करके उसमें प्रसन्न चित्तसे देवीका ध्यान करे। देवी विशुद्ध स्फटिककी समान शुभ्र (सफेद) वर्णवाली, नाना प्रकार के गहनोंसे शोभित एवं पायजेब, हार, केयूर और रत्नजटित कुण्डलोंसे मण्डित हैं। इस प्रकार ध्यान करके प्रतिदिन एक हजार मन्त्र जपना चाहिये। पडवा तिथिसे आरंभ करके पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादि उपहार द्वारा तीनों सन्ध्याओंमें देवीकी पूजा करे। इस भांति एक मास पूजा और मन्त्र जपकर पूर्णिमाके दिन साधक गन्धादि उपचारसे देवीकी पूजा करे। घीका दीवा और धूप प्रदान करके दिनरात मंत्र जपता रहे। इस भांति पूजा और जप करने पर प्रभात समय देवी साधक के समीप आती है तथा सन्तुष्ट होकर रति और भोजनके पदार्थोंद्वारा साधकको परितुष्ट करती हैं। देवकन्या, दानवकन्या,

नागकन्या, यक्षकन्या, गन्धर्वकन्या, विद्याधरकन्या और विविध रत्न भूषण और चर्व्य चोष्यादिक नाना भक्ष्यद्रव्य प्रतिदिन प्रदान करती हैं। स्वर्ग, मर्त्य और पातालमें जो सब वस्तु विद्यमान हैं, देवी साधककी आज्ञानुसार वह सब लाकर साधकको अर्पण कर देती हैं, प्रतिदिन शतसुवर्ण मुद्रा (सौ अशर्फी) प्रदान किया करती हैं और फिर देवी साधकको अभिलाषित वर देकर अपने स्थानको प्रस्थान कर जाती हैं। साधक देवीके प्रसादसे निरामय (आरोग्य) शरीर होकर चिर-काल जीवित रहता है। साधक देवीके वरसे सर्वज्ञ सुन्दर कलेवर और श्रीमान् होता है, सर्वत्र जाने आनेमें साधककी शक्ति उत्पन्न होती है। साधक इस प्रकार योगिनीसाधन करके प्रतिदिन देवीके सहित क्रीडा कौतुकादि करता है। ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणी मैथुनप्रिये स्वाहा। यह मंत्र कहा गया यह सब कार्योंमें सिद्धि प्रदान करता है। यह सर्व सिद्धि देनेवाली मधुमती देवी अत्यंत गुह्य हैं हे देवि! आपके स्नेहसे ही इनको प्रकाशित किया है ॥ ८ ॥

श्रीदेव्युवाच ॥ श्रुतं च साधनं पुण्यं यक्षिणीनां सुख-प्रदम्। कस्मिन्काले प्रकर्त्तव्यं विधिना केन वा प्रभो॥ अथाधिकारिणः क वा समासेन वद प्रभो॥ ईश्वर उवाच ॥ वसंते साधयेद्धीमान्हविष्याशी जितेंद्रियः। सदा ध्यानपरो भूत्वा तद्दर्शनमहोत्सुकः॥ उज्जटे प्रांतरे वापि कामरूपे विशेषतः। स्थानेष्वेकतमं प्राप्य साध-येत्सुसमाहितः॥ अनेन विधिना साक्षाद्भविष्यति न संशयः। देव्याश्च सेवकाः सर्वे परं चात्राधिकारिणः॥ तारक ब्रह्मणो भृत्यं विनाप्य त्राधिकारिणः॥ ९ ॥

श्रीदेवी पार्वतीजीने महादेवजीसे पूछा हे प्रभो ! मैंने आपसे यक्षिणीसाधन सुना है, यह सुखप्रद साधन किस समय और किस विधिसे करना चाहिये ? तथा कौनसा मनुष्य इससाधनका अधिकारी है ? यह सब मेरे प्रति वर्णन कीजिये । श्रीमहादेवजी बोले । हे पार्वती ! बुद्धिमान् साधक हविष्याशी और जितेन्द्रिय होकर वसन्तकालमें यह योगिनी साधन करे । सर्वदा योगिनीका ध्यान करके उसके दर्शन में उत्सुक रहे और उज्जट अथवा प्रान्तरमें यह साधन करे । विशेषतः कामरूपमें यह सिद्धिकार्य विशेष फलका देनेवाला होता है । पूर्वोक्त सब स्थानोंके बीच किसी एक स्थानमें एकाग्र चित्तसे यह साधन करे । इस प्रकारके विधानसे साधन करनेपर निसन्देह देवीका दर्शन पा सकता है जो देवीके सेवक हैं, वेही इस कार्यके अधिकारी हैं, और जो ब्रह्मवित् अर्थात् ब्रह्मको जाननेवाला है उसका इस कार्यमें अधिकार नहीं है ॥ ९ ॥

इति योगिनीसाधन समाप्त

अथ प्रचण्डचण्डिकासाधनम् ।

प्रचण्डचण्डिकां वक्ष्ये सर्वकामफलप्रदाम् । यस्याः प्रसादमात्रेण सदाशिवो भवेन्नरः ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं अधनो धनवान्भवेत् । कवित्वं च सुपाण्डित्यं लभते नात्र संशयः ॥ १ ॥

अब सब कामनाओंका फल देनेवाली प्रचण्डचण्डिकाके मन्त्रादि कहे जाते हैं. प्रचण्डचण्डिकाके प्रसादमात्रसे मनुष्य

सदाशिव हो जाता है। और अपुत्र पुरुष पुत्र लाभ करता है, तथा निर्धण मनुष्य धनवान् हो जाता है। इस देवताका अनुग्रह होनेपर कवित्व [कविता करनेकी शक्ति] और पांडित्य लाभ होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १ ॥

अथ प्रचंडचंडिकामंत्राः विश्वसारे यामले च।

लक्ष्मीं लज्जां ततो मायां मात्रां द्वादशिकामपि। वज्रवैरोचनीये द्वे माये फट् स्वाहया युतः॥ लक्ष्मीबीजं यदाद्यं स्यात्तदा श्रीः सर्वतोमुखी। लज्जाबीजेन चाद्येन वश्यतां यान्ति योषितः॥ मायाबीजेन चाद्येन महापातकनाशनम्। मात्रां द्वादशिकां बीजमाद्यं स्यान्मुक्तिदायकम्॥ भैरवोऽस्य ऋषिर्देवि सम्राट् छन्द उदीरितम्। छिन्नमस्ता स्मृता देवि बीजं कूर्चद्वयं पुनः॥ स्वाहा शक्तिरभीष्टार्थे विनियोग उदाहृतः। अत्र लज्जा पदं कामबीजपरम्॥ तथा च। अत्र लज्जापदे देवि कामबीजं वितन्यते। महाकालमतं ज्ञेयं मन्त्रोद्धारं शुभावहम्॥ पूर्वमायापदे इति पाठे मायायाः पूर्वं लज्जा बीजं तस्मिन्नित्यर्थः। तथा च। पूर्वमायापदेन लज्जाबीजमुच्यते अन्यथा तापिन्यादिविरोधः। तथा च। कामाद्यां वाग्भवाद्यांवा मायाद्यांवा जपेत्सुधीः। लक्ष्म्याद्यां वा जपेद्विद्यां चतुर्वर्गफलप्रदाम्॥ अन्येषां च मुनीनां मते सर्वत्र मायापदं कूर्चपरम्॥ तत्रैव। वान्तं वह्निसमायुक्तं रतिबिन्दुसमन्वितम्। लक्ष्मीबीजमिदं प्रोक्त सर्वकामार्थसिद्धिदम्॥ वामाक्षिवह्निसंयुक्तं बिंदुनादवि-

भूषितम् । शिवबीजं महेशानि लक्ष्मीबीजमुदाहृतम् ॥ ईशानमुद्धृत्य पुरारिबीजं सबिन्दुकं नादविभूषितं च । सवामकर्णं परितः प्रकल्प्यमायां वदन्तीह मनीषिणस्ताम् ॥ द्वादशस्वरवर्णं स्यान्नादबिन्दुविभूषितम् । वाग्भवं बीजमित्युक्तं सर्ववाक्यविशुद्धये ॥ इति मंत्रचतुर्बीजव्याख्यानात । अयमस्तु समीचीनः । भैरवमते तु माया भुवनेश्वर्यैव । लक्ष्मीः प्रथमबीजोऽस्ति लज्जाबीजे मनोभवः । तृतीयोऽस्मिन् सदा देवी महापातकनाशिनी ॥ चतुर्थे तु गुणातीता मुक्तिविद्याप्रदायिका । वकारे वरुणः साक्षाज्जकारे तु सुराधिपः ॥ रेफो हुताशनो देवो वकारो वसुधाधिपः । ऐकारे त्रिपुरा देवी रेफे त्रिपुरसुन्दरी ॥ त्रैलोक्यविजया देवी सदैवौकारसंस्थिता । चकारे चन्द्रमा देवी नकारे हि विनायकः ॥ इकारे कमला साक्षाद्येकारे च सरस्वती । मायायुग्मे सदा देवी प्रकृत्या सह सङ्गता ॥ वैखरी चैव फट्कारे स्वाकारे कुसुमायुधः । हाकारे च रतिस्तिष्ठेदेव मंत्रसमुच्चयः ॥ इति व्याख्यान्नाच्च ॥ २ ॥

अब प्रचण्डचण्डिकाके मन्त्र और पूजादिका वर्णन किया जाता है । प्रचण्डचण्डिकाकोही छिन्नमस्ता कहते हैं । विश्वसार और रुद्रयामलमें श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा । यह षोडशाक्षर (सोलह अक्षरोंका) मन्त्र लिखा है । यह मन्त्र सब कार्योंमें मंगलदायक है । क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा यह मन्त्र स्त्रीको वशमें करने-

वाला है ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा इस मन्त्रसे आराधना करनेपर साधकके महापाप नष्ट होजाते हैं। ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा यह मंत्र मुक्तिका देनेवाला है। इस मंत्रके भैरव ऋषि, सम्राट् छंद, छिन्नमस्ता देवा हुं बीज, एवं स्वाहा शक्ति और अभीष्ट सिद्धिके निमित्त इसका विनियोग होता है। इस स्थानमें लज्जाशब्दसे कामबीज समझना चाहिये। इस मंत्रोद्धारके वचनमें जो प्रथम माया शब्द है, उसका अर्थ कामबीज अर्थात क्लीं है। अंत्य माया शब्दका अर्थ कूर्चबीज अर्थात् हूं है। अन्यान्य मुनियोंके मतसे दोनों मायाशब्दका अर्थ कूर्चबीज है, किंतु भैरवमतसे मायाशब्दका अर्थ भुवनेश्वरी अर्थात् ह्रीं है। यह तंत्रमें लिखा है ॥ २ ॥

अस्य पूजाप्रयोगः !

प्रातःकृत्यादिकं कृत्वा मन्त्राचमनं कुर्यात्। यथा। लक्ष्मीमायाकूर्चबीजैस्त्रिभिः पीताम्बुसाधकः। वाग्भवेनोष्ठौ संमृज्य मायाभ्यां चद्विरुन्मृजेत् कूर्चेन क्षालयेत्पाणी एभिर्मन्त्रैश्च विन्यसेत्। श्रीमायाकूर्चवाक्कामत्रिपुटाभगवर्णकैः॥ कामकलाङ्कुशाभ्यां च वक्रनासाक्षिश्रोत्रयोः॥ नाभिहृन्मस्तकं चासो स्पृष्ट्वा शम्भुर्भवेत्क्षणात्॥ आचम्यैवं छिन्नमस्तां वत्सरात्तां प्रपश्यति॥ ततःप्राणायामान्तं विधाय षोढान्यासं कुर्यात्। मन्त्रषोढां ततः कुयात्रैलोक्यवशकारिणीम्। श्रीबालात्रिपुटायोनिप्रासादप्रणवैस्तथा॥कालीवध्यङ्कुशैः कामकलाकूर्चा-

स्त्रकैः क्रमात्। षोडशीमनुवर्णैश्च पृथगष्टादशाक्षरैः ॥ एभिर्बीजैर्मातृकाणांन्स्वेषु स्थानेषु विन्यसेत्। एषा ब्रह्मस्वरूपा हि बीजषोढा प्रकीर्तिता ॥ अस्याः संन्यसनात्सर्वे वज्रदेहा भवन्ति हि। सर्वैश्वर्ययुतास्ते हि जीवन्मुक्ता दशाब्दतः ॥ ततः ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् अस्य मन्त्रस्य भैरव ऋषिः सम्राट् छन्दश्छिन्नमस्ता देवता हुंकारद्वयं बीजं स्वाहा शक्तिरभीष्टार्थसिद्धये विनियोगः। यथा शिरसि भैरवाय ऋषये नमः। मुखे सम्राट्छन्दसे हृदि छिन्नमस्तायै देवतायै नमः। गुह्ये हुँ हुँ बीजाय नमः। पादयोः स्वाहा शक्तये नमः। ततः कराङ्गन्यासौ ॐ आँ खड्गाय हृदयाय स्वाहा इति कनीयसि। ॐ ईं सुखड्गीय शिरसे स्वाहा इति पवित्राङ्गुलयोः। ॐ ऊँ सुवज्राय शिखायै स्वाहा इति मध्यमयोः। ॐ ऐं पाशाय कवचाय स्वाहा इति तर्जन्योः। ॐ औं अङ्कुशाय नेत्रत्रयाय स्वाहा इति अङ्गुष्ठयोः। ॐ अः सुरक्षा सुरक्षायास्त्राय फट् इति करतलकरपृष्ठयोः। एवं हृदयादिषु। तदुक्तं भैरवतन्त्रे। उच्चरेत्पूर्वमाकारं बिन्दुलाञ्छितमस्तकम्। खड्गाय हृदयायेति स्वाहायुक्तं कनीयसि ॥ ईकारं च ततो देवि चन्द्रकोटिसमप्रभम्। सुखड्गाय ततो वाच्यं शिरसे तदनन्तरम् ॥ स्वाहायुक्तं ततो वाच्यं पवित्राङ्गुलिसंयुतम्। ऊकारं च ततो वाच्यं बिन्दुलाञ्छितमस्तकम् ॥ सुवज्राय ततो वाच्यं शिखायै तदनन्तरम्। स्वाहान्तं मध्यमाया च

विन्यसेत्तदनन्तरम् ॥ मात्रां द्वादशिकां देवीं विन्यसेच्च ततः परम् । प्राणायेति समुच्चार्य प्रवदेत्कवचाय च ॥ स्वाहान्तं विन्यसेन्मन्त्रं तर्जन्यां तदनन्तरम् । औङ्कारं च ततो देवि चांकुशं तदनन्तरम् ॥ नेत्रत्रयाय स्वाहान्तमङ्गुष्ठे करयोर्द्वयोः । अकारं च विसर्गान्तं सुरक्षाक्षरसंयुतम् ॥ असुरक्षाय संयुक्तं अस्त्रायेति ततः परम् । षडक्षरसमायुक्तं विन्यसेत्करयोर्द्वयोः ॥ हृदि मूर्ध्नि शिखायां च कवचे नेत्रमण्डले । यावदस्त्रं चतुर्दिक्षु विदिक्षु च यथाक्रमम् ॥ त्रिशक्तितन्त्रे भैरववाक्ये । उच्चरेत्प्रणवं पूर्वमाकारं बिन्दुसंयुतम् । इत्यादिवाक्यात् कराङ्गेषु प्रणवसम्वलितो न्यासः । ततो मूलेन मस्तकादिपादपर्यन्तं पादादिमस्तकान्तं वारत्रयं न्यसेत् । ततो ध्यानम् । स्वनाभौ नीरजं ध्यायेच्छुद्धं विकसितं सितम् । तत्पद्मकोषमध्ये तु मण्डलं चण्डरोचिषः ॥ जपाकुसुमसंकाशं रक्तबन्धूकसन्निभम् । रजः सत्त्वतमोरेखायोनिमण्डलमण्डितम् ॥ मध्ये तु तां महादेवीं सूर्यकोटिसमप्रभाम् । छिन्नमस्तां करे वामे धारयन्तीं स्वमस्तकम् ॥ प्रसारितमुखीं भीमां लेलिहानाग्रजिह्विकाम् । पिबन्तीं रौधिरीं धारां निजकण्ठविनिर्गताम् ॥ विकीर्णकेशपाशां च नानापुष्पसमन्विताम् । दक्षिणे च करे कर्त्रीं मुंडमालाविभूषिताम् ॥ दिगम्बरीं महाघोरां प्रत्यालीढपदस्थिताम् । अस्थिमालाधरां देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥ रतिकामोपविष्टां च सदा ध्यायन्ति मन्त्रिणः ।

सदाषोडशवर्षीयां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ विपरीतरतासक्तौ ध्यायेद्रतिमनोभवौ । डाकिनीवर्णियुनीक्तां वामदक्षिणयोगतः॥ देवीगलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वतीम् । वर्णिनीं लोहितां सौम्यां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् कपालकर्त्तकाहस्तां वामदक्षिणयोगतः ॥ नागयज्ञोपवीताढ्यां ज्वलत्तेजोमयीमिव ॥ प्रत्यालीढपदां दिव्यां नानालंकारभूषिताम् सदा षोडशवर्षीयामस्थिमालाविभूषिताम ॥ डाकिनीं वामपार्श्वस्थां कल्पसूर्यानलोपमाम् । विद्युद्धंटां त्रिनयनां दन्तपंक्तिबलाकिनीम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनां पीनोन्नतपयोधराम् । महादेवीं महाघोरां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् ॥ लेलिहानमहाजिह्वां मुंडमालाविभूषिताम् । कपालकर्त्तकाहस्तां वामदक्षिणयोगतः ॥ देवीगलच्छलोद्रक्तधारापानं प्रकुर्वतीम् करस्थितकपालेन भीषणेन'तिभीषणाम् । आस्मां निषेव्यमाणां तां ध्यायेद्देवीं विचक्षणः ॥ पिबन्तीमिति तेन मुखेनेति शेषः । तथा च स्वमस्तकं मखंपरं रक्तधाराभिः पूरितम् ॥ ललज्जिह्वं महाभीमं धृतं वामभुजे तथा । इति भैरवतंत्रे पाठः ॥ ध्यानस्यावश्यकत्वमाह तन्त्रे ॥ प्रचण्डचण्डिकामेवं ध्यात्वा यस्तु प्रपूजयेत् । सद्यस्तस्य शिरश्छित्त्वा देवी पिबति शोणितम् ॥ ३ ॥

अब छिन्नमस्ता देवीकी पूजाप्रणाली कहीजाती है । प्रथम तो सामान्य पूजापद्धतिके अनुसार प्रातःकृत्यादिक करके मन्त्राचमन करे । साधक श्रीं ह्रीं हुं इन तीन मन्त्रसे तीन वार

जलपान करके ऐं इस मन्त्रसे दोनों होठ मार्जन और ह्रीं ह्रीं इस मन्त्रसे पुनर्वार तीन वार होठ मार्जन करे। फिर हुं इस मन्त्रसे दोनों हाथ प्रक्षालन करके श्रीं इन मंत्रसे मुख। ह्रीं इस मन्त्रसे दक्षिण नासिका, हुं इस मन्त्रसे वाम नासिका, ऐं इस मन्त्रसे दाहिना नेत्र, क्लीं इस मन्त्रसे बांया नेत्र, श्रीं इस मंत्रसे दाहिना कान, ह्रीं इस मंत्रसे बांया कान, क्लीं इस मंत्रसे नाभि, ऐं इस मंत्रसे हृदय, ईं इस मंत्रसे मस्तक और क्रों इस मंत्रसे दोनों कंधोंको स्पर्श करना चाहिये। इस प्रकार आचमन करनेपर साधक शिवरूप होजाता है। उक्तप्रकारसे आचमन करके छिन्नमस्ता देवीकी आराधना करनेपर एक वर्षमें देवीका दर्शन मिल जाता है। अनन्तर पूर्वोक्त विधिके अनुसार प्राणायाम पर्यन्त सब काम करके षोडान्यास करना चाहिये। श्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं हौं ॐ ह्रीं श्रीं क्रों ईं हुं फट्। और षोडशी विद्याका अष्टादशाक्षर मन्त्र इनके प्रत्येय बीज द्वारा मातृका वर्ण अर्थात् अकारादिसे क्ष पर्यन्त पञ्चाशद्वर्णको अलग अलग पुटित करके मातृका न्यासके स्थानमें न्यास करे। अर्थात् ललाटमें श्रीं अं श्रीं नमः, मुखमें श्रीं आं श्रीं नमः इत्यादि। एवं ललाटमें ऐं अं ऐं नमः, मुखमें ऐं आं ऐं नमः, इत्यादि प्रकारसे न्यास करना चाहिये। इसीका नाम बीज षोढा है यह न्यास ब्रह्मस्वरूप है। इस षोडान्यासके करनेपर साधक वज्रके समान दृढ शरीरवाला होजाता है। दशवर्ष पर्यंत यह न्यास करनेपर साधक सर्वैश्वर्ययुक्त होकर जीवन्मुक्त हो सकता है। फिर ऋष्यादि न्यास करना चाहिये। इस न्यासकी

प्रणाली और मन्त्र मूलमें स्पष्ट लिखे गये हैं फिर करांगन्यास करना चाहिये । कराङ्गन्यासमें कुछेक विषमता है । अन्यान्य देवताओंके पक्षमें प्रथम अंगुष्ठांगुलीमें और फिर तर्जनी आदि अंगुलीमें न्यास करना चाहिये । इस देवताके न्यासमें प्रथम कनिष्ठांगुलीमें फिर अनामा, मध्यमा, तर्जनी और अंगुष्ठांगु-लीमें न्यास करना चाहिये । फलमें इस न्यासके मंत्रादि लिखे हैं । तिनके देखनेसे समझमें आजायगा । इस न्यासके जो सब प्रमाण भैरवतन्त्रमें लिखे हैं वे मूलमें लिखे गये हैं । त्रिशक्तितन्त्रमें भैरवने कहा है कि प्रथम प्रणव, फिर बिन्दु-संयुक्त आकार इत्यादि रूपसे न्यास करे । अतएव छिन्नमस्ता देवीके कराङ्गन्यासमें प्रथम प्रणव अर्थात् ॐ यह मंत्र उच्चारण करके फिर यथाविधि मंत्रपाठपूर्वक कराङ्गन्यास करना चाहिये। अनन्तर मूलमंत्र द्वारा मस्तकसे चरणों पर्यन्त और चरणोंसे मस्तक पर्यन्त तीन वार व्यापक न्यास करके ध्यान करना चाहिये । ध्यान यथा अपनी नाभिमें शुद्ध खिले हुए श्वेत कमलका ध्यान करे । उस कमलके कोषमें सूर्यमंडल है, यह मण्डल जवापुष्पकी समान रक्त वर्ण है और रज सत्व तम नामक तीन रेखाओंसे मंडित है इस मंडलमें करोड सूर्यके समान प्रभाशालिनी महादेवी छिन्नमस्ता विराजित हैं । उन्होंने अपने बायें हाथमें अपना कटा हुआ मस्तक धारण किया है, उनका मुख फैला हुआ और भयंकर तथा जीभ लोल है। देवी अपने कंठसे निकलती हुई रुधिरकी धारा पान कर रही हैं। इनके बाल खुलेहुए और अनेक प्रकारके पुष्पोंसे विभूषित हैं।

देवी दिगम्बरी अर्थात् नग्ना और महाभयङ्कराकार हैं। उनका दाहिना पैर अग्रभागमें और बांया पैर कुछेक पीछेकी ओर स्थित है। देवी अस्थिनिर्मित माला और सर्पका यज्ञोपवीत धारण कर रही हैं और यह विपरीत रतासक्त होकर रति कामदेव पर बैठी हुई हैं। यह सोलह वर्षकी युवती हैं, इनके दोनों स्तन स्थूल और ऊंचे हैं। देवीके वाम और दक्षिणमें डाकिनी और वर्णिनी नामक दो नायिका हैं, वे भी देवीके गलेसे टपकती हुई रक्तधारा पान कर रही हैं। यह वर्णिनी सौम्याकृति रक्तवर्णा मुक्तकेशी और वस्त्रहीन है। इसके बांये हाथमें नरमुण्ड और दहिने हाथमें कैंची तथा गलेमें सर्पनिर्मित जनेऊ पडा हुआ है यह जाज्वल्यमान तेजःस्वरूपिणी हैं। इनका दाहिना पैर कुछेक पीछेकी ओर रखा हुआ है। यह नायिका अनेक अलंकारों (गहनों) से विभूषित सोलह वर्षकी आकृतिवाली और हड्डियोंकी बनी मालासे विभूषित हैं। देवीके वामभागमें जो डाकिनी है, वह कल्पान्तकालीन सूर्य और अग्निके सदृश उज्ज्वल देहकांति और जटाजूट बिजलीके समान दीप्यमान हैं। यह डाकिनी त्रिनयना और अत्यन्त सफेद दांतोंवाली है। इसके कराल दांतोंसे मुख महा भयंकर दोनों स्तन अत्यन्त स्थूल और ऊंचे हैं। डाकिनी अत्यंत भयंकराकार खुले बाल और नग्न हैं। देवीकी लपकती हुई जीभ बहुत बडी है। वह मुण्डनिर्मित मालासे विभूषित है। इसके बांयें हाथमें नरमुण्ड तथा दाहिने हाथमें कैंची है। यह देवीके गलेसे निकलती हुई रक्तधारा पान कर रही हैं। हाथमें भयानक

आकृतिका नरमुण्ड धारण कर रक्खा है अतएव उसकी आकृति महाभयंकर हो गई है। यह डाकिनी और वर्णिनी छिन्नमस्ता देवीकी सेवा करती हैं। साधक इस प्रकार देवीके रूपकी चिन्ता करके ध्यान करे। भैरवतन्त्रमें 'ललजिह्वं महाभीमं धृतं वामभुजे तथा।' ऐसा पाठ है। तन्त्रमें लिखा है कि छिन्नमस्ता देवीका ध्यान अवश्य करना चाहिये, जो व्यक्ति विना ध्यान किये हुए छिन्नमस्ता देवीकी पूजा करता है देवी उसका शिर काटकर खून पी जाती हैं ॥ ३ ॥

तत्रैव ॥ सितं कुर्याद्दलं पूर्वमाग्नेयां रक्तवर्णकम् । याम्यं कृष्णमतः पीतं शुक्लं रक्तं सितासितम् ॥ ततः पीतां प्रकुर्वीत कर्णिकां तस्य मध्यगाम् । तन्मध्ये तु प्रकुर्वीत मण्डलं चंडरोचिषः ॥ रजसत्त्वतमोरेखा रक्तशुक्लसिताःक्रमात् । मायायुग्मं ततो न्यस्य फडक्षरसमन्वितम् ॥ बाह्यं तस्य च चक्रस्य कुर्यात्प्राकारवेष्टितम् । पूर्वं रक्तं ततः शुक्लं सितं पीतं यथाक्रमात् ॥ चतुर्द्वारसमायुक्तं क्षेत्रपालैरधिष्ठितम् ॥ इत्यस्याः पूजायंत्रम् । अथवा । त्रिकोणं विन्यसेदादौ तन्मध्ये मंडलत्रयम् । तन्मध्ये विन्यसेद्योनिं द्वारत्रयसमन्वितम् ॥ बहिरष्टदलं पद्मं भूबिम्बं त्रितयं पुनः । कूर्चबीजं लिखेन्मध्ये त्रिकोणे फट्समन्वितम् ॥ तत्र मध्ये महादेवीं छिन्नमस्तां स्मरेद्यतिः । प्रदीपकलिकाकारामद्वितीयव्यवस्थिताम् ॥ योनिमुद्रासमायुक्तां हृदयस्थितलोचनाम् । ध्येयमेतद्यतीनां च गृहस्थानां निशामय ॥ यथा ॥

अन्तरे स्वशरीरस्थ नाभिनीरजसंगताम् । निर्लेपां निर्गुणां सूक्ष्मां बालचंद्रसमप्रभाम् ॥ समाधिमात्रगम्यां तु गुणत्रितयवेष्टिताम् । कलातीतां गुणातीतां मुक्तिमात्रप्रदायिनीम् ॥ एवं ध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य तारिणीवच्छङ्खस्थापनं कुर्यात् ॥ ततः पीठपूजा । आधार शक्तये प्रकृतये कूर्माय अनन्ताय पृथिव्यै क्षीरसमुद्राय रत्नद्वीपाय कल्पवृक्षाय तदधः स्वर्णसिंहासनाय आनन्दकन्दाय सम्विन्नालाय सर्वतत्त्वात्मकपद्माय सं सत्त्वाय, रं रजसे, तं तमसे, आं आत्मने, अं अन्तरात्मने, पं परमात्मने, ह्रीं ज्ञानात्मने नमः सर्वत्र। पद्ममध्ये रतिकामाभ्याम् । भैरवमते तु । आधारशक्तिं कूर्मं तु नागराजमतः परम् । पद्मनालं च पद्मं च पूजयेन्मंत्रवित्तरः॥ मण्डलं चतुरस्रं च रजः सत्त्वं तमस्तथा । रतिकामौ च संपूज्य शक्तिपूजां समाचरेत् ॥ इति । रतिकामोपरि वज्र वैरोचनीये देहि देवि एहि एहि गृह्ण गृह्ण स्वाहा मम सिद्धिं देहि देहि मम शत्रून्मारय मारय करालिके हुँ फट् स्वाहा इति पीठमंत्रः । सर्वत्र प्रणवादिनमोऽन्तेन पूजयेत् ततः पुनर्ध्यात्वा आवाहयेत् । यथा । सर्वसिद्धिवर्णिनीये सर्वसिद्धिडाकिनीये वज्रवैरोचनीये इहावह इहावह पुनस्तन्मंत्रमुच्चार्य इह तिष्ठ तिष्ठ इह सन्निधेहि इह सन्निरुध्यस्व इत्यनेनावाह्य आँ ह्रीं क्रों हँसः इत्यनेन प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ॐ आँ खड्गाय हृदयाय इत्यादिना षडङ्गं विन्यस्य यथाशक्ति पूजां कृत्वा बलिं दद्यात् ।

यथा वज्रवैरोचनीये देहि देहि एहि एहि गृह्ण गृह्ण इमं बलिं मम सिद्धिं देहि देहि मम शत्रून्मारय मारय करालिके हुँ फट् स्वाहा इति मन्त्रेण। ततो देव्या दक्षिणे ॐ वर्णिन्यै नमः, बामे ॐ डाकिन्यै नमः, ततो देव्यंगे षडंगं सम्पूज्य, दक्षिणे ॐ शंखनिधये नमः। वामे पद्मनिधये नमः। पूर्वादिदिक्षु लक्ष्मीं लज्जां मायां वाणीं च पूजयेत्। विदिक्षु ब्रह्मविष्णु-रुद्रेश्वरान्। मध्ये सदाशिवं सर्वत्र प्रणवादिनमोऽन्तेन पूजयेत्। ततः पञ्चपुष्पांजलीन् दत्त्वा आवरणान् पूजयेत्। अग्नीशासुरवायुषु मध्ये दिक्षु च ॐ आँ खड्गाय हृदयाय नमः इत्यादिन षडंगानि सम्पूज्य अष्टपत्रेषु पूर्वादिक्रमेण ॐ ह्रीं काल्यै नमः एवं वर्णिन्यै डाकिन्यै भैरव्यै महाभैरव्यै इन्द्राक्षै पिंगाक्ष्यै संहारिण्यै सर्वत्रैव प्रणवादिनमोऽन्तेन पूजयेत्। यथा—एकां नामाभिधां कालीं वर्णिनीं डाकिनीं तथा। भैरवीं च महापूर्वां भैरवीं तदनन्तरम्॥ इन्द्राक्षीं च सपिंगाक्षीं ततः संहारकारिणीम्। पूर्वादिके दले पूज्याः शक्तयश्च यथाक्रमम्॥ प्रणवादिनमोऽन्तेन लज्जाबीजं समुच्चरन्॥ पद्ममध्ये हुँ हुँ फट् नमः। स्वाहायै नमः। देव्या दक्षिणे सम्राट्छन्दसे नमः। देव्या उत्तरे सर्वव-र्णेभ्यो नमः। पुनर्दक्षिणे बीजशक्तिभ्यां नमः। पत्राग्रेषु पूर्वादिक्रमेण ब्राह्म्यै मोहेश्वर्यै कौमार्यै वैष्णव्यै वाराह्यै इंद्राण्यै चामुण्डायै महालक्ष्म्यै सर्वत्र प्रणवादिनमोऽन्तेन

पूजयेत्। ततश्चतुर्दिक्षु द्वारेषु ॐ करालाय नमः ॐ विकरालाय अतिकरालाय महाकरालाय। यथा भैरवीये। पूर्वद्वारे करालं च विकरालं च दक्षिणे। पश्चिमेऽति करालं च महाकरालमुत्तरे॥ ततो धूपादिविसर्जनान्तं कर्म समापयेत्। विसर्जने त्वयं विशेषः संहारमुद्रां प्रदर्श्य अञ्जलावारोप्य वामनासापुटेन योनिमुद्रां प्रदीपकलिकाकारा कृष्णप्रतिपच्चन्द्रकलामिव क्रमेण क्षीणतां गतां चण्डरश्मौ निवेशयेत्। मन्त्रस्तु। उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मयोनिसमुत्पन्ने गच्छदेवि ममान्तरम्॥ भैरवीये। योनिमुद्रां समारूढां प्रदीपकलिकोज्ज्वलाम्। कृष्णपक्षे विधुमिव क्रमेण क्षीणतां गताम्॥ इमं मन्त्रं समुच्चार्य चण्डरश्मौ निवेशयेत्। उत्तरे शिखरेत्यादि॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः सिद्धविद्यत्वात्॥ बलिदाने तु भैरवीये। रात्रौ बलिःप्रदातव्यो मत्स्यमांससुरादिभिः। अथवा मधुपानाद्यैर्मधुरैर्विभवक्रमैः॥ डाकिनीये ततो वाच्यंदेवीनामः ततः परम्। एह्येहीति ततो वाच्यं इमं बलिमनन्तरम्॥ गृह्ण गृह्ण ततः प्रोक्ता मम सिद्धिमनन्तरम्। देहि देहीति माये च हुँहुँ फट् स्वाहया युतः॥ बलिमन्त्रः समाख्यातः पूजितोऽयं सुरेश्वरीत॥ ४॥

छिन्नमस्ता देवीकी पूजाका यन्त्र। यथा—प्रथम अष्टदलपद्म अंकित करना चाहिये। इसका पूर्वदल शुक्ल वर्ण, अग्नि कोणस्थ दल रक्तवर्ण, दक्षिणदल कृष्णवर्ण, नैर्ऋतदल पीतवर्ण, पश्चिमदल

शुक्लवर्ण, वायुकोणस्थ दल रक्तवर्ण, उत्तरदल शुक्लवर्ण और ईशानकोणस्थ दलको कृष्णवर्ण करना चाहिये और इनके बीचकी कर्णिकाको पीतवर्ण करे। इस कर्णिकामें सूर्यमंडल अंकित करके उसकी सत्त्व, रज और तमोगुणात्मक तीन रेखा रक्त, शुक्ल और कृष्ण वर्ण करे और तिनमें ह्रीं ह्रीं फट् यह मन्त्र लिखे। इस चक्रका बाहिरी भाग प्राकारवेष्टित करके पूर्वादि चारों दिशाओंमें क्रमशः रक्त कृष्ण शुक्ल और पीतवर्ण चतुर्द्वार अंकित करे। इसीको छिन्नमस्ताकी पूजाका यंत्र जानना चाहिये। दूसरी प्रकारका यंत्र यथा—प्रथम त्रिकोण अंकित करे। इस मंडलमें तीन द्वारयुक्त योनिमंडल अंकित करना चाहिये। त्रिकोणके बाहिरी भागमें अष्टदल पद्म अंकित करे। त्रिकोणके बाहिरी भागमें अष्टदल पद्म अंकित करके उसके बाहर तीन भूबिम्ब लिखे। योनिमें हुं फट् मंत्र लिखकर यन्त्र प्रस्तुत कर लेवे। इस मंडलमें यतिगण छिन्नमस्ता देवीकी वक्ष्यमाण प्रकारसे चिंता करें। यह देवी प्रदीपकलिकाकार अद्वितीय योनिमुद्रासमायुक्त और इनके नेत्र हृदयमें अवस्थित हैं इस प्रकारसे यतिगण ध्यान करें। गृहस्थ पुरुषोंको वक्ष्यमाण प्रकारसे ध्यान करना चाहिये। यथा निज शरीरमध्यस्थ नाभिपद्म (मणिपूरक) में अवस्थित, निर्लिप्ता, निर्गुणा, सूक्ष्मा, बालचंद्रमाकी समान प्रभाशालिनी, तीनगुणयुक्त, कलातीता, सत्त्वादि गुणातीता, मुक्तिदात्री छिन्नमस्ता देवीका ध्यान करना चाहिये। यह केवल मात्र समाधिगम्य वस्तु हैं अर्थात् समाधिके द्वारा जानी जाती हैं, सामान्य दृष्टिसे इनको कोई नहीं पा

सकता। इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचार द्वारा पूजा करे। फिर तारा देवीकी पूजापद्धतिके क्रमानुसार अर्घ्य स्थापन करे। अनंतर पीठपूजा करनी चाहिये। पीठदेवता और पूजा प्रणाली मूलमें स्पष्ट रूपसे लिखी है। देखतेही समझमें आ जायगी। पीछे पुनर्वार ध्यान और आवाहन करके मूलके लिखे मंत्रसे प्राण-प्रतिष्ठा करे। अनंतर ॐ आं खड्गाय हृदयाय स्वाहा, ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा, ॐ ऐं पाशाय कवचाय स्वाहा, ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय स्वाहा, ॐ अः सुरक्षासुरक्षायास्त्राय फट् इस प्रकार षडङ्ग पूजा करके यथाशक्ति उपहारसे पूजा सम्पन्न करनेपर बलि देवे। बलिदानके विशेष मंत्र मूलमें लिखे हैं उन मन्त्रोंसे बलि निवेदन करनी चाहिये। फिर देवीके दक्षिणमें ॐ वर्णिन्यै नमः, वाम भागमें ॐ डाकिन्यै नमः यह पूजा करे। अनंतर देवीके अंगमें षडङ्ग पूजा करके पूर्वादि क्रमसे ॐ लक्ष्म्यै नमः इत्यादि मूललिखित देवताकी पूजा करे। फिर पांच पुष्पाञ्जलि देकर मूललिखित प्रणालीसे आवरण पूजा करनी चाहिये। अनंतर अग्नि ईशान नैर्ऋत और वायुकोणमें और चारों दिशाओंमें ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः इत्यादि प्रकारसे पुनर्वार षडङ्ग पूजा करके अष्टपत्रमें पूर्वादि क्रमसे ॐ ह्रीं काल्यै नमः इत्यादि पूजा करे फिर धूपादिसे आरंभ करके विसर्जन तक सब कर्म समाप्त करके देवीका विसर्जन करे। इस देवताके विसर्जनमें विशेषता है प्रथम संहारमुद्रा दिखाकर अपनी अञ्जलीमें आरोपणपूर्वक वाम नासापुटमें योनिमुद्रासमारूढ प्रदीपकलिकाकार और पडवाके चन्द्रकलाकी समान क्षयशील

इस प्रकार चिंता करके सूर्यमंडलमें समर्पण करे। विसर्जनका मंत्र यह है, यथा उत्तरे शिखरे देवि इस मंत्रसे देवीका विसर्जन करना चाहिये। छिन्नमस्ता सिद्धविद्या होनेके कारण एक लाख जपसे इस मंत्रका पुरश्चरण होता है इस देवताके बलिदानमें विशेषता है जैसा कि भैरवीयतंत्रमें वर्णित है। रात्रिकालमें मत्स्य मांस और सुरादि द्वारा अथवा साधक अपने विभवके अनुसार मधुरादि अनेक भांतिके उपहार द्वारा बलि देवे। ॐ सर्वसिद्धिप्रदे वर्णिनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये छिन्नमस्ते देवि एह्येहि इमं बलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं देहि देहि माये हुं हुं फट् स्वाहा। इस मंत्रसे बलि निवेदन करनी चाहिये ॥ ४ ॥

मन्त्रान्तरम् ।

भुवनेशीकामबीजं कूर्चबीजं च वाग्भवम् । भुवनेशीकूर्चबीजं वाग्भवं तदनन्तरम् ॥ वज्रवैरोचनीये च हुँ फट् स्वाहा ततः परम् । अस्य पूजाप्रयोगः ॥ न्यासपूजादिकं षोडशीवत् कार्यम् । हृल्लेखां मादनं लक्ष्मीं वाग्भवं कूर्चमेव च । अस्यान्ता छिन्नमस्ताया महाविद्या प्रकीर्तिता ॥ अस्यापि सदृशी विद्या जगत्स्वपि न विद्यते । षड्वर्णोऽयं मनुः साक्षान्मोक्षदो नात्र संशयः॥ अस्या ध्यानमहं वक्ष्ये शृणुष्व कमलानने ॥ प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्रिकां दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदां । नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां रत्यासक्तमनोभवोपरिदृढां ध्यायेज्जपासन्निभाम् ॥ दक्षे चातिसिता विमुक्त-

चिकुरा कर्त्रीं तथा खर्परं हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी। देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबंती मुदा नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरैः॥ वामे कृष्णतनूस्तथैव दधती खड्गं तथा खर्परं प्रत्यालीढपदा कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा। सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमातामसी शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी॥ इति ध्यानम्। अस्याः पूजादिकं सर्वं षोडशीवत् कार्यम्॥८॥

अब छिन्नमस्ता देवीका अन्य मन्त्र कहा जाता है। ह्रीं क्लीं हुँ ऐं ह्रीं हुँ ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ फट् स्वाहा। इस मन्त्रकी पूजाका प्रयोग अलग नहीं है। षोडशीदेवीकी लिखी पूजापद्धतिके अनुसार न्यास और पूजादि कार्य करने चाहिये। ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हुँ फट् यह भी एक अन्य मन्त्र है। इस छः अक्षरके मन्त्रकी समान दूसरा मन्त्र जगत्में नहीं है। यह छः अक्षरका मन्त्र साक्षात् मुक्तिदायक है। इसमें सन्देह नहीं। इस मंत्रोक्त पूजामें देवताका ध्यान अन्य प्रकार है। यथा देवी प्रत्यालीढपदा अर्थात् दाहिना पैर आगे और बायां पैर पीछेकी ओर रक्खा हुआ है। इन्होंने कटा हुआ शिर और खड्ग धारण किया है। देवी नग्न और अपने कटे हुए गलेसे निकलती हुई रुधिरधारा पान कर रही हैं। मस्तकमें सर्पाबद्ध मणि, तीन नेत्र और वक्षःस्थल (हृदय) कमलोंकी मालासे अलंकृत है। यह रति और कामदेवके ऊपर खडी हुई हैं। इनके शरीरकी कांति जपापुष्पकी सदृश रक्तवर्ण हैं। देवीके दक्षिण भागमें श्वेतवर्णा

बाल खोले हुए कैंची और खर्परधारिणी एक देवी है, इसका नाम वर्णिनी है। यह वर्णिनी देवीके छिन्न गलेसे गिरती हुई रक्तधारा पान करती है, इसके मस्तकपर नागाबद्ध मणि है। वामभागमें खड्ग खर्परीधारिणी कृष्णवर्ण अन्य देवी अवस्थित है, यहभी देवीके छिन्न गलेसे निकलती हुई रुधिरधारा पान करती है। इसका दाहिना पैर आगे और बायां पैर पश्चाद्भागमें अवस्थित है। यह प्रलयकालमें सब जगत्के भक्षण करनेको समर्थ है। इसका नाम डाकिनी है इस प्रकार देवीका ध्यान करके षोडशीप्रकरणोक्त पूजापद्धतिके अनुसार पूजा करनी चाहिये॥५॥

तारं लज्जाद्वयं वज्रवैरोचनीये हुँफट् स्वाहा। अस्यापि ध्यानपूजादिकं सर्वं षोडशीवत् कार्यम्। वियत्सूत्रयुतं बिन्दुनादयुक्तं ततः प्रिये। एकाक्षरी महाविद्या त्रैलोक्यवशकारिणी॥ सूत्रं दीर्घ उकारः। ठठान्तैषा महाविद्या त्रैलोक्यमोहकारिणी। ताराद्यान्ता भवत्येषा चतुर्वर्गफलप्रदा॥ वज्रवैरोचनीये च कूर्चयुग्मं सफट् ठ ठः। ताराद्येषा महाविद्या सर्वतेजोपहारिणी॥ त्रैलोक्याकर्षिणी विद्या चतुर्वर्गफलप्रदा। ध्यानपूजादिकं सर्वं षोडशीवत्समाचरेत्॥ ६॥

छिन्नमस्ता देवीका अन्य प्रकार मन्त्र यथा–ॐ ह्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ फट् स्वाहा। इस मन्त्रका ध्यान पूजादि समस्तही षोडशीकी पद्धतिके अनुसार करना चाहिये। हूँ यह एकाक्षर मन्त्र तीनों लोकको वशमें करनेवाला है और हूँ स्वाहा मन्त्रसे आराधना करने पर त्रिभुवनको मोहित किया जा सकता

है। ॐ हूँ स्वाहा इस महामन्त्रका जप करनेपर धर्मार्थकाम-मोक्षात्मक चतुर्वर्ग लाभ होता है। ॐ वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा यह मन्त्र सबका तेजोपहारक है। इस मन्त्रद्वारा देवीकी आराधना करनेपर त्रिभुवन आकृष्ट होता है और धर्म, अर्थ, काम मोक्षकी प्राप्ति होती है। इन सब मन्त्रोंका ध्यान और पूजादि षोडशीप्रकरणोक्त नियमसे करनी चाहिये ॥ ६ ॥

इदानीं षोडशीविद्याप्रशंसामाह।

तथा सर्वप्रयत्नेन सर्वोपास्या ज षोडशी। लक्ष्मी बीजादिका सैव सर्वैश्वर्यप्रदायिनी ॥ लज्जाद्या स्वर्गभू-नागयोषिदाकर्षिणी परा। कूर्चाद्या सर्वजन्तूनां महा-पातकनाशिनी ॥ वाग्भवाद्या यदा देवी वागीशत्वप्रदा-यिनां। एषा तु षोडशी विद्या वेद्या सप्तदशाक्षरी ॥ श्रीबीजपुटिता सा तु लक्ष्मीवृद्धिकरी सदा। लज्जया पुटिता विद्या त्रैलोक्याकर्षिणी परा ॥ कूर्चेन पुटिता सर्वपापिनां पापहारिणी। वाग्बीजपुटिता चैषा वागी-शत्वप्रदायिनी॥ चतुर्विधेति विद्यैषा प्रिये सप्तदशाक्षरी। ताराद्या षोडशी चान्या भवेत्सप्तदशाक्षरी ॥ एषा विद्या महाविद्या भुक्तिमुक्तिकरी सदा कमला भुवनेशानी कूर्च-बीजं सरस्वतीम् ॥ वज्रवैरोचनीये च पूर्वबीजानि चोच्च-रेत। फट्ट स्वाहा च महाविद्या वसुचन्द्राक्षरी परा ॥ ताराद्येकोनविंशार्णा ब्रह्मविद्यास्वरूपिणी। एते विद्योत्तमे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदे शुभे ॥ लक्ष्म्यादिपुटिता पूर्वा रन्ध्र-चन्द्राक्षरी भवेत् ॥ चतुर्द्धा च महाविद्या चतुर्वर्गफल-

प्रदा ॥ प्रणवाद्या यदा चैषा भोगमोक्षकरी सदा ॥७॥

अब षोडशी विद्याकी प्रशंसा कही जाती है। सब पुरुषोंकोही अति यत्नपूर्वक षोडशी देवीकी आराधना करनी चाहिये। श्रीं ह्रीं हुँ ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा। इस मंत्रसे देवीकी आराधना करनेपर देवी सब प्रकारका ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। ह्रीं श्रीं हुँ ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा यह मन्त्र सबका आकर्षण करनेवाला है। हुँ श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा यह मंत्र सब पापोंका नाश करनेवाला है। ऐं श्रीं ह्रीं हुँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा यह मन्त्र जपनेपर वाक्पतित्व लाभ होता है। इस मन्त्रको पारिभाषिक सप्तदशाक्षरी जानना चाहिये। यह चार प्रकारका षोडशाक्षर मन्त्र कहा गया। इन चारों मन्त्रोंको पुनर्वार श्रीबीज, लज्जाबीज, कूर्चबीज और वाग्बीज द्वारा पुटित करनेपर जो चार प्रकारका मन्त्र होता है, वह कहा जाता है। यथा वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा श्रीं यह मंत्र श्रीकी वृद्धि करनेवाला है। ह्रीं श्रीं हुँ ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा श्रीं यह मंत्र जपने पर तीनों लोकोंको आकर्षण किया जा सकता है। हुँ श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा हुँ इस मन्त्रसे आराधना करने पर देवी पापियोंका पाप हर लेती हैं। ऐं श्रीं ह्रीं हुँ वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं यह मंत्र वाक्पतित्व प्रदान करता है। यह चार प्रकारके मन्त्र सप्तदशाक्षर हैं। ॐ श्रीं ह्रीं हुँ ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा यह भी एक सप्तदशाक्षर मंत्र है। ॐ श्रीं ह्रीं हुँ ऐं वज्रवैरोचनीये श्रीं ह्रीं ऐं फट् स्वाहा यह मन्त्र ऊनविंशाक्षर अर्थात् उन्नीस अक्षरका है। यह मन्त्र

ब्रह्मविद्यास्वरूप है। हे देवी ! यह दोनों मन्त्र अति उत्तम भुक्तिमुक्तिदायक और मंगलमय हैं। उक्त अष्टादशाक्षर मन्त्रको लक्ष्मीबीज (श्रीं) लज्जाबीज (ह्रीं) कूर्चबीज (हुँ) वाग्बीज (ऐं) इन चारों बीजद्वारा अलग अलग पुटित करनेपर चार प्रकारके ऊनविंशाक्षरमुक्त मन्त्र हुए। यह चारों मंत्र चतुर्वर्ग फल (धर्म अर्थ काम मोक्ष) प्रदान करते हैं। उक्त मन्त्रोंकी आदिमें प्रणव (ॐ) जोड देनेपर जो मन्त्र होगा, उस मन्त्रके जपने पर भोग और मोक्ष लाभ होता है ॥ ७ ॥

विद्यान्तरं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय। हृल्लेखा कूर्चंवाग्बीजं वज्रवैरोचनीये हुं ॥ अस्त्रं स्वाहा महाविद्या चतुर्दशाक्षरी माता। सर्वैश्वर्यप्रदा चैषा सर्वमोहनकारिणी ॥ भुवनेशीत्रितत्त्वं च वाग्बीजं प्रणवं ततः। वज्रवैरोचनीये च फट् स्वाहा च तथा परा ॥ चतुर्दशाक्षरी चैषा चतुर्वर्गफलप्रदा। एषा विद्या महाविद्या जन्ममृत्युविनाशिनी ॥ तन्त्रान्तरे ॥ रमा कामस्तथा लज्जा वाग्भवं वज्रवैपदम्। रोचनीये लज्जाद्वन्द्वमस्त्रं स्वाहा समन्वितम् ॥ इयं सा षोडशी प्रोक्ता सर्वकामफलप्रदा। कथिताः सकला विद्याः सारात्सारतराः शुभाः ॥ आसां ऋषिर्भैरवोऽहं नाम्ना तु क्रोधभूपतिः। सम्राट् छन्दो देवतां च छिन्नमस्ता प्रकीर्तिता ॥ षड्दीर्घभाक्स्वरेणैव प्रणवाद्येन सुन्दरि। खड्गाद्येन ठठान्तानि षडङ्गानि प्रकल्पयेत् ॥ नारिदोषादिकं चासां ताः सुसिद्धाः सुरासुरैः। सकलेषु च वर्णेषु सकलेष्वाश्रमेषु च ॥ अन्तिमे-

षु च वर्णेषु भुक्तिमुक्तिप्रदायिका । प्रणवाद्याश्च या विद्याः शूद्रादौ न समीरिताः ॥ अस्यां चैव विशेषोऽयं योषिच्चेत्समुपासयेत् । डाकिनी सा भवत्येव डाकिनीभिः प्रजायते ॥ पतिहीना पुत्रहीना यथा स्यात्सिद्धयोगिनी । इति ते कथितं तत्त्वं रहस्यमखिलं प्रिये ॥ अतिस्नेहतरङ्गेण भक्त्या दासोऽस्मि ते प्रिये । एतासां ध्यानपूजादिकं षोडशीवत्कार्यम् ॥ नाभौ शुभ्रारविन्दं तदुपरि विमलं मण्डलं चंडरश्मेः संसारस्यैकसारां त्रिभुवनजननीं धर्मकामोदयाढ्याम् । तस्मिन्मध्ये त्रिकोणे त्रितयतनुधरां छिन्नमस्तां प्रशस्तां तां वन्दे ज्ञानरूपां निखिलभवहरां योगिनीं योगमुद्राम् ॥ ८ ॥

हे देवि ! अब इस देवताका मन्त्रान्तर (अन्य मंत्र) कहा जाता है। अब सावधान होकर सुनिये। ह्रीं हुं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा यह चौदह अक्षरका मंत्र सर्वैश्वर्यदायक और सबको मोहन करनेवाला है। ह्रीं ऐं ॐ वज्रवैरोचनीये फट् स्वाहा ह्रां यह चतुर्दशाक्षरमन्त्र धर्म अर्थ काम मोक्षका देनेवाला और जन्म मृत्युको नाश करनेवाला है । तंत्रान्तरमें लिखा है कि श्रीं ह्रीं क्लीं ऐ वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा यह सोलह अक्षरका मंत्र सब कामनाओंका फल देनेवाला है। सारात्सारतर कल्याणदायक सब विद्यायें कही गईं। इन सब मंत्रोंके क्रोधभैरव ऋषि सम्राट् छंद और छिन्नमस्ता देवता हैं। इन सब मन्त्रोंका करांगन्यास पूर्वोक्तप्रकारसे करना चाहिये । इन सब मन्त्रोंकी अरिदोषादि विचारना नहीं पडता क्योंकि यह सदाही स्वयं

सिद्ध हैं। सब वर्ण और सब आश्रमोंके मनुष्य इन मन्त्रोंका जप कर सकते हैं। केवल जिन सब मन्त्रोंकी आदिमें प्रणव (ॐ) हैं, उन्हीं सब मन्त्रोंके जपनेमें शूद्रका अधिकार नहीं है। इन सब मन्त्रोंके संबंधमें विशेषता यही है कि यदि कोई स्त्री इस मंत्रको ग्रहण करे तो वह स्त्री डाकिनीगणोंके सहित डाकिनी होती है और पतिपुत्रविहीन होकर सिद्ध योगिनीकी समान विचरण करती है। हे प्यारी! मैं तुम्हारी भक्तिसे बाध्य (लाचार) हुआ हूं इसी कारण अत्यन्त स्नेहवशतः यह सब रहस्यमय तत्त्व तुम्हारे निकट प्रकाशित किया। इन सब मन्त्रोंका ध्यान और पूजादि षोडशीप्रकारणोक्त पद्धतिके अनुसार करना चाहिये। छिन्नमस्ता प्रकरण समाप्त करके अब उसके ध्यानका प्रकार कहा जाता है। नाभिदेशमें शुभ्रावर्णका पद्म और उसपर निर्मल सूर्यमंडलकी चिंता करके तिसमें संसारकी सारभूत त्रिभुवनजननी, धर्मकाम और दयासम्पन्न प्रशस्ता ज्ञानरूपा संपूर्ण भयको हरनेवाली योगिनी छिन्नमस्ता देवीकी मैं वन्दना करता हूं। इस प्रकारसे ध्यान करना चाहिये॥ ८॥

इति छिन्नमस्ताप्रकरण समाप्त।

अथ हनुमत्कल्पः।

श्रीदेव्युवाच।

शैवानि गाणपत्यानि शाक्तानि वैष्णवानि च। साधनानि च सौराणि चान्यानि यानि तानि च॥ श्रुतानि तानि देवेश त्वद्वक्त्रान्निः सृतानि च। किञ्चिदन्यत्तु देवानां साधनं यदि कथ्यताम्॥ १॥

अब हनुमत्कल्पका वर्णन किया जाता है। देवीजीने कहा हे देवेश्वर! मैंने आपके मुखसे शिवसाधन, गणेशसाधन, शक्ति-साधन, विष्णुसाधन और सूर्यसाधन इत्यादि अनेक साधनोंकी प्रणाली (रीति) तो श्रवण करी, किन्तु अब मैं अन्यान्य देवताओंके साधन करनेकी प्रणाली सुनना चाहती हूँ, सो आप वर्णन कीजिये ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय। हनुमत्साधनं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥ एतद्गुह्यतमं लोके शीघ्रसिद्धिकरं परम्। जयो यस्य प्रसादेन लोकत्रयजितो भवेत् ॥ तत्साधनं विधिं वक्ष्ये नृणां सिद्धिकरं द्रुतम्। वियत्सनरकं हनुमते तदन्तरम् ॥ रुद्रात्मकाय कवचं फडिति द्वादशाक्षरः। एतन्मन्त्रं मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ तव स्नेहेन भक्त्या च दासोऽस्मि तव सुन्दरि। एतन्मन्त्रमर्जुनाय प्रदत्तं हरिणा पुरा ॥ जपेन साधनं कृत्वा जितं सर्वं चराचरम्। नदीकुले विष्णुगेहे निर्जने पर्वते वने ॥ एकाग्रचित्तमाधाय साधयेत्साधनं महत् ॥ २ ॥

श्रीमहादेवजीने कहा हे देवि! अब मैं इस समय हनुमत्साधन वर्णन करता हूँ, आप सावधान होकर श्रवण कीजिये। यह साधन महापुण्यका देनेवाला और महापापोंका नाशक है। इसके साधन करनेकी विधि अत्यन्त गुप्त और शीघ्र सिद्धि देनेवाली है। मनुष्य इस साधनके प्रभावसे तीनों भुवनोंको जीत सकता है

हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुँ फट् यह द्वादशाक्षर मंत्र मैंने कहा है इसको यत्नपूर्वक छिपाकर रखना चाहिये। हे सुन्दरी! मैं तुम्हारा दास हो रहा हूं अतएव तुम्हारे स्नेह और भक्तिके वशीभूत होकर यह मन्त्र कहा है। इसी मन्त्रको पूर्वकालमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजीने अर्जुनसे कहा था। अर्जुनने इस मन्त्रको सिद्ध करके सचराचर संपूर्ण जगत्को जीत लिया था। नदीके तटपर भगवान् विष्णुके मंदिरमें, निर्जन (सूने) स्थानमें अथवा पर्वतपर एकाग्रचित्त होकर इस साधनको करना चाहिये। फिर ध्यान करे ॥ २ ॥

ध्यानमाह।

महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति। तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट घोररावं समुत्सृजन् ॥ लाक्षारसारुणं रौद्रं कालान्तकयमोपमम्। ज्वलदग्निलसन्नेत्रं सूर्यकोटि-समप्रभम् ॥ अंगदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम्। एवं-रूपं हनूमन्तं ध्यात्वा यः प्रजपेत्मनुम् ॥ लक्षजपात्प्र-सन्नः स्यात्सत्यं ते कथितं मया। ध्यानैकमात्रतः पुंसां सिद्धिरेव न संशयः॥ प्रातः स्नात्वा नदीतीरे उपविश्य कुशासने। प्राणायामं षडंगं च मूलेन सकलं चरेत् ॥ पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा ध्यात्वा रामं ससीतकम्। ताम्र-पात्रे ततः पद्ममष्टपत्रं सकेशरम् ॥ रक्तचन्दनघृष्टेन लिखेत्तस्य शलाकया। कर्णिकायां लिखेन्मन्त्रं तत्रा-वाह्य कपिप्रभुम् ॥ कर्णिकायां हनूमन्तं ध्यात्वा पाद्या-दिकं ततः। गन्धपुष्पादिकं चैव निवेद्य मूलमन्त्रतः ॥

सुग्रीवं लक्ष्मणं चैव अंगदं नलनीलकम् । जाम्बुवन्तं च कुमुदं केसरिणं दले दले ॥ पूर्वादिक्रमतो देवि पूजये-द्गन्धचन्दनैः । पवनं चांजनां चैव पूजयेद्दक्षवामतः ॥ दलाग्रेषु कपिभ्योऽपि पुष्पाञ्जल्यष्टकं ततः । ध्यात्वा तु मन्त्रराजं वै लक्षं यावत्तु साधकः ॥ लक्षान्तदिवसं प्राप्य कुर्याच्च पूजनं महत् । एकाग्रचित्तमनसा तस्मिन्पवन-नन्दने ॥ दिवा रात्रौ जपं कुर्याद्यावत्संदर्शनं भवेत् । सुदृढं साधकं मत्वा निशीथे पवनात्मजः ॥ सुप्रसन्न-स्ततो भूत्वा प्रयाति साधकाग्रतः । यथेप्सितं वरं दत्त्वा साधकाय कपिप्रभुः ॥ वरं लब्ध्वासाधकेन्द्रो विहरेदा-त्मनः सुखम् । एतद्धि साधनं पुण्यं देवानामपि दुर्ल-भम् ॥ तव स्नेहान्मयाख्यातं भक्तासि मयि पार्वति ॥३॥

ध्यान यथा श्रीहनुमान्जी महापर्वत उखाडकर रावणकी ओर दौड रहे हैं और रावणसे घोर शब्द द्वारा कह रहे हैं, कि रे दुष्टात्मन् ! ठहरजा भागना मत । यह लाखके रसकी समान अरुणवर्ण, रुद्रके अंश और कालान्तकशमनसदृश हैं। इनके दोनों नेत्र अग्निके समान प्रकाशमान और देह करोड सूर्यकी समान उज्ज्वल है । रुद्ररूपी हनुमान् अंगदादि बडे बडे महावीरोंसे घिरे हुए हैं । इस प्रकार हनुमान्जीका ध्यान करके मन्त्रको जपना चाहिये । एक लाख जप पूरा होनेपर हनुमान्जी उस साधकके प्रति प्रसन्न होते हैं। हे देवी! यह मैंने आपके निकट हनुमान्जीका मंत्र कहा केवल एकवार मात्र इस देवताका ध्यान करनेपर तत्काल मंत्रकी सिद्धि होती है, इसमें संदेह नहीं ।

प्रातःसमय स्नान करके नदीके तटमें कुशासनपर बैठकर प्राणायाम और षडङ्गन्यास करे। फिर मूलमंत्रसे आठ अंजली पुष्प प्रदान करके सीतासहित श्रीरामचंद्रजीका ध्यान करके तांबेके पात्रपर हनुमान्‌जीका यंत्र अंकित करना चाहिये। प्रथम तो केशरसहित अष्टदलपद्म अंकित करे। फिर लाल चन्दनकी कलम और घिसेहुए चंदनद्वारा यह यंत्र लिखना चाहिये। पद्मकी कर्णिकामें हनुमान्‌जीका आवाहन करके पाद्यादि प्रदान करे, फिर मूलमंत्रसे गंधपुष्पादि निवेदन करके सुग्रीव, लक्ष्मण, अंगद, नल, नील, जाम्बवान्, कुमुद और केशरी पद्मके आठ दलोंमें इन आठ आवरणकी पूजा करनी चाहिये। हनुमद्देवके दक्षिण भागमें पवन और वामभागमें अञ्जनाकी पूजा करके दलाग्रमें ॐ कपिभ्यो नमः इस मंत्रसे आठ अञ्जलि पुष्प प्रदान करने चाहिये। इसके पीछे कपिराजका ध्यान करके एक लक्ष मंत्र जपना चाहिये। जिस दिन एक लक्ष जप पूरा होगा, उसी दिन महापूजा करनी चाहिये। एकाग्रचित्तसे दिन रात हनुमान्‌जीका मन्त्र जपनेपर श्रीहनुमद्देवका दर्शन मिल जाता है। हनुमान्‌जी साधकको दृढप्रतिज्ञ जानकर अर्द्धरात्रिमें प्रसन्न होकर साधकके पास आते हैं और साधकको अभिलाषित वर देते हैं। फिर साधक वर पाकर यथासुख अर्थात् अपनी इच्छानुसार स्वच्छन्द विहार कर सकता है। यह परम पवित्र साधन देवताओंको भी दुर्लभ है, हे पार्वति ! तुम मेरी भक्त हो, इस कारण तुम्हारे स्नेहके वशीभूत होकर मैंने प्रकाशित किया है ॥ ३ ॥ इति गारुडतंत्रे देवीश्वर सम्वादे हनुमत् साधन ।

वीरसाधनम् ।

हनुमतोऽतिगुह्यं तु लिख्यते वीरसाधनम् । ब्राह्मे मुहूर्तं उत्थाय कृतनित्यक्रियो द्विजः ॥ गत्वा नदीं ततः स्नात्वा तीर्थमावाह्य चाष्टधा । मूलमन्त्रं ततो जप्त्वा सिंचेदादित्यसंख्यया ॥ ततो वाससी परिधाय, गङ्गातीरे पर्वते वा उपविश्य, ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रां हृदयाय नमः इत्यादिना च कराङ्गन्यासौ कुर्यात् ॥ ततः प्राणायामः । अकारादिवर्णान् उच्चार्य वामनासापुटेन वायुं णायामः । आकारादिवर्णान् उच्चार्यवा मनासापुटेन वायुं पूरयेत् । पंचवर्गानुच्चार्य वायुं कुम्भयेत् । यकारादिवर्णान् उच्चार्य दक्षिणनासापुटेन वायुं रेचयेत् । एवं वारत्रयं कृत्वा मन्त्रवर्णैरङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत् । ध्यायेद्रणे हनूमन्तं कोटिकपिसमन्वितम् । धावन्तं रावणं जेतुं दृष्ट्वा सत्त्वरमुत्थितम् ॥ लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले । गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम् ॥ हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयन्तंजगत्त्रयम् । आब्रह्माण्डं समाव्याप्य कृत्वा भीमं कलेवरम् ॥ इति ध्यात्वा षट्सहस्रं जपेत् ॥ अस्य मन्त्रः ॥ स्वबीजं पूर्वमुचार्य पवनं च ततो वदेत् । नन्दनं च ततो देयं ङेऽवसानेऽनलप्रिया ॥ दशार्णोऽयं मनुः प्रोक्तो नराणां सुरपादपः । सप्तमदिवसे दिवसे दिवारात्रि व्याप्य जपेत् ॥ ततो महाभयं दत्त्वा त्रिभागशेषासु नियतमागच्छति । साधको यदि मायां तरति, तदेप्सितं वरं प्राप्नोति ॥ विद्या वापि धनं वापि राज्यं

वा शत्रुनिग्रहम् । तत्क्षणादेव चाप्नोति सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ॥ ४ ॥

अब हनुमद्देवका अत्यन्त गुह्य वीरसाधन कहा जाता है । साधक ब्रह्ममुहूर्तमें शय्यासे उठकर सन्ध्यावन्दनादि नित्यक्रिया समापन करे और फिर नदीके तटपर जाकर स्नान करके तीर्थावाहनपूर्वक आठ बार मूलमन्त्रका जप करे । फिर उस जलके द्वारा बारह बार अपने मस्तकपर अभिषेक करके दो वस्त्र पहरे और गंगातट अथवा पर्वतमें बैठकर ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि प्रकारके कराङ्गन्यास करे पीछे प्राणायाम करना चाहिये। अकारादि सोलह स्वर वर्ण उच्चारण करके वाम नासापुटसे वायुपूरण और ककारादिसे लेकर मकारपर्यंत पच्चीस वर्ण उच्चारण करके दोनों नासापुटसे कुंभक और यकारादिवर्ण उच्चारण करके दक्षिण नासिकासे वायुरेचन करे। इसी प्रकार दक्षिण नासिकासे पूरण दोनों नासापुट पकडकर कुंभक और वामनासापुटसे रेचन करे। पुनर्वार वामनासासे पूरण, दोनों नासापुट पकडकर कुंभक और दक्षिण नासिकासे रेचन करे। इसी भांति तीन बार प्राणायाम करके मन्त्रवर्णसे अंगन्यास करता हुआ ध्यान करे। हनुमान् रणभूमिमें करोड करोड वानरोंसे घिरे हुए हैं । यह रावणका परास्त करनेके लिये दौड रहे हैं, इनको देखकर रावण शीघ्रतासे खडा होगया। महावीर लक्ष्मणजी रणभूमिमें पडे हुए हैं उनको देखकर यह क्रोधपूर्वक महापर्वत उखाड सदर्प हाहाकार ध्वनिसे त्रिभुवन कम्पायमान कर रहे हैं, यह ब्रह्माण्डव्यापी भयंकर शरीर प्रकाश करके स्थित हैं। इस प्रकार ध्यान करके

छः हजार मन्त्र जपना चाहिये। हं पवननन्दनाय स्वाहा। यह दशाक्षर मन्त्र मनुष्यके पक्षमें कल्पवृक्षस्वरूप है। छः दिन इस भांति जप करके सातवें दिन रात दिन जप करता रहे। इस प्रकार जप करनेपर रात्रिके चौथे याममें महाभय दिखाते हुए हनुमद्देव निःसंदेह साधकके समीप आते हैं। यदि साधक मायाको त्याग सके तो अभिलाषित वर लाभ कर सकता है। साधक विद्या, धन, राज्य अथवा शत्रुनाश जिस किसी बातकी अभिलाषा करे, तत्काल वही वर पाता है ॥ ४ ॥

इति हनुमत्कल्प समाप्त।

अथ पारिभाषिकीषोडशीमाह।

ज्ञानार्णवे। चंद्रान्तं वारुणान्तं च शक्रादिसहितं पृथक्। वामाक्षि बिन्दुनादाढ्यं विश्वमातृकलात्मकम् ॥ विद्यादौ योजयेद्देवि साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपिणी। त्रिकूटाः सकला भेदाः पञ्चकूटा भवन्ति हि ॥ वैष्णवी वसुकूटा स्यात्षट्कूटा शाङ्करी भवेत् ॥ अस्यार्थः चन्द्रातं हकारः वारुणान्तं शकारः शक्रादी रेफः वामाक्षि ईकारः विद्यादौ पूर्वोक्तद्वादशविद्यादौ ॥ वेदादिमण्डितादेवी शिवशक्तिमया सदा। तस्या भेदास्तु सकलाः षट्कूटो परमेश्वरि। वैष्णवी नवकूटा स्यात्सप्तकूटा तु शाङ्करी ॥ अस्यार्थः। आद्या बीजद्वयं माया पूर्वोक्तबीजद्वयवती वेदादिः प्रणवः मण्डिता आदौ भूषिता ॥ १ ॥

अब परिभाषिक षोडशीका मन्त्र कहा जाता है। इससे

पहले जो बारह प्रकारके मन्त्र कहे गये हैं उनके प्रत्येक मन्त्रके आदिमें ह्रीं श्रीं यह दो बीज मिलाने पर जो मंत्र होता है उसी मन्त्रको पारिभाषिक षोडशी मन्त्र कहा जाता है। यह सब मन्त्र साक्षात् ब्रह्मस्वरूप हैं। यह मन्त्र त्रिकूट पञ्च-कूट और षट्कूट इत्यादि नाना प्रकारके होते हैं। पूर्वोक्त सब मंत्रोंकी आदिमें ॐ ह्रीं श्रीं यह दो बीज जोड देनेपर भी षोडशी मन्त्र होता है यह सब मन्त्र शिवशक्तिमय हैं ॥ १ ॥

अथ महाषोडशी।

आद्यबीजद्वयं भद्रे विपरीतक्रमेण हि। विलिख्य परमेशानि ततोऽन्यानि समुद्धरेत् ॥ अन्तर्मुखी वरारोहे कुमारीत्रिपुरेश्वरी। एभिस्तु पञ्चसंख्याकैर्बीजैः संपुटितां यजेत् ॥ षट्कूटां परमेशानि विद्येयं षोडशाक्षरी। त्रिकूटाः सकला भद्रे षोडशार्णो भवन्ति हि ॥ वैष्णव्येकानविंशार्णा शैवी सप्तदशाक्षरी ॥ अस्यार्थः। आद्यबीजद्वयं मायारमात्मकं तस्य विपरीतक्रमः आदौ रमा पश्चान्माया अन्तर्मध्ये स्थितं कामबीजं मुखे आदौ यस्याः कुमार्या एतैः पञ्च संख्याकैर्बीजैः षट्कूटां सप्तकूटां नवकूटां वा सम्पुटितां सम्पुटवत्कृतां तेनानुलोमविलोमतः सम्पुटितामित्यर्थः। केचित्तु अनुलोमतः एव सम्पुटितामाहुः। तन्न सर्वतन्त्रविरोधात्। तथा च योगिनीतन्त्रे ॥ श्रीबीजमायास्वरयोनिशक्तिस्तारं च मायाकमलाथ विद्या। शक्त्यादिबीजैश्च विलोमतोक्त्या श्रीषोडशीयं च शिवप्रदिष्टा ॥ तथा च रुद्रयामले॥

श्रीर्माया मदतो वाणी परा तारं शिवप्रिया । हरिप्रिया त्रिकूटा सा परा वाणी मनोभवा ॥ माया लक्ष्मीर्महाविद्या श्रीविद्या षोडशी परा ॥ दक्षिणामूर्त्तौ च ॥ द्वितीयम्यादियुग्मं च विपरीतं लिखेत्सुधीः । बालां चान्तर्मुखीं कृत्वा विलिखेत्तदनन्तरम् ॥ तारं मायां ततो लक्ष्मीं तथा कूटत्रयं लिखेत् । कलया सम्पुटां कुर्याद्रमाख्यां परमेश्वरीम् ॥ कलया पूर्वोक्तसत्यादिपंचकलया रमाख्यां पूर्वोक्तप्रणवादिषट्कूटाम । उमाख्यामिति पाठेऽप्ययमेवार्थः । केचित्तु कलयास्थाने बालया पाठं कुर्वन्तस्तत्र परमेश्वरीमिति च बालया अन्तर्मुख्या सम्पुटां वदन्ति । रमाख्यां श्रीं परमेश्वरीं ह्रीमिति च । तेनोत्तरदले क्लीं ऐं सौं श्रीं ह्रींमिति वदन्ति तन्न सम्पुटशब्दार्थापरिज्ञानात् ॥ नवरत्नेश्वरे ॥ मन्त्रमादौ वदेत्सर्वं साध्यसंज्ञामनन्तरम् । विपरीतं पुनश्चान्ते मन्त्रं तत्सम्पुटं स्मृतम् ॥ इति सम्पुटलक्षणात् अनन्वयापत्तेः सर्वतन्त्रविरोधाच्च । तथा च श्रीक्रमसंहितायाम् ॥ श्रीर्माया मदना वाणी परेतानि मुखे कुरु । वेदादिर्भुवनेशानीं श्रीबीजं च त्रिकूटकम् ॥ षट्कूटां संपुटीकुर्यादाद्यैः पंचभिरक्षरैः । मायातन्त्रे च ॥ लक्ष्मीः परा मदनयोनियुता च शक्तिस्तारं परा च कमलाप्यथ मूलविद्या । शक्त्यादिभिश्च विपरीततया प्रदिष्टं श्रीमन्त्रराजमुदितं परदेवतायाः ॥ एतेनानुलोमतः पंचबीजैः सम्पुटितमिति मतं हेयम् । श्रुतौ तु ॥ रमा माया मारः परा लक्ष्मीः कुमारिका । विद्या व्यस्ता

बाला श्रीपरा तथा ॥ व्यस्ता विपरीता तथेति व्यस्तेत्यर्थः । कुमारी चान्तुर्मखी बोध्या अत्र कुमारिकान्तरं तारादिबीजसंबन्धः तत्रैकवाक्यताबलात् । त्रैपुरीश्रुतिबलाच्च तथा च। श्रीमाये मध्यादिबालिका ॥तारो माया श्रीर्विद्या परादि पञ्चबीजान्यन्ते चेति ॥ श्रीपरा चेति पाठेन केवलं बाला व्यस्ता श्रीपरा चेति । विद्यायां षोडशबीजानांस्वरूपकथनं वा क्रमोक्तत्वाभावात्। एतेन श्रीमाया तारं माया श्रीबाला त्रिकूटं व्यस्था बाला रमा मायेति मतं च हेयम् ॥ कुलामृते॥ श्रीबीजं शक्तिबीजं च कामबीजं च वाग्भवम्।बालान्तसंस्थितं बीजं प्रणवं च ततः परम् ॥शक्तिबीजंरमां चैव विद्यां च परमेश्वरि । लोपां वा कामराजं वा त्रिकूटामथवा पराम् ॥ विन्यस्य पुनराद्यानि पञ्च बीजानि सुन्दरि । विपरीतक्रमेणैव विन्यस्य षोडशी परा । यामले च । लक्ष्मीः परा मदनवाग्भवशक्तिबीजं तारं च भूति कमले पथि मूलविद्या । कूटत्रयं च विपरीततया नियुक्तं श्रीषोडशाक्षरमिहागमप्रसिद्धम् ॥ कूटत्रयं कामादिबालायाः । चकारां रमां मायां च ॥ निबन्धे । शान्तान्तं शिवपूर्वसप्तमयुतं सूक्ष्मान्तमस्तान्वितं देवीं दक्षिणबाहुशक्रनयनं कामं कलालाञ्छितम् । दन्तान्तोर्ध्वमुखं सशेषदशनं जीवं मुखेनान्वितं बीजं पञ्चकमित्थमेव मुदितं सर्वार्थसिद्धिप्रदम् ॥ वेदाद्यं त्रिगुणां रमामथ वदेत्कामेन संसेवितां लोपां वा पुनरेव पञ्चकमथो पूर्वं विलोमक्रमैः एषा श्री

परमा परात्परतमा सर्वार्थसिद्धिप्रदा सारात्सारतमा समस्तजगतामुत्पत्तिभूता परा ॥ सेयं श्रीब्रह्मरूपा सकलगुणमयी निर्गुणा निष्प्रपञ्चा । साक्षात्कामदुघा-सुरासुरगणैर्वन्दितानन्दरूपा ॥ अस्यार्थः । श एव अन्तो यस्य तेन शान्ताः यकारः स एवान्तो यस्य तेन यन्ता-न्तः शकारः शिवो हकारः तत्पूर्वं सप्तमरेफः सूक्ष्मान्त मीकारः मस्तकमनुस्वारः । तेन रमाबीजं देवीं मायां दक्षिणबाहुः ककारः शक्रो लकारः नयनं मेलिनं कामं बिन्दुः कामकला ईकारः तेन कामबीजम् । दन्तान्त ऐकारः उर्द्धमुखं मुखस्योर्द्धं बिन्दुःजीवः सकारः शेष-दशनमौकारः मुखं विसर्गः तेन परा बीजम् । वेदाद्यं प्रण-वः त्रिगुणा माया ॥ भेदान्तरमाह कुब्जिकातन्त्रे । परा च कमला कामो वाग्भवं शक्तिमेव च । तारं शक्ति च कमला त्रिकूटां योजयेत्ततः ॥ सत्याद्यं व्युत्क्रमान्नयस्ये-त्स्यान्महा षोडशी परा । इमां विद्यां महादेवि योगी भूपोऽथवा जपत् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदा विद्या अन्ते कैवल्य दायिनी ॥ पराद्या भुवनेशानि ज्ञेया भुवनसुन्दरी ॥ कम-लाद्या महाविद्या ज्ञेया कमलसुन्दरी । कामाद्या च महा-विद्या विज्ञेया कामसुन्दरी ॥ वाग्भवाद्या महाविद्या परा-वाक्यसुन्दरी मता । शक्त्याद्या च महाविद्या विज्ञेया शक्तिसुन्दरी ॥ आनन्दसुन्दरीविद्या प्रथमा गुप्तरूपिणी । कामबीजेन देवेशि लोपया च विशेषतः ॥ स्यान्महाषो-डशीमन्त्रश्चतुराद्या विपर्ययात् । योगिनीतन्त्रे । श्रीबीजं

शक्तिबीजं च कामबीजं च वाग्भवम् । बालांतसंस्थितं बीजं प्रणवं च ततः परम् ॥ शक्तिबीजं रमां चैव विन्यसेत्परमेश्वरि । लोपां वा कामराजां वा भैरवीमथ वा पराम् ॥ विन्यस्य पुनराद्यानि बीजानि पञ्च सुन्दरि । व्युत्क्रमेण समेतानि षोडशी भुवि दुर्लभा ॥ तुरीयायामनुं लक्षं जप्त्वा सिद्धीश्वरो भवेत् ॥ व्युत्क्रमेण पञ्चबीजानि विन्यस्य इत्यन्वयः । ज्ञानार्णवे ॥ वक्त्रकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि । वर्णितुं नैव शक्येयं श्रीविद्या षोड़शाक्षरी ॥ वैखरीवाच्यभावत्वादशक्ता गुणवर्णने । यतो निरक्षरं वस्तु परा तत्रैव कारणम् ॥ मूकीभूता हि पश्यन्ति मध्यमा मध्यमा भवेत् । ब्रह्मविद्यास्वरूपा हि भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥ एकोच्चारेण देवेशि वाजपेयस्य कोटयः । अश्वमेधसहस्राणि प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा ॥ काश्यादितीर्थयात्राः स्युः सार्द्धकोटित्रयान्विताः । तुल्यं न यान्ति देवेशि नात्र कार्या विचारणा ॥ एकोच्चारेण गिरिजे किं पुनर्ब्रह्मकेवलम् ॥ षोडशार्णा महाविद्या न प्रकाश्या कदाचन । गोपनीया त्वया भद्रे स्वयोनिरिव पार्वति ॥ २ ॥

अब महाषोडशीका मंत्र कहा जाता है । दोनों आद्य बीज अर्थात् ह्रींश्रीं इन दोनों बीजोंको विपरीत भावसे अर्थात् श्रीं ह्रीं इस प्रकार लिखकर इसके पीछे बालाबीज अर्थात् ऐं क्लीं सौः इस मन्त्रका मध्यबीज अर्थात् क्लीं यह बीज आदिमें लिखने पर जो ह्रीं ऐं सौः यह मन्त्र होगा, उसको जोड देवे।

ऐसा करनेपर श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः यह पांच बीज हुए । इन पांच बीजोंके द्वारा अनुलोम विलोमके क्रमानुसार षट्कूट मन्त्र पुटित करने पर जो षोडशाक्षर मन्त्र होगा, उसीको षोडशी देवीका मूलमन्त्र जानना चाहिये । उक्त पांच बीजोंके द्वारा सप्तकूट मन्त्रको पुटित करनेपर सप्तदशाक्षर और नवकूट मन्त्रको उक्त पांच बीजद्वारा पुटित करनेपर ऊनविंशाक्षर मन्त्र होगा; ऐसा करनेपर षट्कूट षोडशाक्षर वैष्णवीमन्त्र ऊनविंशाक्षर और शैवीमन्त्र सप्तदशाक्षर होता है । कोई २ कहते हैं अनुलोमसेही पुटितत करे, विलोमसे पुटित न करे किन्तु यह अर्थ सर्ववादी सम्म्त नहीं है । क्यों कि ऐसा होनेपर सब तन्त्रोंके सहित विरोध हुआ जाता है । इस मन्त्रोद्धारके जो सब प्रमाण रुद्रयामलमें लिखे हैं, वे सब प्रमाण यहां मूलमें उद्धृत हुए हैं। दक्षिणामूर्ति संहितामें भी इन सब मन्त्रोद्धारकी रीति लिखी है । कोई कोई 'कलया सम्पुटं कुर्यात्' इत्यादि दक्षिणामूर्ति संहिता के वचनानुसार 'कलया' स्थानमें 'बालया' इस प्रकार पाठ करके मध्यमादि बालाबीज अर्थात् क्लीं ऐं सौः इस मन्त्रसे पुटित करना चाहिये ऐसा अर्थ करते हैं । किन्तु यह यथार्थ व्याख्या नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेपर सम्पुट शब्दका अर्थ संगत नहीं होता । नवरत्नेश्वरग्रन्थमें जो सम्पुटका लक्षण लिखा है, उसकी अनन्वयापत्ति होती है और सब तन्त्रोंके साथ विरोध उपस्थित होता है । महाषोडशीके मन्त्रोद्धार विषयमें जो सब वचन श्रीक्रमसंहितामें लिखे हैं उनको भी ग्रन्थकारने यहां उद्धृत किया है । मायातन्त्रकथित वचनसे

स्पष्टही प्रतीति होती है कि विपरीत भावसे पुटित करे अत एव जो लोग कहते हैं कि पंचबीज द्वारा अनुलोमसे पुटित करे उनका मत निंदित है अर्थात् मानने योग्य नहीं है। इस विद्याके विषयमें श्रुतिकथित प्रमाण भी यहां ग्रन्थकारने उद्धृत किया है और कुलामृत यामल तथा निबन्ध इत्यादि ग्रन्थोंके वचनोंकी एकता देखकर ग्रन्थकारने वे सब वचन प्रमाणस्वरूपसे अपने ग्रन्थमें सन्निवेशित किये हैं। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं यह षोडशाक्षर मन्त्र उद्धृत हुआ। वचनानुसार मन्त्रोद्धार करनेपर मंत्रकी वर्णसंख्या सोलहसे अधिक हुई किन्तु इसी मन्त्रको तन्त्रके जाननेवाले पंडित षोडशाक्षर मन्त्र कहते हैं। रमादि पंचबीजद्वार षट्कूट मन्त्रको पुटित करके मन्त्रोद्धार किया गया है। षट्कूटशब्दका अर्थ ॐ ह्रीं श्रीं यह त्रिकूट और पूर्वोक्त क ए ई ल ह्रीं इत्यादि त्रिकूट। इस षट्कूटको षडक्षर जानकर षोडशाक्षर कहे गये हैं। इस मंत्रसे महाषोडशी देवीकी पूजादि करे। योगी अथवा राजा इस षोडशाक्षरी विद्याका जप करें यह विद्या भुक्ति मुक्तिकी देनेवाली और अन्तकालमें कैवल्यदायिनी है। योगिनीतन्त्रमें भी इस षोडशाक्षरमन्त्रके उद्धारका प्रमाण लिखा है। वे सब वचन मूलमें उद्धृत हुए हैं। ज्ञानार्णवमें लिखा है। सहस्र कोटि वक्र और सौ करोड जिह्वा द्वाराभी षोडशाक्षर श्रीविद्याके माहात्म्य का वर्णन नहीं किया जा सकता। यह मन्त्र एक वार उच्चारण करनेपर करोड वाजपेय और हजार अश्वमेध यज्ञका फल मिल-

जाता है सारी पृथ्वीकी प्रदक्षिणा और काशी इत्यादि साडे तीन करोड तीर्थोंकी यात्रा भी उस षोडशाक्षर मन्त्रके उच्चारण की तुल्य नहीं होती। हे पार्वती! इस षोडशाक्षरी विद्याको प्रकाशित नहीं करना चाहिये अपनी योनिकी समान सदा गुप्त रखना उचित है ॥ २ ॥

बीजावलीषोडशीमाह

रुद्रयामले ॥ श्रीबीजमाये संलिख्य तथैव च कुमारिकाम्। श्रीबीजमाये कामं च वाङ्मायाकमलां तथा ॥ परा कामं च वाग्बीजं मायां श्रीबीजमेव च। बीजावली षोडेशीयं सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥ राज्यं देयं शिरो देयं न देया बीजषोडशी ॥ ब्रह्मयामले ॥ आदौ लक्ष्मीं परां चैव तथैव च कुमारिकाम्। श्रीबीजं च पराबीजं कामं वाग्भवमेव च ॥ पराश्रीबालिकाश्चैव लिखेद्व्युत्क्रमयोगतः। अन्ते दद्यात्परां श्रीं च सम्पूर्णा कथिता त्वयि ॥ बाला प्रधाना विद्या च सर्वशास्त्रे च गोपिता ॥ ३ ॥

अब बीजावली षोडशी कही जाती है। श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं। यह बीजावली षोडशी सब तन्त्रोंमें अत्यन्त गोपनीय है, चाहे राज्य और मस्तक भलेही दे दिया जाय, किन्तु तथापि यह बीजावली षोडशी प्रदान न करे। ब्रह्मयामलमें लिखा है, कि। श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं। यह संपूर्ण षोडशी मन्त्र है। यह बाला प्रधाना विद्या सब शास्त्रोंमें गुप्त है ॥ ३ ॥

तन्त्रान्तरे मतान्तरमाह।

आद्या कुण्डलिनी शक्तिः शक्तिराद्या ततः परा। निवेशयेत्तयोर्मध्ये देवीं गोविन्दवल्लभाम् ॥ ततस्तु मन्मथं बीजं श्रीबीजं तु ततः परम्। हृल्लेखारमयोर्वक्रे वेदवक्रं विनिक्षपेत् ॥ ततो लोपां न्यसेद्देवि त्रिकूटमथवा पराम्। आद्यानि पञ्च बीजानि पश्चाद्विन्यस्य सुन्दरि ॥ षोडशीयं सुगोप्या हि स्नेहाद्देवि प्रकाशिता। अस्या माहात्म्यमतुलं जिह्वाकोटिशतैरपि ॥ वक्तुं न शक्यते देवि किं पुनः पञ्चभिर्मुखैः। अपि प्रियतरं देयं सुतदारधनादिकम् ॥ राज्यं देयं शिरो देयं न देया षोडशाक्षरी ॥ प्रकारान्तरेण षोडशीमाह सिद्धयामले ॥ कामो माया रमा बाला त्रिकूटा स्त्रीभगाङ्कुशौ। काली कामकलाकूर्चं सर्वादौ प्रणवः प्रिये ॥ श्रीमहाषोडशीयं च या ख्याता भुवनत्रये ॥ ज्ञानेन मृत्युहा विद्या सर्वान्मायैर्नमस्कृता ॥ सप्तलक्षा महाविद्या तन्त्रादौ कथिता प्रिये। सारात्सारतरा भूता या या विद्याः सुगोपिताः॥ बहुना किमिहोक्तेन तासां सारातिषोडशी। प्रकाशिता महाविद्या या पृष्टा ते पुनः पुनः ॥ ४ ॥

अन्यान्य तन्त्रोंमें षोडशीके जो अन्यान्य मंत्र लिखे हैं, वे कहे जाते हैं। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं। मैंने यह अत्यन्त गोपनीय षोडशीका मन्त्र तुम्हारे स्नेहसे प्रकाशित किया है। इसके अतुल माहात्म्यको सौ करोड जीभ द्वारा भी वर्णन

करनेमें समर्थ नहीं हैं फिर मैं पञ्चमुखसे इसका माहात्म्य क्या वर्णन करूं। प्रियतम पदार्थ, पुत्र, स्त्री, धन, राज्य और मस्तक दिया जा सकता है, किन्तु तथापि षोडशी मंत्र प्रदान करना उचित नहीं है। सिद्धयामलमें लिखा है कि ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं। क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्रीं ए अ क्रीं क्लीं हूं। यह महा षोडशीका मन्त्र त्रिभुवनमें विख्यात है। इस मन्त्रके जान लेने पर मृत्युको जीत सकता है। जो जो विद्या अत्यन्त गुप्त हैं उनमें यह षोडशी विद्या सारका भी सार है। हे महादेवि ! आपने जिन सब विद्याओंके विषयमें पूछा था, वह मैंने आपसे प्रकाशित किया ॥ ४ ॥

रुद्रयामले। लोपामुद्रा वाग्भवे तु पृथ्व्यन्ते शिवयोजनात्। सकारं कामराजादौ लोपा तु षोडशाक्षरी ॥ अनया सदृशी विद्या न विद्यार्णवगोचरे ॥ तत्रैव॥ विद्याराज्ञी वाग्भवा तु कान्तेऽनन्तनियोजनात्। षोडशार्णा महाविद्या चिद्ब्रह्मैक्यमयी शुभा ॥ लोपावाग्भवशक्रान्ते शिवबीजं नियोजयेत्। तथैव शक्तिबीजे तु लोपा सप्तदशाक्षरी ॥ लोपायाः शक्तिकूटान्ते हंसबीजयुता यदि ॥ तदा सप्तदशी विद्या साक्षाज्ज्ञानस्वरूपिणी ॥ अस्याः स्मरणमात्रेण शिवो भवति नान्यथा। अणिमाद्यष्टसिद्धीशः साक्षाद्भूमिपुरन्दरः ॥ तत्रैवाष्टादशाक्षरीलोपामुद्रामधिकृत्य। अधरं बिन्दुना युक्तं वाग्भवाद्ये नियोजयेत्। मादनं कामरारजाद्ये तार्त्तीयाद्ये महेश्वरि ॥ भृगुः सर्गान्वितो देवि मनुना च समन्विता। अष्टादशाक्षरी

ह्येषा श्रीविद्या भुवि दुर्लभा ॥ श्रीगुरोः कृपया देवि नित्यसिद्धिप्रदायिनी । नवलक्षं जपित्वा तु लोपामुद्रां महेश्वरीम् ॥ अष्टादशाक्षरी विद्या पश्चाद्राध्या वरानने। अन्यथा शापमाप्नोति कुलं तस्य विनश्यति ॥ सर्वकल्याणदा विद्या सर्वविघ्नविनाशिनी। सर्वसौभाग्यदा देवि सर्वमङ्गलकारिणी ॥ अनया सदृशी विद्या त्रैलोक्ये चातिदुर्लभा ॥ तत्रैव॥ कामराजाख्यविद्याया वाग्भवादौ तु वाग्भवम् । भुवनेशीं कामराजे श्रीबीजं शक्तिपूर्वतः ॥ एषाप्यष्टादशी प्रोक्ता सर्वसिद्धिप्रदायिका । भोगमोक्ष प्रदा साक्षात्पुरुषार्थप्रदायिका ॥ अनया सदृशी विद्या त्रैलोक्ये चातिदुर्लभा ॥ नास्ति नास्ति पुनर्नास्ति सत्यं सत्यं वदामि ते ॥ ९ ॥

रुद्रयामलमें लिखा है कि, ह स क ल ह ह्रीं स ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं इस षोडशाक्षरकी समान मन्त्र मेरे ध्यानमें दूसरा नहीं है। ह स क ल ह ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह ह्रीं एवं ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं हं सः यह दो प्रकारके सप्तदशाक्षर मन्त्र साक्षात् ज्ञानस्वरूप हैं। इस मन्त्रके केवल स्मरण करते ही साधक शिवके समान हो जाता है। और उसको अणिमादिक आठ सिद्धियां मिल जाती हैं। ऐं ह स क ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं यह अष्टादशाक्षरी विद्या त्रिभुवनमें दुर्लभ है। प्रथम लोपा मन्त्र नौ लाख जपकर फिर यह अष्टादशाक्षर मन्त्र जपे, इसके विपरीत कार्य करनेसे देवी शाप देती हैं और साधकके कुलका नाश हो जाता है।

यह विद्या सब किसीको कल्याणकी देनेवाली सब विघ्नोंका नाश करनेवाली सबको सौभाग्यकी देनेवाली और सर्व मंगलकारिणी है। इसके समान विद्या त्रिभुवनमें अत्यन्त दुर्लभ है। रुद्रयामलमें और भी लिखा है कि ऐं क ए इ ल ह्रीं, ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं, श्रीं स क ल ह्रीं। यह अष्टादशाक्षरी विद्या सब सिद्धियोंकी देनेवाली है और इस विद्याकी आराधना करनेपर इस कालमें भोग और परकालमें मुक्ति मिलती है। इस विद्याके समान विद्या त्रिभुवनमें दूसरी नहीं है। यह मैंने आपसे सत्यही कहा है॥५॥

तत्रैव मन्त्रान्तरमाह ।

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य ततो वै कुलसुन्दरीम्। कामाक्षरं शक्तिवर्णं पुरन्दरहरौ ततः ॥ भुवनेशीं समुद्धृत्य विलोमां बालिकां ततः ॥ प्रणवं सविसर्गं तु ततो वै कुलसुन्दरीम्॥ लोपावाग्भवमुद्धृत्य विलोमां बालिकां ततः। प्रणवं सविसर्गं तु ततो वै कुल सुन्दरीम् ॥ शक्तिकूटमध्यभागे हकारे योजयेच्छिवे। विलोमां बालिकां तत्र ब्रह्माणः सविसर्गकः ॥ इति श्रीपरमा विद्या केवला मोक्षदायिनी। अस्या लक्षजपेनैव किं न सिध्यति साधकः ॥ अस्याः स्मरणमात्रेण शिवो भवति नान्यथा। कुल सुन्दरी बाला ब्रह्माणी प्रणवः ॥ योगिनीजालन्धरे। कामराजविद्यामधिकृत्य। वाङ्मारशक्तिबीजाद्य त्रिकूटाक्रमयोगतः ॥ त्रिपुरा मालिनी नाम्ना भवेदष्टादशाक्षरी ॥ वर्णसंख्यात्मजाप्येन पुरश्चरणमिष्यते ॥ श्रीक्रमे ॥ तां विद्यां शृणु देवेशि कामर्मिन्द्रसमन्वितम्।

नान्दबिन्दुकलाभेदात्तुरीयस्वरसंयुतम् । महाश्रीसुन्दरी विद्या महात्रिपुरसुन्दरी । ककारे सर्वमुत्पन्नं कामकैवल्यदायकम् ॥ लकारे सकलैश्वर्यमिकारे सर्वसिद्धिदम् । एवं बीजत्रयं भद्रे विद्यानां सारसंग्रहम् ॥ वाग्भवं कामबीजं च शक्ति तेन नियोजयेत् । एकाक्षरेण कथिता ब्रह्मविद्यैव केवला ॥ ६ ॥

रुद्रयामलमें अन्य मंत्र लिखा है । यथा ॐ ऐं क्लीं सौः क ए ल ह ह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ ऐं क्लीं सौः स ह क ल ह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ ऐं क्लीं सौः स क ह ल ह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ यह परम विद्या मोक्षकी देनेवाली है । यह मंत्र एक लाख जपनेपर साधकके सब कार्योंकी सिद्धि होती है । इस मंत्रके केवल मात्र स्मरण करतेही साधक शिवके समान हो जाता है । योगिनीजालंधरमें लिखा है कि कामराजमंत्रका वाग्भवकूट, कामराजकूट, और शक्तिकूट इन तीनों कूटकी आदिमें ऐं क्लीं सौः यह तीन बीज जोडनेपर जो अष्टादशाक्षर अर्थात् ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं यह मन्त्र होगा, इसका नाम त्रिपुरमालिनी मन्त्र है। यह मन्त्र सब मन्त्रोंमें प्रधान है। यह मन्त्र अठारह हजार जप करनेपर पुरश्चरण होता है। श्रीक्रममें लिखा है कि क्लीं इस एकाक्षर मन्त्रके सहित वाग्भवकूट कामराजकूट और शक्तिकूट जोडने पर जो मन्त्र होगा वह ब्रह्मविद्या स्वरूप है ॥ ६ ॥

कामराजलोपामुद्रायोर्भेदमाह कुलोड्डीशे। श्रीपरावाग्भवाख्यैश्च ईश्वरीतारमन्मथैः ॥ आद्यभूतैर्विद्यमाना

सुन्दरी षड्विधा भवेत् ॥ तथा अनयोराद्ये कामो माया श्रीबीजं माया श्रीकामबीजं श्रीमाया कामबीजं तथा त्रिविधा चाष्टादशाक्षरी । तथा च कुलोड्डीशे । काममायारमापूर्वं मायालक्ष्मीः स्मरस्तथा ॥ रमा माया तथा कामो वसुचन्द्राक्षरी त्रिधा ॥ स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमाद्येतरतनोरिति भगवदाचार्येण प्रतिपादितम् ॥ शक्तिकामराजस्तु श्रीक्रमे । मायाबीजं ततो झिन्टी कामशक्रं वियत्क्रमात् । जातवेदो मृगांकेण लाञ्छितं परमेश्वरी ॥ एतद्वाग्भवकूटं च पूर्ववत्कामराजकम् । तथैव शक्तिबीजं तु सुन्दर्येषा प्रकीर्त्तिता ॥ अत्रापि पूर्ववद्बीजसंयोगः ॥ माया ईकारः झिन्टी एकारः ॥ पुनः शक्तिमाह । एतद्भगं ततो माया ब्रह्मा शक्रहरोऽग्निना । वामनेत्रेण संयुतो नादबिंदुविभूषितः ॥ एतद्वाग्भवमुद्दिष्टं पूर्ववत्कामशक्तिकम् ॥ भग एकारः । अत्रापि पूर्ववद्बीजसंयोगः । विशेषः । ब्रह्मबीजं यदा दद्यात्त्रिकुटेषु वरानने । प्रथमा सुन्दरी देवा द्वितीया ब्रह्मसुन्दरी ॥ शक्तिकूटे महेशानि अनन्तसुन्दरी मता । एषा तु षोडशी विद्या मता भेदेन दर्शिता ॥ ७ ॥

कामराजमन्त्र और लोपामुद्रा मन्त्रका जो भेद कुलोड्डीशमें लिखा है । वह कहा जाता है । श्रीं सौः ऐं ह्रीं ॐ और क्लीं यह दो बीज पूर्वोक्त मन्त्रकी आदिमें जोडनेपर छः प्रकारका सुन्दरी मन्त्र होगा । कुलोड्डीशमें लिखा है कि कामराजमंत्र और लोपामुद्रामंत्रकी आदिमें क्रमशः क्लीं ह्रीं श्रीं यह तीन

बीज, ह्रीं श्रीं क्लीं यह तीन बीज और श्रीं ह्रीं क्लीं यह तीन बीज जोडनेपर तीन प्रकारका अष्टादशाक्षर मंत्र होता है। अर्थात् क्लीं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं और ह्रीं श्रीं क्लीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं और श्रीं ह्रीं क्लीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं यह तीन प्रकारका अष्टादशाक्षर मन्त्र उद्धृत हुआ। श्रीक्रममें जो शक्ति कामराज मंत्र लिखा है, वह यही है ई ए क ल ह्रीं इसका नाम वाग्भवकूट है। इसके पीछे पूर्ववत् कामराजकूट और शक्तिकूट जोडनेपर सुन्दरीमन्त्र होगा। अब फिर शक्तिमन्त्र कहा जाता है ए ई क ल ह्रीं इसका नाम वाग्भवकूट है, इस वाग्भवकूटके पीछे पूर्ववत् कामराजकूट और शक्तिकूट जोडनेपर अन्य मन्त्र होगा। इसकी विशेषता यह है कि, जब त्रिकूटकी आदिमें ब्रह्मबीजको जोडे तब प्रथमा सुन्दरी और जब शक्तिकूटकी आदिमें ऐं ब्रह्म बीजको जोडा जावे तब द्वितीया सुन्दरी मन्त्र होगा। इस प्रकार सुन्दरीविद्या अनेक प्रकारसे प्रदर्शित हुई है ॥ ७ ॥

मन्त्रान्तरमाह।

त्रिकूटान्ते हँसबीजं बिन्दुसर्गविभूषितम्। एषाश्रीप्राणसंयुक्ता दारिद्र्यदुःखमोचिनी॥ शक्तिलोपामुद्रा तु। शक्तिर्महेशः कामश्च इन्द्रबीजं ततः परम्। महामाया ततः पश्चात्तव स्नेहाद्ददाम्यहम् ॥ पूर्ववत्कामशक्त्याख्यौ वर्णौ निष्कीलितात्मकौ। इति शाक्ता महाविद्या पश्चिमाम्नाय योजिता॥ शक्तिः सकारः पूर्ववत्काम-

राजविद्यावत् । अत्रापि पूर्ववद्बीजसंयोगः मन्त्रान्तरमाह । शिवशक्तिर्भुवनेशीवाग्भवबीजमुत्तमम् । कामं व्योम च देवेशि महामाया ततः परम्॥ सोमं व्योममहामाया नवार्णा परिकीर्त्तिता। रुद्रशक्तिरियं देवी पूर्वाम्नाये हि नायिका ॥ मन्त्रान्तरम् । मादनं गोत्रमित्सान्तो रेफवामाक्षिचन्द्रवान् । नादबिंदुसमायुक्तः कथितः परमेश्वरि ॥ पुनः शाक्ते लोपा तु। शिवबीजं शक्तिसोमं मादनं च पुरन्दरम् व्योमवह्निसमायुक्तं तुरीयस्वरबिन्दुकम् ॥ पूर्ववत्कामराजं तु शक्तिबीजं समुद्धरेत् । एषा विद्या महेशानि वर्णितुं नैव शक्यते ॥ शक्तिः सकारः सोमःसकारः। पूर्ववत्कामराजविद्यावत्॥ अत्रापि पूर्ववद्बीजसंयोगः । ब्रह्मा च गगनं शक्रो नकुलीशोऽनलःशशी ॥ मायाबिन्दुसनादेन कामबीजं समुद्धरेत् । शक्तिर्मादनशक्रश्चहरो वह्नीन्दुमायया ॥ नानाबिन्दुसमाक्रान्तः कथितः कामदो मनुः । एषा विद्या महेशानि कथितैकादशाक्षरी ॥ मन्त्रान्तरमाह । मादनं पञ्चवक्रं च लोहिता रुद्रयोगिनी । पुरन्दरो महामाया वाग्भवं बीजमुत्तमम्॥ पूर्ववत्कामशक्त्याख्यमुद्धरेद्देविसुन्दरीम् । लोहिता क्षकारः रुद्रयोगिनी मकारः । पूर्ववत्कामराजविद्यावत् ॥ भृग्वीशं गगनं हान्तं कालमिन्द्रं महेश्वरम् । वामाक्षि वह्निचन्द्राढ्यं वाग्भवं परमेश्वरि ॥ कामबीजं शक्तिकूटं पूर्ववत्तु समुद्धरेत् ॥ भृग्वीशः सकारः हान्तः क्षकारः कालो मकारः ॥ पूर्ववत्कामराजविद्यावत् ।

सर्वत्र एवं क्रमः॥ मन्त्रान्तरमाह। विष्णुरीशस्ततो हान्तः कालेशः पृथिवी ततः। भुवनेशी ततः पश्चाद्वाग्भवं कथितं त्वयि॥ कामराजं शक्तिकूटं पूर्ववत्कथितं प्रिये। विष्णुरीशः अकारयुक्तहकारः कालेशो मकारः॥ सौभाग्यविद्यामाह श्रीक्रमे। सौभाग्यं कथयिष्यामि शृणुष्वैकमनाः प्रिये॥ शक्तिः स्वयम्भूः शम्भुश्च शक्रश्च भुवनेश्वरि॥ शिवोमादनरुद्रेन्द्रमायास्ततः परम्। कामः शिवस्ततो ब्रह्मा इन्द्रश्च भुवनेश्वरी॥ एषा तु परमेशानि सुन्दरी सुभगोदया। त्रिकूटांते हंसबीजं तदा सप्तदशी भवेत्॥ वाग्बीजं विजया माया ब्रह्मा शक्रश्च पार्वती। मान्मथं शिवशक्ती च मादनं हर इन्द्रकः॥ महामाया ततः पश्चाच्छक्तिर्मनुससर्गकः। चन्द्रः प्रजापतिः शक्रो महामाया ततः परा॥ अष्टादशाक्षरी विद्या महात्रिपुरसुन्दरी। सर्वान्ते हंससंयुक्ता विंशाक्षरी भवेत्तदा॥ ८॥

मन्त्रान्तर (अन्य मन्त्र) कहा जाता है। त्रिकूटके अंतमें हँसः इस बीजको मिला देवे तो क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं हँसः यह मन्त्र हुआ। इस मन्त्रसे आराधना करनेपर साधक दरिद्रताके दुःखसे छूटजाता है। शक्ति लोपामुद्रामन्त्र कहा जाता है। स ह क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं यह मन्त्र पश्चिमाम्नायमें वर्णित है। हे देवि! मैंने इसको आपके स्नेहसे ही प्रकाशित किया है। अन्य मंत्र कहा जाता है। ह स ह्रीं ऐं क्लीं ह ह्रीं स ह यह नवाक्षर मन्त्र

साक्षात् रुद्रशक्तिस्वरूप है। यह मन्त्र पूर्वाम्नायमें कथित है। मन्त्रान्तर यथा क ल ह्रीं पुनर्वार शक्तिलोपामुद्रामन्त्र कहा जाता है ह स स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं। हे महेशानि! इस विद्याके वर्णन करनेको कोई भी समर्थ नहीं है। क ह ल ह स ह्रीं स क ल ह ह्रीं यह एकादशाक्षर मन्त्र साधकको सर्व कामनाओंका देनेवाला है। अन्य मन्त्र कहा जाता है। क ह क्ष म ल ह्रीं इसका नाम वाग्भवकूट है। इस वाग्भवकूटके पीछे पूर्ववत् कामराजकूट और शक्तिकूट जोडदेना चाहिये। तो क ह क्ष म ल ह्रीं इसके ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं यह मन्त्र होगा। अन्य मन्त्र यथा स ह क्ष म ल ह्रीं इसका नाम वाग्भवकूट है। इस वाग्भवकूटके अन्तमें पूर्ववत् कामराजकूट और शक्तिकूटजोडदेने पर स ह क्ष म ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं यह मन्त्र होगा। मन्त्रान्तर कहा जाता है अ ह क्ष म ल ह्रीं इसका नाम वाग्भवकूट है, इस वाग्भवकूटके अन्तमें कामराजकूट और शक्तिकूट जोडदेने पर अ ह क्ष म ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं यह मन्त्र उद्धृत होगा। श्री क्रममें सौभाग्यमन्त्र लिखा है। हे प्रिये! अब मैं सौभाग्यमन्त्र कहता हूं आप एकाग्रचित्तसे सुनिये। स क ह ल ह्रीं ह क ह ल ह्रीं क ह क ल ह्रीं सुन्दरीदेवीका यह मन्त्र सौभाग्य प्रदान करनेवाला है। उक्त त्रिकूटके अन्तमें हँसः यह बीज जोडदेने-पर सुंदरीका सप्तदशाक्षर मंत्र होता है। मंत्र यथा स क ह ल ह्रीं ह क ह ल ह्रीं क ह क ल ह्रीं हँसः ऐं ए ई क ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं महात्रिपुरसुंदरीका यह

अष्टादशाक्षर मंत्र है इस मंत्रके पीछे हंसः यह बीज जोड देने-पर सुंदरीका विंशत्यक्षर मंत्र होता है ॥८॥ श्रीदेव्युवाच ।

भाषा सृष्टिः स्थितिहृती निराख्या पञ्च सुन्दरी । कथयस्व प्रभो देव यदि ते रोचते मयि ॥ ९ ॥

श्रीदेवी पार्वतीजी बोलीं । हे प्रभो ! हे देव ! अब मुझको यदि आप प्यार करते हैं तो मेरे प्रति भाषा सृष्टि स्थित संहार और निराख्या यह पांच प्रकारका सुंदरीमंत्र वर्णन कीजिये॥९॥

श्रीमहादेव उवाच ।

शिवो मादन इन्द्रश्च शक्तिश्च भुवनेश्वरी । ब्रह्मा-शिवेन्द्र शक्तिश्च महामाया ततः परा॥ मादनेंद्रौ शक्ति-शिवौ महामाया तदन्तिके ॥ शक्तिः सकारः एषा भाषा । शिवश्चन्द्रस्तथा कामः शक्रश्च भुवनेश्वरी । शिवेन्द्रौ कामरुद्रौ च चन्द्रश्च परमेश्वरी ॥ शक्तिः कामश्च शक्रश्च महामाया ततः परा ॥ इयं सृष्टिः । शिवेन्द्रो कामशक्ती च महामाया ततः परम् । काम-श्चन्द्रो महेशश्च इन्द्रः शक्तिश्च पार्वती ॥ ब्रह्मा महेश्वरः शक्तिः शक्रश्च भुवनेश्वरी ॥ स्थितरेषा । शिवेन्द्रौ काम-शक्तिश्च तत्परा परमेश्वरी । शिवशक्ती मादनेंद्रौ शिवो-वह्नींदुमायया ॥ शिवशक्तिश्च कलहा वह्निमायेन्दुभू-षिता ॥ एषा संहृतिः । शक्रो ब्रह्मा चन्द्रबीजं महामाया ततः परम् । वाग्भवं कथितं चैव कामराजं ततः शृणु ॥ शक्तिः शिवो मादनेंद्रौ तत्परा परमेश्वरी । शिवः शक्तिश्च सोमश्च शून्यो ब्रह्मा महेश्वरी ॥ शून्यो हकारः एषा निराख्या ॥ १० ॥

श्रीमहादेवजीने कहा । हे प्राणेश्वरी ! ह क ल स ह्रीं क ह ल स ह्रीं क ह ल स ह्रीं क ल स ह ह्रीं इसको भाषा मंत्र कहाजाता है । ह स क ल ह्रीं ह ल क ह स ह्रीं स क ल ह्रीं इसको सृष्टिमन्त्र कहते हैं । ह ल क स ह्रीं क स ह ल स ह्रीं क ह स ल इस मंत्रका नाम स्थित है । ह ल क स ह्रीं ह स क ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं इसको संहति मंत्र कहा जाता है। ल क स ह्रीं स ह क ल ह्रीं हस स ह क ह्रीं इस मन्त्रका नाम निराख्या है ॥ १० ॥

श्रीदेव्युवाच ।

स्वप्नावतीं मधुमतीं कथयस्व मयि प्रभो । इदानीं श्रोतुमिच्छामि यदितेऽस्ति कृपा मयि ॥ ११ ॥

श्रीदेवी पार्वतीजी बोलीं । हे प्रभो! यदि मेरे प्रति आपकी कृपा हो, तो अब मैं स्वप्नावती और मधुमतीका मन्त्र सुनना चाहती हूं आप वर्णन कीजिये ॥ ११ ॥

श्रीमहादेव उवाच ।

शिवो मादनशक्रौ च शक्तिस्तु भुवनेश्वरी महेशो ब्रह्महंसश्च इन्द्रोऽपि भुवनेश्वरी॥ महेशः शक्तिः कामश्च पुरन्दरो वियत्तथा । अग्निमायाकलायुक्तं नादबिन्दु-विभूषितम् ॥ हँसो हकारः माया कला ईकारः । एषा स्वप्नावती ख्याता कला पञ्चदशी च या ॥ एषा स्वप्ना-वती । ब्रह्मा महेश इन्द्रश्च शक्तिश्च भुवनेश्वरी ॥ ब्रह्मा वियन्मरुच्छक्रस्तत्परा परमेश्वरी । मादनं लोमचन्द्रौ च शक्रश्च परमेश्वरी । मरुत यकारः ॥ एषा मधुमती

ख्याता सर्वतंत्रेषु गोपिता । एषा मधुमती । श्रीक्रमे । वामकेशरविद्यैव त्रिकूटक्रमपाठिता । सौभाग्यायास्त्रिकूटेन पञ्चम्याः पञ्चकूटकम् ॥ त्रिपुरा या महाविद्या कूटैकादशनिर्मिता । सारात्सारतरा विद्या कथितैकादशाक्षरी ॥ १२ ॥

श्रीमहादेवजी बोले हे प्राणवल्लभे ! ह क ल स ह्रीं ह क ह ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं इसका नाम स्वप्नावती मन्त्र है। क ह ल स ह्रीं क ह ष ल ह्रीं क स स ल ह्रीं इसका नाम मधुमती मंत्र है । श्रीक्रमसंहितामें जो एकादश कूट मन्त्र लिखा है वह कहा जाता है । प्रथम तो कामराजविद्याका त्रिकूट फिर सौभाग्यमन्त्रका त्रिकूट और पीछे पञ्चमी विद्याका पञ्चकूट यह एकादश कूटात्मक मन्त्र है यथा क ए ई ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं, ह स क ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्री, सकल ह्रीं, क ए ई ल ह्रीं, ह स क ल ह्रीं, ह स ह ल ह्रीं, क ह ष ल ह्रीं, ह स ल स ह्रीं ॥ १२ ॥

अथ पञ्चमीविद्या ।

कामं विष्णुयुतं देवि शक्तिर्मायेन्द्रमेव च। महामाया ततः पश्चाद्वाग्भवं बीजमुद्धरेत ॥ विष्णुयुतमकारयुतमित्यर्थः । शक्तिरेकारः, माया ईकारः । कामराजस्य प्रथमकूटमाह । वियच्चन्द्रस्तथा पश्चात्कालौ नकुलिवह्नि च । मायास्वरेण संयुक्तं नादबिन्दुकलान्वितम् । प्रथमं कामराजस्य कूटं परमदुर्लभम् । वियद्विष्णुयुतं कामो हँसःशक्रस्ततः परः ॥ महामाया ततः पश्चात्स्वप्नाव-

तीति कथ्यते ॥ एतद्वितीयकामराजकूटं । हंसो हकारः । मादनं शिवबीजं च वायुबीजं ततः परम् । इन्द्रबीजं ततः पश्चान्महामायां समुद्धरेत् ॥ इयं तृतीयकूटम् । इयं मधुमती । शिवबीजं ततः कामं इन्द्रं देवीं नियोजयेत् । महामायां ततः पश्चाच्छक्तिकूटं समुद्धरेत् ॥ देवी सकारः । कुलोड्डीशे ॥ वाग्भवं प्रथमं कूटं शक्तिकूटं च पञ्चमम् । मध्यकूटत्रयं देवि ! कामराजं मनोहरम् । कथिता पञ्चमीविद्या त्रैलोक्यसुभगोदया ॥ १३ ॥

अब पञ्चमीमन्त्र कहा जाता है । क ए ई ल ह्रीं इसका नाम वाग्भवकूट है । कामराज मन्त्रका प्रथमकूट कहा जाता है । ह स क ल ह्रीं इसीको कामराजका प्रथमकूट कहते हैं । यह मन्त्र परम दुर्लभ है ॥ ह क ह ल ह्रीं इसका नाम स्वप्नावती मन्त्र है और इसको कामराजका दूसरा कूट भी कहते हैं। क ह ष ल ह्रीं इसका नाम मधुमती मन्त्र है । ह क ल स ह्रीं इसका नाम शक्तिकूट है । कुलोड्डीशमें लिखा है कि प्रथममें वाग्भवकूट पञ्चममें शक्तिकूट और मध्यमें कामराजके तीन कूट इन पांच कूटमें पञ्चमी विद्या होती है । ऐसा होनेपर क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं ह श क ल ह्रीं क ह ष ल ह्रीं स ह क ल ह्रीं यह मन्त्र हुआ । यह पञ्चमी विद्या तीनों भुवनको सौभाग्यको देनेवाली है ॥ १३ ॥

ईश्वर उवाच ।

शृणु देवि महाभागे शक्तिकूटं सुदुर्लभम् । वाग्भवं प्रथमं कूटं कामराजं त्रिकूटकम् ॥ शक्तिकूटं प्रवक्ष्यामि तव

स्नेहाद्विशेषतः।जीवप्राणौ महेशानि मादनं तदनन्तरम् ॥ इन्द्रबीजं ततः पश्चाद्भुवनेशी तु पञ्चमम्। इति वा शक्तिकूटम्॥ जीवः सकारः प्राणो हकारः॥ अथवा देवदेवेशि सौभाग्यायाश्च वाग्भवम्। कूटत्रयं कामराजं शक्तिबीजं च पूर्ववत्॥ वामनेत्रादिकूटं वा भगादिकूटमेव वा। अरिहा सिद्धिदा विद्या सर्वदोषविवर्जिता॥ भग एकारः। एतेनाष्टधा पञ्चमी वाग्भवक्तिकूटभेदेन॥ यामले॥ द्विविधा पञ्चमी विद्या पंचपंचाक्षरी परा। मध्ये षडक्षरी चैव शक्तिश्च चतुरक्षरी॥ षडिति कामराजविद्यामध्यकूटमित्यर्थः। शक्तिकूटमिति कामराजस्य शक्तिकूटमित्यर्थः। एषा चतुर्द्धा वाग्भवकूटभेदात्। एतयोरष्टधा चतुर्द्धा व्यवस्थितयोः॥ कामराजस्य तृतीयकूटं तत्रैव॥ कामराजं महेशानि शिवबीजं ततः परम्। तदधो हंसबीजं तु इन्द्रबीजं विचिन्तयेत्॥ महामाया ततः पश्चात्कूटं परमदुर्लभम्। एषापि पूर्ववदष्टधा अन्या चतुर्द्धा। तथा च तत्वबोधे। कामाकाशपरा शक्रः संस्थानकृतरूपिणी। परा सकारः। संस्थानकृतरूपिणी महामाया। तथा च तन्त्रे। कामबीजं महेशानि शम्भुबीजं ततः परम्। तदधश्चन्द्रबीजं तु पृथ्वीबीजं ततो लिखेत्॥ तदन्ते च महामायाकूटं परमदुर्लभम्। एषा पूर्ववदष्टधा। अन्या चतुर्द्धा तेन षट्त्रिंशद्रूपिणी पञ्चमी। श्रीक्रमे। एतासां चैव विद्यानां प्राणं शृणु वरानने। रमां मायां हंसबीजं वाग्भवाद्ये

नियोजयेत् ॥ शक्त्यन्ते तु महादेवि हंसं मायां रमां तथा । एभिर्युक्तेन देवेशि विद्याजपनमाचरेत् ॥ जपश्च सप्तवारमेव दीपन्यां तथा दर्शनात् । एतासामिति पूर्वोक्तविद्यानाम् । पञ्चम्यास्तु विशेषो यथा । रमां मायां हंसबीजं वाग्भवाद्ये नियोजयेत् ॥ शक्त्यन्ते तु महेशानि हंसं मायां रमां तथा ॥ कामराजत्रये देवि ककारं शक्रसंयुतम् । मायाबिन्द्वीश्वरयुतं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ प्रथमं कामकूटस्य चाद्ये नियोजयेदिदम् । वान्तं वह्निसमायुक्तं वामनेत्रविभूषितम् ॥ नागबिन्दुसमायुक्तं श्रियो बीजमुदाहृतम् । द्वितीयं कामबीजं तु जपेदुक्त्वाच सुन्दरि ॥ गगनं वह्निसंयुक्तं वामनेत्रविभूषितम् । नागबिन्दुसमायुक्तं मायाबीजं प्रकीर्त्तितम् ॥ मधुमतीं जपेच्चापि सर्वकामफलप्रदाम् ॥ १४ ॥

श्रीमहादेवजी बोले । हे महाभागे ! आप अब अतिदुर्लभ शक्तिकूट सुनिये । प्रथम वाग्भवकूट, फिर तीन कामराजकूट जोडनेपर जो मंत्र होगा, उसका नाम शक्तिकूट है । यह शक्तिकूट आपके स्नेहसे कहा गया है । अथवा स ह क ल ह्रीं इसका नाम शक्तिकूट है । सौभाग्यका वाग्भवकूट और शक्तिकूट यह कूटत्रयात्मिका विद्या शत्रुओंका नाश करनेवाली, सिद्धिकी देनेवाली और सर्व दोषहीन है । वाग्भवकूट चार प्रकारका और शक्तिकूट दो प्रकारका है, अतएव पञ्चमी विद्या आठ प्रकारकी हुई । यामलमें लिखाहै कि पञ्चमी विद्या दो प्रकारकी है, उसके आद्य तीन कूट पञ्चपञ्चाक्षर हैं । कामराजविद्याका मध्यकूट षडक्षर और कामराजविद्याका शक्तिकूट

चतुरक्षर है । जो कि वाग्भवकूट चार प्रकार का है, इस कारण यह विद्या भी चतुर्विध है। यामलमें और भी लिखा है कि क ह हं सः ल ह्रीं यह कूट परम दुर्लभ है । तत्वबोधमें क ह स ल ह्रीं यह मंत्र लिखा है । तंत्रमें लिखा है कि क ह स ल ह्रीं यह कूट महादुर्लभ है । उक्त विद्याभी पूर्ववत् आठ प्रकारकी है । अन्यान्य विद्या चार प्रकारकी है, अतएव पञ्चमी विद्या छत्तीस प्रकारकी होगी । श्रीक्रममें लिखा है कि महादेवजीने भगवती पार्वतीजीसे कहा हे प्यारी ! अब आप पूर्वोक्त सब विद्याओंका प्राणमंत्र सुनिये । श्रीं ह्रीं हं सः इस मंत्रको वाग्भवकूटकी आदिमें जोडना चाहिये और शक्तिकूटके अंतमें हं सः ह्रीं श्रीं यह मंत्र जोडकर सात वार जप करना चाहिये। इस प्रक र प्राणमंत्रको श्रीक्रमोक्त सब विद्याओंके सम्बन्धमें जाने । पञ्चमी विद्याकी विशेषता कही जाती है । पञ्चमी-विद्याके वाग्भवकूटकी आदिमें श्रीं ह्रीं हं सः शक्तिकूटके अन्तमें हं सः ह्रीं श्रीं और कामराजमंत्रके प्रथमकूटकी आदिमें क्लीं, मध्यकूटकी आदिमें श्रीं और तीसरे कूटकी आदिमें ह्रीं यह बीज जोडकर जप करनेपर सब कामनाओंकी सिद्धि होती है॥ १४॥

अथ दीपनी ।

तारं लक्ष्मीं च वाग्बीजं मन्मथं भुवनेश्वरी । एत-ज्जप्त्वा ततः पश्चाद्वाग्भवाख्यं समुच्चरेत् ॥ प्रणवं भुव-नेशानीं रमां कामं च वाग्भवम् । कामबीजं ततो जप्त्वा त्रैलोक्यक्षोभकारकम् ॥ हुंकारं चैव वाग्बीजं रमां मन्म-थमायया । स्वप्नावतीं महादेवि जपेत्तत्र समाहितः ॥

प्रणवं चाधरं कामं रमां च भुवनेश्वरीम् । मधुमतीं ततो जप्त्वा मायां श्रीकूर्चबीजकम् ॥ प्रणवाद्यं च देवेशि हंसबीजपुटीकृतम् । एतद्बीजं समुच्चार्य शक्तिकूटं ततो जपेत् ॥ एषा तु दीपनी विद्या अजपा प्राणरूपिणी ॥ जपनियमस्तु । जपेदादौ जपेत् पश्चात् सप्तवारमनुक्रमात् । कामबीजादिविद्यानां दीपनीं चैव कारयेत् ॥ वाग्भवे कामराजे तु शक्तिकूटे सुरेश्वरि ॥ अत्र पञ्चमीवद्बोध्या वाग्भवशक्तिकूटयोर्दीपनी ॥ कामकूटे पुनः । प्रणवं भुवनेशानीं रमां कामं च वाग्भवम् । दीपनीमिति सर्वत्र कूटे स्वरसंबन्धः ॥ तथा च । सौभाग्यादिविद्यामधिकृत्य योगिनीहृदये ॥ स्वरव्यञ्जनभेदेन सप्तत्रिंशत्प्रभेदिनी । सप्तत्रिंशत्प्रभेदेन षट्त्रिंशत्तत्वरूपिणी ॥ तत्त्वातीतस्वभावा च विद्यैषा भाव्यते सदा । श्रींकण्ठदशकं तद्वद्व्यक्तस्य हि वाचकम् ॥ प्राणभूतस्थितो देवि तत्तदेकादशः परः ॥ १८ ॥

दीपनीमन्त्र कहा जाता है ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं यह पंचाक्षर मन्त्र जपकर वाग्भवकूट उच्चारण करे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं यह मन्त्र जपकर कामराजकूटका जप करे । स्वाप्नावती मन्त्रकी आदिमें ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं यह मन्त्र जपकर कार्य करे । ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं यह मन्त्र जपकर मधुमतीमन्त्रका जप करे। हंसः ॐ ह्रीं श्रीं हुँ सोहं यह मन्त्र प्रथम जपकर फिर शक्तिकूटका जप करे । इन सब मन्त्रोंका नाम दीप-

नीविद्या है। यह मन्त्र संपूर्ण विद्याओंके प्राणस्वरूप हैं। उक्त मन्त्रोंके जपनेकी आदिमें सात वार और अन्तमें सात वार जपना चाहिये। कामराजकूट वाग्भवकूट और शक्तिकूट इनके भी दीपनी मन्त्रोंको जपना चाहिये। वाग्भवकूट और शक्तिकूटके दीपनीमंत्र उक्त पञ्चम्युक्त दीपनीके समान है। कामराजकूटके दीपनीमन्त्रमें विशेषता है वह यह है ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं यह मन्त्र कामराजमन्त्रका दीपनी है। दीपनी मन्त्रविषयक जो सब प्रमाण योगिनीहृदयमें लिखे हैं वे सब वचन यहां मूलमें लिखे गये हैं॥ १५॥

इति महाषोडशीविद्या सम्पूर्णा।

अथ बटुकभैरवमन्त्रः

चतुर्थ्यन्तबटुकायेति आपदुद्धारणचतुर्थ्यन्तशब्दोपेतकुरुद्वययुक्तचतुर्थ्यन्तबटुकशब्दोपेतहृल्लेखासम्पुटितमेकविंशत्यक्षरम्। तथा च निबन्धे॥ उद्धरेद्बटुकं ङेन्तमापदुद्धारणं तथा। कुरुद्वयं पुनर्ङेन्तं बटुकांतं समुद्धरेत्॥ एकविंशत्यक्षरात्मा शक्तिरुद्धो महामनुः। अस्य पूजा॥ प्रातःकृत्यादिप्राणायामान्तं विधाय पीठन्यासं कुर्यात्॥ तद्यथा धर्माद्यमैश्वर्यान्तं विन्यस्य ऋष्यादि न्यासं कुर्यात् शिरसि बृहदारण्यकऋषये नमः। मुखे गायत्रीच्छन्दसे नमः। हृदि बटुकभैरवाय देवतायै नमः। ततो मूर्त्तिन्यासः। ह्रों वों ईशानाय अङ्गुष्ठयोः। ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः। ह्रुँ वुँ अघोराय नमः मध्यमयोः। ह्रिं विं वामदेवाय नमः अनामिकयोः। ह्रं वं सद्योजा-

ताय नमः कनिष्ठयोः । पुनस्तत्तदङ्गुलीभिः शिरोवदनहृद्गुह्यपादेषु तत्तद्बीजादिकास्तत्तमूर्त्तीर्न्यसेत् ॥ तथा ऊर्ध्वप्राग्दक्षिणोदीच्यपश्चिमेषु च ता न्यसेत् । तथा च निबन्धे। अङ्गुलीदेहवक्रेषु मूर्त्तीन्र्यस्येद्यथा पुरा। सत्यादिपञ्चह्रस्वाढ्यशक्तिबीजपुरःसरम् ॥ वकारं पञ्च ह्रस्वाढ्यमीशानादिषु योजयेदिति ॥ १ ॥

अब बटुकभैरवका मन्त्र और तिसकी पूजा आदि कही जाती है । निबन्धग्रन्थमें लिखा है कि ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं इस इक्कीस अक्षरके मंत्रसे बटुकभैरवकी पूजादि करे। इस मन्त्रकी पूजादिका क्रम यह है प्रथम सामान्य पूजापद्धतिके क्रमानुसार प्रातःकृत्यादिसे प्राणायाम तक सम्पूर्ण कर्म करके पीठन्यास करे । इस पीठन्यासमें ॐ धर्माय नमः इत्यादि ॐ ऐश्वर्याय नमः यहांतक न्यास करे। फिर मूल लिखित मन्त्रसे ऋष्यादि न्यास और पञ्चमूर्त्तिन्यास करे। पीछे अंगुष्ठांगुली द्वारा मस्तकमें ह्रों वों ईशानाय नमः तर्जनी अंगुलीद्वारा वदनमें, ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः मध्यमांगुलीद्वारा हृदयमें, ह्रुँ वुँ अघोराय नमः अनामिकांगुलीद्वारा गुह्यमें, ह्रिं विं वामदेवाय नमः कनिष्ठांगुलीद्वारा चरणमें, ह्रँ वँ सद्योजाताय नमः इस प्रकार न्यास करके ऊर्ध्व पूर्व दक्षिण उत्तर और पश्चिम मुख होकर उक्त रीतिसे न्यास करे ॥ १ ॥

ततः कराङ्गन्यासौ ।

ॐ ह्राँ वाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि । ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः इत्यादि षड्दीर्घभाजा बीजद्वयेन कुर्या-

त्। तथा च निबन्धे॥ षड्दीर्घयुक्तया शक्त्या वकारेण च तत्तथा। अङ्गानि जातियुक्तानि प्रणवाद्यानि कल्पयेत्॥ २॥

फिर ॐ ह्रां वां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्, इसी प्रकार ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं वूं शिखाये वषट्, ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुं, ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इस प्रकारसे कराङ्गन्यास करना चाहिये॥ २॥

ततो ध्यानम्।

अस्य ध्यानं त्रिधा प्रोक्तं सात्त्विकादिप्रभेदतः। सात्त्विकं यथा॥ वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिवक्त्रं दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणीनूपुराद्यैः। दीप्ताकारं विशदवसनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं शूलदण्डौ दधानम्॥ ३॥

इस प्रकारसे न्यास करके फिर ध्यान करना चाहिये। इस देवताके ध्यान त्रिविध अर्थात् तीन प्रकारके हैं यथा सात्त्विक, राजसिक और तामसिक। सात्विक ध्यान तो यह है भैरवदेव बालरूपी स्फटिकके सदृश देहकी कांति, कुण्डलोंके द्वारा देदीप्यमान मुखयुक्त, नवीनमणिजडित किंकिणी तथा पायजेबादि द्वारा शोभित, निर्मल वस्त्र, प्रसन्न चित्त और त्रिनयन हैं। यह हाथमें शूल और दण्ड धारण कर रहे हैं॥ ३॥

राजसं ध्यानं यथा ।

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः । नीलग्रीवमुदार भूषणशतं शीतांशुचूडोज्ज्वलं बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये ॥ ४ ॥

राजस ध्यान यह है । भैरवदेवके देहकी प्रभा उदय हुए सूर्यकी समान है, यह त्रिनयन, रक्ताङ्गराग और रक्तमालाधारी तथा हसमुख हैं । इनके हाथमें वरमुद्रा नरकपाल (मनुष्यकी खोपडी) अभयमुद्रा और शूल है । यह साधकका भय हरनेवाले हैं, इनका ग्रीवादेश नीलवर्ण अनेक गहनोंसे विभूषित और चूडामें चन्द्रमा है तथा गुलदुपहरियाके फूलकी समान अरुण वस्त्र पहरे हुए हैं ॥ ४ ॥

तामसिकध्यानम् ।

ध्यायेन्नीलाद्रिकान्ति शशिशकलधरं मुण्डमालामहेशं दिग्वस्त्रं पिङ्गलाक्षं डमरुमथ सृणिं खड्गशूलाभयानि । नागं घंटां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं सर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम् ॥ ५ ॥

तामसिक ध्यान यह है कि भैरवदेवके देहकी कांति नील पर्वतकी समान, चन्द्रकला और मोतियोंकी माला धारण करनेवाले, दिगम्बर और नेत्र इनके पिंगलवर्ण हैं । इन्होंने हाथोंमें डमरू, अंकुश, खड्ग, शूल, अभयमुद्रा, सर्प, घंटा और मनुष्यकी खोपडी धारण कर रक्खी है । इनके दांतोंकी पांति

भयानक तीन नेत्रयुक्त और यह मणिमय किंकिणी नूपुरादि (पायजेबादि) गहनोंसे अलंकृत है ॥ ५ ॥

सात्त्विकं ध्यानमाख्यातमपमृत्युविनाशनम् । आयुरारोग्यजननमपवर्गफलप्रदम् ॥ राजसं ध्यानमाख्यातं धर्मकामार्थसिद्धिदम् । तामसं शत्रुशमनं क्लत्याभूतगदापहम् ॥ एवं ध्यात्वा मानसैः संपूज्यार्घ्यस्थापनं कुर्यात् ॥ अस्य पूजायंत्रम् ॥ धर्माधर्मादिभिः क्लृप्तपीठे पङ्कजशोभिते । षट्कोणान्तत्रिकोणस्थे व्योमपङ्कजशोभिते ॥ ततो मूलेन मूर्तिं सङ्कल्प्य पूर्ववद्ध्यात्वा आवाहनादिकं कुर्यात् तत्र क्रमः । मूलादिसद्योजातमन्त्रेणावाहनं । मूलादिवामदेवेन स्थापनम् । मूलेन सान्निध्यं । अघोरेण सन्निरोधनं । तत्पुरुषेण योनिमुद्राप्रदर्शनम् । ईशानेन वन्दनमिति विशेषः । कर्णिकायां दिक्षु कोणेषु ईशानादीन् यजेत् । एतत्प्रथमावरणम् । ततो व्योमपङ्कजदलेषु असिताङ्गादीन् भैरवान् यजेत् । तद्यथा ॥ असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधश्चोन्मत्तभैरवः। कपाली भीषणश्चैव संहारश्चाष्ट भैरवाः ॥ एतैरष्टभिर्द्वितीयावरणम् ॥ ततः षट्कोणेषु पूर्वादि ह्रां वां हृदयाय नमः इत्यादि षडङ्गानि पूजयेत् । ततः पूर्वादि डाकिनी राकिणी लाकिनी काकिनी शाकिनी हाकिनी मालिनी देवीपुत्रान् पूजयेत् । एतत्तृतीयावरणम् । उमापुत्रान् रुद्रपुत्रान् मातृपुत्रान् दक्षिणतो यजेत् । ऊर्ध्वमूर्ध्वमुखीपुत्रान् अधोऽधोमुखीपुत्रान् पूजयेत् । एतच्चतुर्थावरणम् तथा

च शारदायाम् ॥ पूर्वादीशानपर्यन्तं तद्बहिः पूजयेदिमान् । डाकिनीपुत्रकान्पूर्वं राकिणीपुत्रकांस्ततः ॥ लाकिनीपुत्रकान्पश्चात्काकिनीपुत्रकांस्तथा । शाकिनीपुत्रकान्भूयो हाकिनीपुत्रकान्पुनः ॥ मालिनीपुत्रकान्पश्चाद्देवीपुत्रांस्ततः परम् । तथोमारुद्रमातॄणां पुत्रान्दक्षिणतो न्यसेत् ॥ ऊर्द्ध्वमुख्याः सुतानूर्द्ध्वमधोमुख्याः सुतानधः । इति सम्पूजयेन्मत्री पुत्रवर्गांस्त्रयोदश ॥ इति तद्बहिरष्टदले दिक्पालान्बटुकरूपान् पूजयेत् तद्बहिः-पूर्वे ॐ ब्रह्माणीपुत्राय नमः, एवं ईशाने माहेश्वरीपुत्राय, उत्तरे वैष्णवीपुत्राय, अनिले कौमारीपुत्राय पश्चिमे इन्द्राणीपुत्राय, नैर्ऋते महालक्ष्मीपुत्राय, याम्ये वाराहीपुत्राय, अग्निकोणे चामुण्डापुत्राय, एतत्पंचमावरणम् । तथा च निबन्धे ॥ ब्रह्माणीपुत्रकं पूर्वे माहेशीपुत्रमैश्वरे । वैष्णवीपुत्रकं सौम्ये कौमारीपुत्रमानिले ॥ इन्द्राणीपुत्रकं भूयः पश्चिमे पूजयेत्ततः । महालक्ष्मीसुतं पश्चाद्रक्षोदिशि समर्चयेत् ॥ वाराहीपुत्रकं याम्ये चामुण्डापुत्रमानले । तद्बहिर्दशदिक्षु हेतुकं त्रिपुरान्तकम् ॥ वेतालं वह्निजिह्वं कालान्तकं करालं एकपादं भीमरूपं अचलं हाटकेश्वरं च पूजयेत् । एतत्षष्ठावरणम् । ततः ईशानादिनिर्ऋतिषु सकलेश्वरभूम्यन्तरिक्षस्वर्लोकनिष्ठान् योगिनीसहितान् पूजयेत् । यथा योगिनीसहितदिव्ययोगीशाय नमः । एवं योगिनीसहितान्तरीक्षयोगीशाय नमः । योगिनीसहितभूमिष्ठयोगीशाय नमः । एतत्सप्त-

मावरणम् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकविंशतिलक्षजपः । त्रिमधुरप्लुतैर्दशांशहोमः । तथा च वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं हविष्याशी जितेन्द्रियः । तद्दशांशं प्रजुहुयात्तिलैस्त्रिमधुराप्लुतैः ॥ ६ ॥

यह तीन ध्यान कहे गये, इन ध्यानोंका फल यह है। सात्विक ध्यानसे अकालमृत्युका नाश, आयुर्वृद्धि; आरोग्य और मुक्ति मिलती है । राजसिक ध्यानमें धर्मवृद्धि कामनापूर्ण और धन मिलता है और तामस ध्यान करके कार्य करनेपर शत्रुकृत कृत्यादि और भूतावेशजनित रोगोंका नाश हो जाता है । कामनाके अनुसार पूर्वोक्त प्रकारसे ध्यान करके मानस पूजा और अर्घ्य स्थापन करे । बटुकभैरव देवकी पूजाका यन्त्र यह है । प्रथम त्रिकोण, तिसके बाहर षट्कोण और तिसके बाहर अष्टदल पद्म व उसके बाहर अष्टदल पद्म अंकित करके चतुर्द्वार अंकित करे । फिर मूलमन्त्रसे मूर्तिकी कल्पना करके पुनर्वार ध्यान आवाहनादि पांच पुष्पाञ्जलि देनेतक सब कर्म करके आवरण पूजा आरंभ करे । इस देवताके आवाहनमें कुछ विशेषता है, वह मूलके देखनेपर मालूम हो जायगी । कर्णिकाकी चारों दिशा और कोनेमें ॐ ईशानाय नमः, ॐ अघोराय नमः, ॐ तत्पुरुषाय नमः, ॐ सद्योजाताय नमः, ॐ वामदेवाय नमः । पद्मपत्रमें ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः; इसी प्रकार रुरुभैरवाय नमः, चण्डभैरवाय नमः, क्रोधभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवाय नमः, कपालिभैरवाय नमः, भीषणभैरवाय नमः और संहारभैरवाय नमः; इन आठ भैरवोंकी पूजा करे । षट्कोणमें ॐ ह्रां वां

हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं वूँ शिखायै वषट्, ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुं, ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् यह षडङ्ग पूजा करे। फिर पूर्वादिक्रमसे ॐ डाकिनीपुत्राय नमः; इसी प्रकार लाकिनीपुत्राय, राकिणीपुत्राय, काकिनीपुत्राय, शाकिनीपुत्राय, हाकिनीपुत्राय, मालिनीपुत्राय, देवीपुत्राय यह उच्चारणपूर्वक पूजा करके उमापुत्राय नमः इत्यादि मूल लिखित आवरणपूजा करे इसका प्रमाण निबन्धादि ग्रन्थोंमें लिखा है वह मूलमें उद्धृत किया गया है। इस देवताके पुरश्चरणमें हविष्याशी और जितेन्द्रिय होकर इक्कीस लाख जप कर घृत मधु और शर्करान्वित (शर्करासहित) तिलद्वारा जपका दशांश होम करना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ बलिदानम्।

पूर्वं विघ्नेशं दुर्गां समाराध्य बलिं दद्यात्। शाल्यन्नं पायसं सर्पिर्लाजचूर्णानि शर्करा ॥ गुडमिक्षुरसापूपैर्मध्वक्तैः परिमिश्रितैः। कृत्वा कवलमाराध्य देवं प्रागुक्तवर्त्मना ॥ रक्तचन्दनपुष्पाद्यैर्निशि तस्मै बलिं हरेत् ॥ यद्वा ॥ अन्यूनाङ्गमजं हत्वा राजसं प्रागुदीरितम्। बलिप्रदानसमये रिपूणां सर्वसैन्यकम् ॥ निवेदयेद्बलित्वेन बटुकाय विशिष्टधीः। शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने ॥ भक्षय स्वगणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितः ॥ बलिमन्त्रोऽयमाख्यातः सर्वेषां विजयप्रदः ॥ अनेन बलिना तुष्टो बटुकः परसैन्यकम् ॥ सर्वं गणेभ्यो विभजेत्सामिषं क्रुद्धमानसः ॥ एवं कृते परसैन्यं क्षीयते नात्र संशयः ॥ ७ ॥

अथ बटुकभैरवके बलिदानकी विधि कही जाती है, प्रथम विघ्ननाशन और दुर्गाकी पूजा करके बलिदान करे। शालिधान्यका अन्न, खीर, घृत, लाजचूर्ण, शर्करा, गुड, गन्नेका रस, पिष्टक और मधु यह सब पदार्थ मिलाकर रात्रिकालमें लाल चन्दन और लाल पुष्पोंके संग बलिनिवेदन करे। अथवा सर्वांग सुन्दर एक बकरा मारकर बलिप्रदान करे। बलि देनेके समय शत्रुओंकी सैन्यको बलिरूपमें निवेदन करे। बलिमन्त्रमें शत्रुओंका नाम उच्चारण करके (शत्रुपक्षस्य रुधिरम्) इत्यादि मूललिखित मन्त्रसे बलि देवे। उक्त प्रकारसे बलिदान करनेपर बटुकदेव सन्तुष्ट होकर समस्त शत्रुओंका मांस अपने गणोंको बांट देते हैं। इस भांति बलि देनेसे शत्रुपक्षका क्षय (नाश) हो जाता है॥ ७॥

इति बटुकभैरवसाधनं समाप्तम्।

अथ श्यामाप्रकरणम्

भैरवतन्त्रे। अथ वक्ष्ये महाविद्याः कालिकायाः सुदुर्लभाः। यासां विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः॥ नात्र चिन्तात्रिशुद्धिः स्यान्न वा मित्रादिदूषणम्। न वा प्रयासबाहुल्यं समयासमयादिकम्। न वित्तव्ययबाहुल्यं कायक्लेशकरं न च॥ य एनां चिन्तयेन्मत्री सर्वकामसमृद्धिदाम्। तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः। गद्यपद्यमयी वाणी सभायां तस्य जायते। तस्य दर्शनमात्रेण वादिनो निष्प्रभां गताः॥ राजानोऽपि च दासत्वं भजन्ते किं परे जनाः। दिवारात्रिव्यत्ययं

च वशीकर्त्तुं क्षमो भवेत् ॥ अन्ते च लभते देव्या गणत्वं दुर्लभं नरः ॥ १ ॥

अब श्यामाप्रकरण कहा जाता है । भैरवतन्त्रमें लिखा है कि अब कालिका देवीके सब महामन्त्र कहता हूं। जिन मन्त्रोंका केवल ज्ञान मात्र होतेही मनुष्य जीवन्मुक्त हो सकता है । इन सब मन्त्रोंके ग्रहण करनेमें मन्त्रशुद्धिका विचार और अरिमित्रादि दोषका विचार करना नहीं पडता । इन मन्त्रोंकी साधनामें बहुत सारा परिश्रम अथवा समय असमयका विचार नहीं है तथा अधिक धनव्यय (खर्च) और अधिक कायाको क्लेश भी सहना नहीं पडता । जो साधक सब सिद्धियोंकी देनेवाली कालिकादेवीका ध्यान करता है उसके हाथमें सर्वदा सब सिद्धियां विद्यमान रहती हैं और वह पुरुष सभामें गद्यपद्यमयी वाणी कह सकता है, उसका केवलमात्र दर्शन करतेही प्रतिपक्षी लोगोंकी प्रभा नष्ट होजाती है और राजाभी उसके समीप दासके समान व्यवहार करता है फिर दूसरे साधारण मनुष्योंके सम्बन्धमें तो कहाही क्या जावे ? वह साधक दिनरात्रिका व्यत्यय अर्थात् दिनकी रात्रि और रात्रिका दिन कर सकता है। वह त्रिभुवनके वशीभूत करनेमेंभी समर्थ होता है और अन्तकालमें दुर्लभ देवीका गणत्व प्राप्त करता है ॥ १ ॥

अथ श्यामामन्त्राः ।

तत्र कालीतंत्रे । कामत्रयं वह्निसंस्थं रतिबिन्दुविभूषितम् । कूर्मं युग्मं तथा लज्जायुगलं तदनन्तरम् ॥ दक्षिणे कालिके चेति पूर्वबीजानि चोच्चरेत् । अन्ते

वह्निवधूं दद्याद्विद्याराज्ञी प्रकीर्तिता ॥ मन्वर्थमाहयामले । ककारीज्ज्वलरूपत्त्वात्केवलं मोक्षदायिनी । ज्वलनार्थसमायोगात्सर्वतेजोमयी शुभा ॥ मायात्रयेण देवेशि सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी । बिन्दूनां निष्कलत्वाच्च कैवल्यफलदायिनी ॥ बीजत्रया शाम्भवी सा केवलं ज्ञानचित्कला । शब्दबीजद्वयेनैव शब्दराशिप्रबोधिनी ॥ लज्जाबीजद्वयेनैव सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी । सम्बोधनपदेनैव सदा सन्निधिकारिणी ॥ स्वाहया जगतां माता सर्वपापप्रणाशिनी ॥ २ ॥

अब श्यामामन्त्र कहा जाता है । क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा । यह मन्त्र सब मन्त्रोंमें प्रधान है । इस मन्त्रके वर्णोंका अर्थ यह है; यथा जलरूपी ककार मोक्ष प्रदान करता है, अग्निरूपी रेफ सर्वतेजो मयी है । क्रीं क्रीं क्रीं यह तीनों बीज सृष्टि स्थिति और लयके करनेवाले हैं । बिंदु निष्कल ब्रह्मस्वरूप है अतएव यह कैवल्य फलका देनेवाला है । हूं हूं यह दोनों बीज शब्दज्ञानके देनेवाले हैं । ह्रीं ह्रीं यह दोनों बीज सृष्टि स्थिति और प्रलयके करनेवाले हैं । दक्षिणे कालिके इस सम्बोधनपदसे देवीका सान्निध्य (समीपता) होता है । स्वाहा यह मन्त्र जगत्का मातृस्वरूप और सब पापोंका नाश करनेवाला है ॥ २ ॥

अस्याः पूजाप्रयोगः ।

प्रातःकृत्यादिकं कृत्वा मन्त्राचमनं कुर्यात् । यथा । कालिकाभिस्त्रिभिः पीत्वा काल्यादिभिरुपस्पृशेत् ।

द्वाभ्यामोष्ठौ द्विरुन्मृज्य चैकेन क्षालयेत्करौ॥ मुखघ्राणेक्षणश्रोत्रनाभ्युरस्कं भुजौ क्रमात्। आचम्यैवं भवेत्काली वत्सरात्तां प्रपश्यति॥ कं शिरः। तद्यथा क्रीमिति त्रिराचमेत्॥ ॐ काल्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नमः इति ओष्ठौ द्विरुन्मृजेत्। ॐ कुल्वायै नमः इति करं क्षालयेत्। ॐ कुरु कुरु कुल्वायै नमः इति मुखे। ॐ विरोधिन्यैः नमः इति दक्षिणनासायां। ॐ विप्रचित्तायै नमः इति वामनासायाम्। ॐ उग्रायै नमः, ॐ उग्रप्रभायै नमः इति नेत्रयोः। ॐ दीप्तायै नमः, ॐ नीलायै नमः इति श्रोत्रयोः। ॐ घनायै नमः इति नाभौ। ॐ बलाकायै नमः इति वक्षसि। ॐ मात्रायै नमः इति शिरसि। ॐ मुद्रायै नमः ॐ नित्यायै नमः इत्यंसयोः इति मन्त्राचमनम्। ततो भूतशुद्ध्यंतं विधाय मायाबीजेन यथाविधि प्राणायामं कुर्यात्। ततः ऋष्यादिन्यासः यथा अस्य मन्त्रस्य भैरवऋषिरुष्णिक्छन्दो दक्षिणकालिकादेवता ह्रीं बीजं हुँ शक्तिः क्रीं कीलकं पुरुषार्थसिद्ध्यर्थे विनियोगः। तथा कालीक्रमे। कीलकं चाद्यबीजं स्याच्चतुर्वर्गफलप्रदम्। शिरसि भैरवऋषये नमः, मुखे उष्णिक्छंदसे नमः। हृदि दक्षिणकालिकायै देवतायै नमः। गुह्ये ह्रीं बीजाय नमः। पादयोः हुँ शक्तये नमः। सर्वाङ्गे क्रीं कीलकाय नमः। ततः कराङ्गन्यासौ। तदुक्तं कालीतन्त्रे। अङ्गन्यासकरन्यासौ यथा वदभिधीयते। भैरवोऽस्य ऋषिः प्रोक्त उष्णिक् छन्द उदाहृतम्॥

देवता कालिका प्रोक्ता लज्जाबीजं तु बीजकम् । कीलकं चाद्यबीजंस्याच्चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ शक्तिश्चकूर्चबीजं स्याद-निरुद्धा सरस्वती ॥ कवित्वार्थे विनियोगः स्यादि-त्यादि । तेन मायया षडंगन्यासः षड्दीर्घभाजा बीजेन प्रणवाद्येन कल्पयेत् ॥ वीरतन्त्रे । दीर्घषट्कयुता-द्येन प्रणवाद्येन कल्पयेत् इति वा ॥ तद्यथा । ॐ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं । ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट् । ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिषु । ॐ ह्राँ हृदयाय नमः इत्यादि । ॐ क्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः इत्यादिना वा । ततो वर्णन्यासः। अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ नमः इति हृदये । एं ऐं ओं औं अँ अः कँ खँ गँ घँ नमः इति दक्षिणबाहौ । ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ नमः इति वामबाहौ । णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ नमः इति दक्षिणपादे । मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः इति वामपादे । वि-रूपाक्षमते सबिन्दुरयं न्यासः । यथा वीरतन्त्रे । अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ वै हृदये न्यसेदित्यादि । कालीतन्त्रे पुनर्बिन्दुः । यथा अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ वै हृदयं स्पृशेदित्यादि । किन्तु सबिन्दून् वा न्यसेदेतान् निर्बिन्दून वाथ वर्णकानित्याहार्य परिगृहीतभैरवीयवाक्यादुभयमेव युक्तम् ॥ ३ ॥

दक्षिणकालिकाकी पूजाप्रणाली यह है । यथा प्रथम तो

सामान्य पूजापद्धतिके लिखे नियमानुसार प्रातःकृत्यादि करके मन्त्र आचमन करे। क्रीं इस मन्त्रसे तीन वार आचमनीय जल पान करके ॐ काल्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नमः इस मन्त्रसे दो ओष्ठ दो वार मार्जन करे फिर ॐ कुल्वायै नमः इस मन्त्रसे हाथ प्रक्षालन करके ॐ कुरु कुरु कुल्वायै नमः इस मन्त्रसे मुख और ॐ विरोधिन्यै नमः इस मंत्रसे दक्षिणनासिका और ॐ विप्रचित्तायै नमः इस मंत्रसे वामनासिका और ॐ उग्रायै नमः इस मन्त्रसे दाहिना नेत्र और उग्रप्रभायै नमः इस मंत्रसे वाम नेत्र, ॐ दीप्तायै नमः इस मंत्रसे दहिना कान और ॐ नीलायै नमः इस मन्त्रसे वाम कर्ण और ॐ धनायै नमः इस मन्त्रसे नाभि और बलाकायै नमः इस मन्त्रसे छाती और ॐ मात्रायै नमः इस मंत्रसे मस्तक और ॐ मुद्रायै नमः इस मंत्रसे दहिना कन्धा और ॐ नित्यायै नमः इस मन्त्रसे वाम कन्धेको स्पर्श करे। इस प्रकार आचमन करके सामान्य पूजापद्धतिके नियमानुसार भूतशुद्धिपर्यन्त कार्य करकेही इस मन्त्रसे यथाविधि प्राणायाम करे फिर ऋष्यादि न्यास करना चाहिये। इस न्यासकी रीति और मन्त्र मूलमें स्पष्ट रूपसे लिखे हैं देखने पर मालूम हो जायगा इस न्यासके विषयमें कालीक्रममें जो सब प्रमाण लिखे हैं वे सब मूलमें उद्धृत हुए हैं फिर कराङ्गन्यास करना चाहिये। मायाबीज अर्थात् ह्रीं इस मन्त्रकी आदिमें प्रणव जोडकर कराङ्गन्यास करना चाहिये इसकी रीति यह है। ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ

ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठभ्यां फट् इस प्रकारसे करन्यास करके हृदयादि स्थानमें ॐ ह्रां हृदयाय नमः इत्यादि क्रमसे अंगन्यास करे। अथवा ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा इत्यादि क्रमसे अर्थात् कवर्णमें दीर्घ स्वर मिलाकर कराङ्गन्यास करे फिर मूलकी लिखी रीतिके अनुसार वर्णन्यास करे। वर्णन्यासके विषयमें मतभेद है। विरूपाक्षके मतानुसार सबिन्दु अर्थात अं आं इत्यादि और कालीतन्त्रके मतानुसार निर्बिन्दु अर्थात् अ आ इत्यादि रीतिसे न्यास करना चाहिये। यह दोनों मतही युक्तिसंगत हैं अतएव जिस मतकी इच्छा है उसी मतको अवलंबन करके न्यास करना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ षोढान्यास।

तदुक्तं वीरतन्त्रे। केवला मातृकां कृत्वा मातृका तारसम्पुटाम्। मातृकापुटितं तारं न्यसेत्साधकसत्तमः॥ श्रीबीजपुटितां तां तु मातृकापुटितं तु तत्। कामेन पुटितां देवीं तत्पुटं काममेव च॥ शक्त्या च पुटितां देवीं शक्ति च तत्पुटा न्यसेत्। क्रीं द्वन्द्वं च पुनर्न्यस्य ऋॠलृलॄं च पूर्ववत्॥ मूलेन पुटितां देवीं तत्पुटं मन्त्रमेव च। अनुलोमविलोमेनन्यस्य मन्त्रं यथाविधि॥ मूलेनाष्टशतं कुर्याद्व्यापकं तदनन्तरम्॥ यथा ॐ अँ-ॐ एवं मातृकापुटितं तारं एवं श्रीबीजपुटितां तां तत्पुटितं श्रीबीजम्। एवं कामेन पुटितां मातृकाम् मातृकापुटितं कामम्। एवं शक्त्या पुटितां मातृकां मा-

तृकापुटितां शक्ति न्यसेत् । तथा क्रीं द्वन्द्व च ऋॠ-ऌॡं च पूर्ववत् ॥ तत्पुटितां मातृकां न्यसेत् । मातृकापुटितं च तत् । मन्त्रपुटितां मातृकां तत्पुटितं मनुम् । पुनरनुलोमविलोमेन । केवलं मातृकास्थाने न्यस्य मूलेनाष्टशतेन व्यापकं कुर्यात् । अयं न्यासस्ताराया अपि कार्यः । इतिगुप्तेन दुर्गया अङ्गषोढा प्रकीर्त्तिता ॥ ताराया कालिकायाश्च उन्मुख्याश्च तथा परा । कृतेऽस्मिन्न्यासवर्ये तु सर्वं पापं प्रणश्यति । ततस्तत्त्वन्यासः यथा मूलं त्रिखण्डं विधाय प्रथमखण्डांते ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहेति पादादिनाभिपर्यंतं । द्वितीयखण्डांते ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहेति नाभ्यादिहृदयांतं । तृतीयखण्डान्ते ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहेति हृदयादिशिरःपर्यंतं न्यसेत् । तदुक्तं स्वतंत्रे । मूलविद्यात्रिखण्डांते प्रणवाद्यैर्यथाविधि ॥ आत्मविद्या शिवैस्तत्त्वैस्तत्त्वन्यासं समाचरेत् ॥ ४ ॥

फिर षोढान्यास करना चाहिये । वीरतन्त्रमें लिखा है कि प्रथम तो केवल मातृका न्यास करे अनन्तर पुनर्वार सब मातृकावर्णोंको ॐ इस मन्त्रसे पुटित करके मातृका न्यासके स्थानमें न्यास करे और मातृकावर्णद्वारा ॐ इस मन्त्रको पुटित करके न्यास करे । यथा ललाटमें ॐ अं ॐ नमः मुखमें ॐ आं ॐ नमः इत्यादि और ललाटमें अं ॐ अं नमः मुखमें आं ॐ आं नमः इत्यादि । फिर श्रीबीज (श्रीं) वर्णद्वारा समस्त मातृकावर्णको पुटित करके उसी प्रकार मातृकान्यासोक्त

स्थानमें न्यास करे और समस्त मातृकावर्णद्वारा इस श्रीबीजको पुटित करके पूर्ववत् न्यास करना चाहिये । यथा ललाटमें श्रीं अं श्रीं नमः मुखमें श्रीं आं श्रीं नमः इत्यादि और ललाटमें अं श्रीं अं नमः मुखमें आं श्रीं आं नमः इत्यादि । अनन्तर कामबीज (क्लीं) द्वारा समस्त मातृका वर्णको पुटित करके मातृका न्यासके स्थानमें और मातृका वर्णद्वारा कामबीज (क्लीं) को पुटित करके पूर्ववत् न्यास करना चाहिये । यथा ललाटमें क्लीं अं क्लीं नमः, मुखमें क्लीं आं क्लीं नमः इत्यादि । एवं ललाटमें अं क्लीं अं नमः, मुखमें आं क्लीं आं नमः इत्यादि । इसी प्रकार शक्तिबीज ह्रीं द्वारा समस्त मातृका वर्णको पुटित करके मातृका न्यासके स्थानमें और मातृका वर्ण द्वारा ह्रीं इस बीजको पुटित करके इन सब स्थानोंमें न्यास करना चाहिये । यथा ललाटमें ह्रीं अं ह्रीं नमः । मुखमें ह्रीं आं ह्रीं नमः इत्यादि एवं ललाटमें अं ह्रीं अं नमः, मुखमें आं ह्रीं आं नमः इत्यादि इसके पीछे ललाटमें क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं ॡं क्रीं क्रीं नमः । मुखमें क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं ॡं क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं ॡं क्रीं क्रीं नमः इत्यादि एवं ललाटमें ऋं ॠं लृं ॡं क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं ॡं नमः, मुखमें ऋं ॠं लृं ॡं क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं ॡं नमः इत्यादि प्रकारसे मातृका न्यासके स्थानमें न्यास करे । फिर मूलमन्त्रके द्वारा मातृकावर्णको पुटित करके और मातृकावर्णके द्वारा मूल मन्त्र पुटित करके पूर्वोक्त स्थानमें न्यास करना चाहिये । यथा-ललाटमें क्रीं अं क्रीं नमः, मुखमें क्रीं आं क्रीं नमः इत्यादि और ललाटमें अं क्रीं अं नमः, मुखमें आं क्रीं आं नमः इत्यादि । इस प्रकार

अनुलोम विलोमसे न्यास करके मूलमंत्रके द्वारा एक सौ आठ वार व्यापक न्यास करना चाहिये। तारादेवीकी पूजामेंभी इसी प्रकार षोडान्यास किया जाता है। उक्त प्रकारसे तारा कालिका उन्मुखी देवीकी पूजामें षोढान्यास करने पर सब पापोंका नाश हो जाता है। फिर तत्त्व न्यास करना चाहिये। पूर्वोक्त बाईस अक्षरवाले मन्त्रको तीन भागमें बांट लेवे। तो प्रथम खण्डमें सात अक्षर दूसरे खण्डमें छः अक्षर और तीसरे खण्डमें नौ अक्षर होंगे। प्रथम खण्डके अन्तमें ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा, दूसरे खण्डके अन्तमें ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा और तीसरे खण्डके अन्तमें ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा; यह कहकर न्यास करे अर्थात् क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा इस मंत्रके द्वारा चरणोंसे नाभिपर्यन्त दक्षिणे कालिके ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा इस मंत्र द्वारा नाभिसे हृदय पर्यंत क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा ॐ इस मन्त्र द्वारा हृदयसे मस्तक पर्यन्त न्यास करे स्वतंत्र तंत्रमें ऐसाही लिखा है ॥ ४ ॥

अथ बीजन्यासः।

तदुक्तं कुमारीकल्पे। ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्ये ललाटे नाभिदेशके। गुह्ये वक्त्रे च सर्वाङ्गे सप्तबीजं क्रमान्न्यसेत्। तद्यथा आद्यबीजं ब्रह्मरन्ध्रे। द्वितीयबीजं भ्रूमध्ये। तृतीयबीजं ललाटे। चतुर्थबीजं नाभौ। पञ्चमबीजं गुह्ये षष्ठबीजं वक्त्रे। सप्तमबीजं सर्वांगे। एतत्त्रयं काम्यम्। ततो मूलेन सप्तधा व्यापकं कृत्वा यथाविधि मुद्रां प्रदर्श्य ध्यायेत्॥ तद्या कालीतंत्रे। करालव-

दनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् । कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ सद्यश्छिन्नशिरः खड्ग वामाधोर्ध्वकरांबुजाम् । अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम् ॥ महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगंबरीम् । कण्ठावसक्तमुण्डाली गलद्रुधिरचर्चिताम् ॥ कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम् । घोरदंष्ट्रां करालास्यां पीनोन्नतपयोधराम् शवानां ॥ करसंघातैः कृत काञ्चीं हसन्मुखीम् । सृक्कद्वयगलद्रक्तधाराविस्फुरिताननाम् ॥ घोररावां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम् । बालार्कमण्डलाकारलोचनत्रितयान्विताम् ॥ दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तालम्बिकचोच्चयाम् । शवरूपमहादेव हृदयोपरि संस्थिताम् ॥ शिवाभिर्घोररावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम् ॥ सुखप्रसन्नवदनांस्मेराननसरोरुहाम् । एवं संचिन्तयेत्कालीं सर्वकामसमृद्धिदाम् ॥ शवयुग्मेति घोरबाणावतंसेति प्रेतकर्णवतंसेति च । शकुन्तपक्षसंयुक्तबाणकर्णविभूषिताम् । विगतासुकिशोराभ्यां कृतकर्णावतंसिनीमिति दर्शनादुभयमेव पाठः ॥ ८ ॥

इसके पीछे बीजन्यास करना चाहिये । यथा ब्रह्मरन्ध्रमें क्रीं नमः, भ्रूमध्यमें क्रीं नमः, ललाटमें क्रीं नमः, नाभिमें हुं नमः, गुह्यमें हुं नमः, मुखमें ह्रीं नमः, सर्वांगमें ह्रीं नमः; पूर्वोक्त षोढा न्यास तत्वन्यास और बीजन्यास यह तीनों न्यास काम्य अर्थात नित्य पूजामें उक्त तीनों न्यासके विना किये भी पूजा अंगहीन

नहीं होती। अनन्तर मूलमन्त्रसे सात बार व्यापकन्यास करके यथाविधि मुद्राप्रदर्शनपूर्वक ध्यान करे। कालीतन्त्रमें ध्यान लिखा है यथा दक्षिणकालिका देवी करालवदना भयंकराकृति खुले बालवाली और चार भुजावाली हैं, उनके गलेमें मुण्डमाला और बांई ओरवाले निचले हाथमें तत्कालका काटा हुआ शिर और ऊपरके हाथोंमें खड्ग तथा दाहिनी ओरके निचले हाथमें अभय और ऊपरके हाथमें वरमुद्रा विद्यमान है। देवी गाढ मेघके समान श्यामवर्ण और दिगम्बरी अर्थात् नग्न हैं। देवीके गलेमें जो मुण्डमाला है उससे रुधिरकी धारा टपककर सर्वांगको भिजो रही है। उनके कानोंमें दो शवशिशु (मृतक बालकोंके शरीर) भूषणरूपसे विराजमान हैं इससे देवीकी आकृति महा-भयानक होगई है। दांतोंकी पांति अत्यन्त भयंकर, दोनों स्तन स्थूल तथा ऊंचे और शवहस्तनिर्मित (मुरदेके हाथोंकी बनी) कौंधनी कमरमें पडी हुई है। कालिकादेवी हास्यमुखी है। उनके दोनों होठोंके प्रान्तसे निकलती हुई रुधिरधाराद्वारा वदनमण्डल समुज्ज्वल हो रहा है। देवीका शब्द अतिशय गंभीर है। यह सदा श्मशानमें वास करती हैं। इनके तीनों नेत्र नवीन उदय हुए सूर्यमण्डलकी समान उज्ज्वल है, दांतोंकी पांति ऊंची और बाहरको निकली हुई है। और केशपाश दक्षिणव्यापी और खुले हुए हैं। वे शवरूपी महादेवोपर अवस्थित हैं। उनके चारों ओर गीदडियां भयंकर शब्द करती फिरती हैं। वे महाकालके सहित विपरीतभावसे रतिमें आसक्त हैं, देवीका मुखकमल सुप्रसन्न और हास्ययुक्त है इस प्रकारसे सर्व कामना और समृद्धि देनेवाली देवी कालीका ध्यान करना चाहिये ॥ ५ ॥

ध्यानान्तरं स्वतंत्रे ।

अञ्जननाद्रिनिभां देवीं करालवदनां शिवाम् । मुण्डमालावलीकीर्णांमुक्तकेशीं स्मिताननाम् ॥ महाकालहृदम्भोजस्थितां पीनपयोधराम् । विपरीतरतासक्तां घोरदंष्ट्रां शिवैः सह । नागयज्ञोपवीताढ्या चन्द्रार्द्धकृतशेखराम् । सर्वालङ्कारसंयुक्तां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ मृतहस्तसहस्रैस्तु बद्धकाञ्चीं दिगंशुकाम् । शिवाकोटिसहस्रैस्तु योगिनीभिर्विराजिताम् ॥ रक्तपूर्णमुखांभोजां मद्यपानप्रमत्तिकाम् । बिह्नचर्कशशिनेत्रां च रक्तविस्फुरिताननाम् ॥ विगतासुकिशोराभ्यां कृतकर्णावतंसिनीम् । कर्णावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिर चर्चिताम् ॥ श्मशानवह्निमध्यस्थां ब्रह्मकेशववन्दिताम् । सद्यःकृतशिरःखङ्गवराभीतिकराम्बुजाम् ॥ एवं ध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य शङ्खस्थापनं कुर्यात् ॥ तद्यथा । स्ववामे भूमौ हुङ्कारगर्भं त्रिकोणं विलिख्यार्घ्यपात्रं संस्थाप्य मूलेन शुद्धजलादिना शङ्खादिपात्रमापूर्य गन्धादिकं दत्त्वा ॐ गङ्गे चेत्यादिना तीर्थमावाह्य, मँ वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः इत्याधारं, अँ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इति शङ्खम्, उँ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः इति जलं सम्पूज्य, ॐ ह्रां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं शिखायै वषट्, ॐ ह्रैं कवचाय हुँ इत्यग्नीशासुरवायुषु । अग्रे ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, चतुर्दिक्षु ॐ ह्रः अस्त्राय फट् । इत्यभ्यर्च्य तदु-

परि मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य, मूलं दशधा जप्त्वा, धेनुमुद्रयामृतीकृत्यास्त्रेण संरक्ष्य, भूतिनीयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, तज्जलं किञ्चित्प्रोक्षणीपात्रे निक्षिप्य, मूलेन तेनोदकेनात्मानं पूजोपकरणं चाभ्युक्ष्य, पीठपूजामारभेत् ॥६॥

स्वतन्त्रतन्त्रमें अन्य प्रकार ध्यान लिखा है यथा-कालिका देवी अञ्जनपर्वतकी समान कृष्णवर्णवाली, इनका मुख फैला हुआ, गलेमें मुंडोंकी माला, बाल खोले हुए, मुख हास्ययुक्त, दोनों स्तन स्थूल और ऊंचे हैं। यह महाकालके हृदयकमलपर विपरीतरतासक्त और सर्पनिर्मित यज्ञोपवीत धारण किये हुए हैं। इनके दांत अत्यन्त भयंकर और कपालमें अर्द्धचन्द्र है। देवी सब प्रकारके गहने और मुण्डमालासे विभूषित हैं। देवीने मुरदेके हजार हाथों द्वारा कमरमें कोंधनी (तगडी) बनाकर बांधी है। यह देवी करोड गीदडियां और हजारों योगिनीयोंके द्वारा सेवित और नग्न हैं। इसका मुखकमल रक्तद्वारा परिपूर्ण और देवी मद्यपानसे मत्त हैं। अग्नि सूर्य और चन्द्र यह तीनों देवीके नेत्र स्थानीय हैं, इनका मुखमण्डल लालवर्ण है। देवीने दो मृतक बालकोंका कानोंमें गहना धारण किया है। इनके कण्ठमें पडी हुई मुण्डमालासे रुधिर टपककर उसने सर्वांगको भिजो दिया है। यह सर्वकाल श्मशानकी अग्निमें वास करती है। ब्रह्मा और विष्णु इनकी आराधना किया करते हैं। इनके चार हाथोंमें सद्यश्छिन्न मुण्ड (तत्कालका काटा हुआ शिर), खड्ग, वर और अभयमुद्रा विद्यमान है इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारसे पूजा और अर्घ्य स्थापन करे। अर्घ्य स्थापन करनेकी

रीति मूलमें स्पष्ट रूपसे लिखी है देखनेसे सरलतापूर्वक समझमें आ जायगी। मूललिखित रीतिके अनुसार अर्घ्य स्थापन करके पीठपूजा आरंभ करे ॥ ६ ॥

अस्याः पूजायन्त्रम् ।

आदौ बिन्दुं स्वबीजं भुवनेशीं च विलिख्य, ततस्त्रिकोणं तद्बाह्ये त्रिकोणचतुष्टयं वृत्तमष्टदलं पद्मं पुनर्वृत्तं चतुर्द्वारात्मकं भूगृहं लिखेत् । तदुक्तं कालीतंत्रे । आदौ त्रिकोणमालिख्य त्रिकोणं तद्बहिर्लिखेत् । ततो वै विलिखेन्मंत्री त्रिकोणत्रयमुत्तमम् ॥ ततो वृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः । वृत्तं विलिख्य विधिवल्लिखेद्भूपुरमेककम् ॥ कुमारीकल्पे ॥ मध्ये तु बैन्दवं चक्रं बीजमायाविभूषितमिति । अत्र विशेषाधारो मुण्डमालायाम् ॥ ताम्रपात्रे कपाले वा श्मशानकाष्ठनिर्मिते । शनिभौमदिने वापि शरीरे मृतसम्भवे ॥ स्वर्णे रौप्येऽथ लौहे वा चक्रं कार्यं विधानतः ॥ यन्त्रान्तरमाह तन्त्रे ॥ शक्त्यग्निभ्यां च षट्कोणं शक्तिभिश्च नवात्मकम् । पद्मे वसुदले भूमिपूश्चतुर्द्वारसंयुतेति ॥ ७ ॥

अब पूजाका यन्त्र कहा जाता है प्रथमतः बिन्दु फिर निज बिन्दु (क्रीं) पीछे भुवनेश्वरी बीज (ह्रीं) लिखकर तिसके बाहर त्रिकोण अंकित करना चाहिये फिर उसके बाहर चार त्रिकोण अंकित करके वृत्त (गोलाकृति) अष्टदलपद्म और पुनर्वार वृत्त अंकित करना उचित है उसके बाहर चतुर्द्वार अंकित करके यन्त्र प्रस्तुत करे इस प्रकार यन्त्र अंकित करनेकी प्रणाली (रीति)

कालीतन्त्र और कुमारीकल्पमें लिखी है। यन्त्र अंकनसंबन्धी पात्रका विषय मुण्डमालातन्त्रमें लिखा है कि, तांबेके पत्तरपर, मनुष्यकी खोपडीकी हड्डीपर, श्मशानके काष्ठपर, शनि और मंगलवारमें मुरदेके शरीरपर, सुवर्णके पात्रपर, दहीके पात्रपर अथवा लोहेके पात्रपर यथाविधि यन्त्र प्रस्तुत करना चाहिये। यन्त्र निर्माण करनेकी दूसरी रीति यह है यथा-प्रथम षट्कोण अंकित करके उसके बाहर तीन त्रिकोण अंकित करे उसके बाहर वृत्त अष्टदल पद्म और चतुर्द्वार लिखकर यन्त्र प्रस्तुत कर लेना चाहिये ॥ ७ ॥

ततः पीठपूजा।

कुमारीकल्पे। पीठपूजां ततः कुर्यादाधारशक्तिपूर्वकम्। प्रकृतिं कमठं चैव शेषं पृथ्वीं तथैव च ॥ सुधाम्बुधिं मणिद्वीपं चिन्तामणिगृहं तथा। श्मशानं पारिजातं च तन्मूले रत्नवेदिकाम् ॥ तस्योपरि मणेः पीठं न्यसेत्साधकसत्तमः। चतुर्दिक्षुमुनीन्देवान् शिवांश्च शवमुण्डकान् ॥ धर्माद्यधर्मादींश्चेत्यादि ह्रीं ज्ञानात्मने नमः इत्यन्तं सम्पूज्य, केशरेषु पूर्वादिक्रमेण पूजयेत्। इच्छा ज्ञानक्रिया चैव कामिनी कामदायिनी। रती रतिप्रियानन्दा मध्ये चैव मनोन्मनी ॥ सर्वत्र प्रणवादिनमोऽन्तेन पूजयेत्। तदुपरि हसौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः। पीठस्योत्तरे गुरुपंक्तिपूजा ॥ ततः पुनर्ध्यात्वा, पुष्पाञ्जलावानीय, मूलमन्त्रकल्पितमूर्त्तावावाहयेत। ॐ देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते। याव-

त्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव ॥ ततो मूलमुच्चार्यामुकि देवि इहावह इहावह इह तिष्ठ तिष्ठ इह सन्निधेहि सन्निहिता भव (क) ततो हुमित्यैव गुण्ठ्यांगमन्त्रैः सकलीकृत्य, परमीकरणमुद्रया परमीकृत्य, भूतिन्याकर्षणींयोनिमुद्राःप्रदर्श्य, प्राणप्रतिष्ठां विधाय, मूलेन पाद्यादिभिः पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः आदौ मूलमुच्चार्य एतत्पाद्यं अमुकदेवतायै नमः। एवमर्घ्यं स्वाहा। इदमाचमनीयं स्वधा। स्नानीयं निवेदयामि। पुनराचमनीयं स्वधा। एष गन्धो नमः एतानि पुष्पाणि वौषट्। ततो मूलेन पञ्चपुष्पाञ्जलिं दत्त्वा। धूपदीपौ दद्यात्। वनस्पतीत्यादिपठन्मूलमुच्चार्य एष धूपो नमः। दीपः मन्त्रस्तु। सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ मूलमुच्चार्य एष दीपो नमः ततः ॐ जयध्वनिमन्त्रमातः स्वाहेति घंटां सम्पूज्य, वामहस्तेन वादयन् नीचैर्धूपं दत्त्वा, यथोपपन्नं नैवेद्यं दद्यात्। तत्र आवरणपूजां कुर्यात्। श्री अमुकि देवि आवरणं ते पूजयामि इत्याज्ञां गृहीत्वा केशरेषु अग्न्यादिकोणेषु ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुँ। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। चतुर्दिक्षु ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। बहिः षट्कोणे ॐ काल्यै नमः। सर्वत्र प्रणवादिनमोन्तेन पूजयेत्। कपालिन्यै कुल्वायै कुरुकुल्वायै विरोधिन्यै विप्रचित्तायै उग्रायै उग्रप्रभायै इत्यन्तं

त्र्यस्रे। ॐ नीलायै एवं धनायै बलाकायै। इति द्वितीयत्र्यस्रे। एवं मात्रायै मुद्रायै। इति तृतीयत्र्यस्रे॥ सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमालाविभूषिताः। तर्जनीं वामहस्तेन धारयन्त्यः शुचिस्मिताः॥ दिगंबरा हसन्मुख्यः स्वस्ववाहनभूषिताः॥ एवं ध्यात्वा अर्चयेत्। ततोऽष्टपत्रेषु पूर्वादिक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः, एवं नारायण्यै माहेश्वर्य्यै चामुण्डायै कौमार्य्यै अपराजितायै वाराह्यै नारसिंह्यै। एता गन्धादिभिः पूजयेत्। यत्राग्रे असिताङ्गादिभैरवान् पूजयेत्। ततो मूलेन पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा पाद्यादिना महाकालं पूजयेत्। तस्य ध्यानम्। महाकालं यजेद्देव्या दक्षिणे धूम्रवर्णकम्। बिभ्रतं दण्डखट्वाङ्गौ दंष्ट्राभीममुखं शिशुम्॥ व्याघ्रचर्मावृतकटिं तुन्दिलं रक्तवाससम्। त्रिनेत्रमूर्द्धकेशं च मुण्डमालाविभूषितम्॥ जटाभारलसच्चन्द्रखण्डमुग्रं ज्वलन्निभम्॥ तथा च कुमारीकल्पे। देव्यास्तु दक्षिणे भागे महाकालं प्रपूजयेत्। क्षुँ क्ष्रौं याँ राँ लाँ वाँ क्रों महाकालभैरव सर्वविघ्नान्नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा। (क) इत्यनेन पाद्यादिभिराराध्य त्रिस्तर्पयित्वा मूलेन देवीं पंचोपचारैः पूजयेत्। तथा च कालीतन्त्रे॥ महाकालं यजेद्यत्नात्पश्चाद्देवीं प्रपूजयेत्। कालीकल्पे॥ कवचं क्ष्रौं समुद्धृत्य याँ राँ लाँ वाँ च क्रोन्ततः। महाकालभैरवेति सर्वविघ्नान्नाशयेति च॥ नाशयेति पुनः प्रोच्य मायां लक्ष्मीं समुद्धरेत्। फट् स्वाहया

समायुक्तो मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ॥ ततो देव्या अस्त्रं पूजयेत् । तथा च कालीहृदये ॥ देवीवामोर्द्धाधोहस्ते खड्गं मुण्डं च पूजयेत् । देव्या दक्षहस्तोर्द्धाधः पूजयेदभयं वरम् ॥ ततो देवीं ध्यात्वा यथाशक्ति जप्त्वा, गुह्यातीत्यादिना देव्या वामहस्ते जपं समर्प्य, आत्मसमर्पणं कुर्यात् । तथा च स्वतन्त्रे ॥ ततः पुनर्मूलदेवीं मुद्रातर्पणपूजनैः । अर्चयित्वा जपं कृत्वा नत्वा विसर्जयेद्धृदि ॥ जपकाले च कर्पूरयुक्ता जिह्वा कार्या ॥ तथा च । कर्पूराढ्या सदा जिह्वा कर्त्तव्या जपकर्मणि । इति वीश्वसारवचनात् इदं काम्यजप एवेति ॥ ततः स्तुत्वा प्रदक्षिणीकृत्याष्टाङ्गप्रणामं कृत्वा श्रीजगन्मङ्गलं नाम कवचं पठेत् । तत आवरणदेवता देव्या अङ्गे विलाप्य संहारमुद्रया अमुकि देवि क्षमस्व इति विसृज्य, तत्तेजः पुष्पेण समं स्वहृद्यारोपयेत् । ॐ उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतवासिनि । ब्रह्मयोनिसमुत्पन्ने गच्छ देवि ममान्तरमिति मन्त्रेण (ख) ॥ ततस्तन्नैवेद्यं किञ्चिदुच्छिष्टचाण्डालिन्यै नमः इत्यैशान्यां दिशि दत्त्वा, शेषमिष्टेभ्यो दत्त्वा, किञ्चित्स्वीकृत्य, पादोदकं पीत्वा, निर्माल्यं शिरसि विधृत्य, यथेच्छं विहरेदिति ॥ ततो यन्त्रलेपं वामहस्ते कृत्वा सव्यहस्तकनिष्ठया मायाबीजं विलिख्य तया तिलकं कुर्यात् । तथा च । वामे कृत्वा यन्त्रलेपं मायां सव्यकनिष्ठया ॥ विलिख्य तिलकं कुर्यान्मत्रेणानेन साधकः ॥ ॐ यं यं स्पृशामि पादाभ्यां

यो मां पश्यति चक्षुषा। स एव दासतां यातु राजानो दुष्टदस्यवः (ग) ततो मूलेनाष्टोत्तरशताभिमन्त्रितं पुष्पं चंदनं च धृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत्। सर्वसिद्धियुतो भूत्वा भैरवो वत्सराद्भवेत्। अस्य पुरश्चरणं लक्षद्वय-जपः। तथा च कालीतन्त्रे॥ लक्षमेकं जपेन्मंत्री हविष्याशी दिवाशुचिः। रात्रौ ताम्बूलपूरास्यः शय्यायां लक्षमानतः॥ व्यवस्थामाह स्वतन्त्रे॥ दिवा लक्षं शुचिर्भूत्वा हविश्याशी जपेन्नरः। ततस्तत्तद्दशांशेन होमयेद्धविषा प्रिये॥ अत्राङ्गस्य कालान्तरमाह नीलसारस्वते॥ लक्षमेकं जपेन्मत्रं हविष्याशी दिवाशुचिः॥ अशुचिश्च तथा रात्रौ लक्षमेकं तथैव च। दशांशं होमयेन्मंत्री तर्पयेदभिषेचयेत्॥ इति साम्प्रदायिकाः। वस्तुतस्तु कुमारीकल्पे॥ लक्षमेकं जपेद्विद्यां हविष्याशी दिवा शुचिः। रात्रौ तांम्बूलपूरास्यः शय्यायां लक्षमानतः॥ रात्रिजपे तु कालो मुण्डमालायाम्॥ गते तु प्रथमे यामे तृतीयप्रहरावधि। निशायां तु प्रजप्तव्यं रात्रिशेषे जपेन्नहि॥ एवं लक्षद्वयं जप्त्वा तद्दशांशेन मन्त्रवित्। अयुतं होमयेद्देवि दिवारात्रिविशेषतः। तेन दिवा लक्षं जप्त्वा तद्दशांशं होमं कुर्यात् रात्रौ लक्षं जप्त्वा रात्रौ तद्दशाशं होमं कुर्यादिति रहस्यार्थः॥ द्विजातीनां च सर्वेषां दिवाविधिरिहोच्यते। शूद्राणां च तथा प्रोक्तं रात्राविष्टं महाफलम्॥ अन्यत्र च॥ दिवैव प्रजपेन्मन्त्रं न तु रात्रौ कदाचन। श्यामायाः पुरश्चरणाङ्गब्राह्मणभोजनं हवि-

ष्यान्नेन कारयितव्यं तथा च विश्वसारे ॥ लक्षमेकं जपे-द्दिवां हविष्याशी जितेन्द्रियः ततस्तु तद्दशांनेन होमये-द्धविषा प्रिये ॥ तर्पयेत्तद्दशांनेन तीर्थतोयेन पार्वतीम् । मधुना वा सितामिश्रतोयेन परमेश्वरि ॥ देवीं चाभिषि-चेत्तोयैस्तर्पणस्य दशांशतः। तद्दशांशं हविष्यान्नैर्भक्तितो भोजयेद्द्विजान् ॥ कालीमन्त्रविदो मन्त्री दक्षिणां गुरवे दिशेदिति । पाशवं कथितं कल्पं शृणु वीरं ततः प्रिये। रात्रौ ताम्बूलपूरास्यः शय्यायां लक्षमानतः ॥ जप्त्वा समाहितो मन्त्री होमयेत्कल्पितानले॥ कुकालीकुलार्णवे। पाशवेन तु कल्पेन लक्षं जप्यात्समाहितः । दिव्यगुरुमु-खाल्लब्ध्वा कालिकां दिव्यरूपिणीम्॥ लक्षं जप्यात्सदा-मन्त्री वीरकल्पेन साधकः ॥ विश्वसारे ॥ प्रजपेत्परया भक्त्या लक्षमेकं दिवानिशि। यत्तु कुमारीकल्पे ॥ लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हविष्याशीदिवा शुचिः । रात्रौ ताम्बूलपूरा-स्यः शय्यायां लक्षमानतः ॥ एवं लक्षद्वयं जप्त्वा तद्द-शांशेन मन्त्रवित् । इति वचनाल्लक्षद्वयस्य विशिष्टस्य पुरश्चरणमिति । तन्न पूर्वोक्तवचनविरोधात् । एतद्वचन-स्य पुरश्चरणद्वये तात्पर्यम् ॥ ८ ॥

फिर पीठपूजा करनी चाहिये यथा कर्णिकामें ॐ आधारशक्तये नमः, ॐ प्रकृत्यै नमः, ॐ कूर्माय नमः, ॐ शेषाय नमः, ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ सुधांबुधये नमः, ॐ मणिद्वीपाय नमः, ॐ चिन्तामणिगृहाय नमः, ॐ श्मशानाय नमः, ॐ पारिजाताय नमः । उसके मूलमें ॐ रत्नवेदिकायै नमः । उसके ऊपर

ॐ मणिपीठाय नमः। चारों दिशामें ॐ मुनिभ्यो नमः। ॐ देवेभ्यो नमः, ॐ शिवेभ्यो नमः। ॐ शवमुण्डेभ्यो नमः, ॐ धर्माय नमः, ॐ ज्ञानाय नमः, ॐ वैराग्याय नमः, ॐ ऐश्वर्याय नमः, ॐ अज्ञानाय नमः, ॐ अवैराग्याय नमः, ॐ अनैश्वर्याय नमः, ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। केशरमें पूर्वादिक्रमसे ॐ इच्छायै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ कामिन्यै नमः, ॐ कामदायिन्यै नमः, ॐ रतिप्रियायै नमः, ॐ नन्दनायै नमः, मध्यमें ॐ मनोन्मन्यै नमः, उसके ऊपर ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः इस प्रकार पीठपूजा करके पीठके उत्तरभागमें ॐ गुरुभ्यो नमः, ॐ परमगुरुभ्यो नमः, ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः, इस प्रकारसे पीठपूजा करनी चाहिये अनन्तर पुनर्वार ध्यान करके पुष्पाञ्जलिग्रहणपूर्वक मूलमन्त्र कल्पित मूर्तिमें ॐ देवेशि भक्तिसुलभे इत्यादि (क) चिह्नित मन्त्रसे आवाहन करे। पीछे सब कही हुई मुद्रा प्रदान करके प्राणप्रतिष्ठादि मूललिखित विधानसे पाद्यादि यथासंभव उपचारद्वारा पूजा करनी चाहिये। फिर आवरणपूजा करे। आवरण देवताका नाम और पूजाकी प्रणाली (रीति) मूलमें स्पष्टरूपसे लिखी है, उसको देखकर आवरणदेवताकी पूजा पञ्चोपचार अर्थात् गन्ध पुष्प धूप दीप और नैवेद्यद्वारा करे। फिर पत्रके अग्रभागमें ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः, ॐ रुरुभैरवाय नमः, ॐ चण्डभैरवाय नमः, ॐ क्रोधभैरवाय नमः, ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः, ॐ कपालिभैरवाय नमः, ॐ भीषणभैरवाय नमः, ॐ संहारभैरवाय नमः; इन आठ भैरवोंकी पूजा करके मूलमंत्र

उच्चारणपूर्वक पांच पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हुआ पाद्यादिद्वारा महाकालभैरवकी पूजा करनी चाहिये । इनका ध्यान यह है महाकाल भैरव देवीके दक्षिण भागमें विद्यमान हैं । यह धूम्रवर्ण और दण्ड तथा चिताकाष्ठधारी है, इनका मुखमण्डल दांतोंकी कराल पांतिसे महाभयानक हो उठा है । कमर व्याघ्रकी खालसे ढक रही है, उदर अत्यन्त स्थूल है, पहरावा लाल वस्त्र नेत्र तीन और बाल इनके ऊपरको उठे हुए हैं । गलेमें मुण्डोंकी माला पडी हुई हैं और मस्तकके चारों ओर सब जटायें बिखरी हुई पडी हैं। उसमें कपालका अर्द्धचन्द्र प्रकाशित हो रहा है । यह महाउग्रमूर्ति और इनके शरीरकी कांति अग्निके समान जाज्वल्यमान है । इस प्रकार महाकाल भैरवका ध्यान करे और हुँ क्षौं इत्यादि (क) चिह्नित मंत्रसे पाद्यादि उपचार द्वारा यथाविधि पूजा तर्पण और मूलसे गंधादि पञ्चोपचार द्वारा देवीकी पूजा करनी चाहिये । महाकाल भैरवीको पूजा और मन्त्रोद्धारकी प्रणाली इत्यादि सब विषय कालीकल्पमें लिखा है । फिर देवीकी अस्त्र पूजा करनी चाहिये । देवीके बांई ओरके ऊपरी हस्तमें ॐ खड्गाय नमः, नीचेके हाथमें ॐ मुंडाय नमः, दक्षिण भागके ऊपरी हाथमें ॐ अभयाय नमः, निचले हाथमें ॐ वराय नमः यह अस्त्रपूजा करके देवीका ध्यान करता हुआ यथाशक्ति मूलमन्त्र जपकर ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ इस मंत्रसे देवीके बांये हाथमें जप समर्पण करना चाहिये फिर आत्मसमर्पण करे । स्वतंत्रतंत्रमें लिखा है कि मुद्रा तर्पणादिद्वारा मूलदेवीकी पूजा,

मंत्रजप और नमस्कार करके अपने हृदयमें देवीको विसर्जन करना चाहिये। जिस समय किसी कार्यकी सिद्धिके लिये जप करे, तब मुखमें कपूर रखकर कर्पूरयुक्त जिह्वासे जप करे। फिर देवीकी स्तुति करके प्रदक्षिणापूर्वक अष्टाङ्गप्रणाम करे और फिर जगन्मङ्गल नामक कवचका पाठ करना चाहिये। और देवीके अंगमें समस्त आवरणदेवता विलीन करके संहारमुद्राद्वारा अमुकि देवी क्षमस्व यह कहकर विसर्जन करे। ॐ उत्तरे शिखरे देवि इत्यादि (ख) चिह्नित मन्त्रसे तेजस्वरूप देवताको पुष्पके सहित अपने हृदयमें आरोपित करे। अनंतर निवेदन की हुई नैवेद्यका कुछेक अंश लेकर ॐ उच्छिष्टचाण्डालिन्यै नमः इस मन्त्रसे ईशानकोणमें प्रदान करके शेष अंश प्रियव्यक्तिगणोंको प्रदानपूर्वक अपने आप भी कुछ थोडासा प्रसाद ग्रहण करे। फिर देवीका चरणामृत पान और मस्तकपर निर्माल्य धारण करके अपनी इच्छानुसार विचरण करे। इसके पीछे यन्त्रलेपन चन्दन बांयें हाथमें लेकर उसमें दक्षिण हाथकी कनिष्ठांगुलीद्वारा मायाबीज ह्रीं लिखकर उस चन्दन द्वारा ॐ यं यं स्पृशामि पादाभ्यां इत्यादि (ग) चिह्नित मन्त्रसे कपालमें तिलक करे फिर अष्टोत्तर शताभिमंत्रित पुष्प धारण करे। इस प्रकार एक वर्षपर्यंत देवीकी आराधना करनेपर साधक सर्व सिद्धियुक्त होकर भैरवके समान हो जाता है और त्रिभुवनको वशीभूत कर सकता है। इस मन्त्रके पुरश्चरणमें दो लाख जप करना चाहिये। कालीतन्त्रमें लिखा है कि, साधक दिनमें पवित्र और हविष्याशी होकर एक लाख

मन्त्र जपे और रात्रिकालमें तांबूलपूरित मुखसे शय्यापर बैठकर एक लाख जप करे और जपके पीछे होमका दशांश घृतसे होम करना चाहिये। स्वतंत्र तंत्रमें इस दो लाख जपकी व्यवस्था की गई है कि दिनमें पवित्र और हविष्याशी होकर एक लाख जप करे और हविके द्वारा उसका दशांश होम करे इस पुरश्चरणके अंग जपका वर्णन नीलसारस्वतमें लिखा है कि दिनमें शुद्ध और हविष्याशी होकर एक लाख जप करे और रात्रिमें अशुद्ध भावसे एक लाख जपपूर्वक उसका दशांश होम तर्पण और अभिषेक करे यह साम्प्रदायिक पुरुषोंने कहा है और यही बात कुमारीकल्पमें भी लिखी है। रात्रिजपका विशेष नियम यह है रात्रिके दूसरे पहरसे तीसरे पहरतक मन्त्र जपना चाहिये किंतु रात्रिके शेषमें जप न करे। दिनमें एक लाख जप करके दिनमेंही दश हजार होम करे और रात्रिमें एक लाख जपकर रात्रिमेंही दश हजार होम करना चाहिये। जप होमादिके कार्यमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यके पक्षमें दिन और शूद्रके पक्षमें रात्रिकाल प्रशस्त है। अन्यान्य देवताओंके मन्त्र पुरश्चरणमें दिनमें ही जप करना चाहिये, कभी रातमें जप न करे। उस देवताके पुरश्चरणका अंगस्वरूप ब्राह्मणभोजन हविष्यान्नद्वारा करावे। विश्वसारमें लिखा है कि जपका दशांश होम होमका दशांश तर्पण और तर्पणका दशांश अभिषेक करना चाहिये। अभिषेक और तर्पणमें तीर्थफल है। मधु अथवा शर्करामिश्रित जलद्वारा कार्य करना उचित है और हविष्यान्न द्वारा अभिषेकका दशांश ब्राह्मणभोजन करना चाहिये फिर कालीमन्त्रविशारद साधक

गुरुको दक्षिणा प्रदान करके कार्यको सर्वांग परिपूर्ण करे। पुरश्चरणके विषयमें पश्चाचारविहित कल्प कहा गया। अब वीराचारविहित प्रणाली कही जाती है। वीराचाररत साधक रात्रिके समय शय्यापर बैठकर ताम्बूलपूरित मुखसे एक लाख जप करे और फिर सावधान चित्तसे होम करना चाहिये। पुरश्चरणविषयक अन्यान्य तन्त्रोंमें जो सब प्रमाण लिखे हैं वे सब प्रमाण यहां ग्रंथकारने उद्धृत किये हैं देखनेपर सब समझमें आ जांयगे॥८॥

अथ मन्त्रभेदाः।

वर्गाद्यं वह्निसंयुक्तं रतिबिन्दुविभूषितम्। एकाक्षरो महामंत्रः सर्वकामफलप्रदः॥ त्रिगुणा तु विशेषेण सर्वशास्त्र प्रबोधिनी॥ अनयोः पूजाप्रयोगः। प्रातःकृत्यादि प्राणायामान्तं विधाय, पूर्वोक्तऋषिछन्दोदेवता विन्यस्य, वर्णन्यासं कृत्वा, करांगन्यासौ कुर्यात्। यथा। ॐ क्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा इत्यादि। एवं ॐ क्राँ हृदयाय नमः इत्यादि। तथाच वीरतन्त्रे। दीर्घषट्कयुताद्येन प्रणवाद्येन कल्पयेत्। षडंगानि मनोरस्य जातियुक्तेन देशिकः॥ अन्यत्सर्वं पूर्ववत्कार्यम्॥ एकाक्षरस्य ध्यानं सिद्धेश्वरतन्त्रे। शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां वरप्रदाम्। हास्ययुक्तां त्रिनेत्रां च कपालकर्त्तृकाकराम्॥ मुक्तकेशीं ललज्जिह्वां पिबंतीं रुधिरं मुहुः। चतुर्बाहुयुतां देवीं वराभयकरां स्मरेत्॥ अनयोः पुरश्चरणं लक्षजपः। तथा च सिद्धेश्वरतन्त्रे। एवं ध्यात्वा

जपेन्मंत्रं लक्षमेकं विधानतः । तद्दशांशविधानेन होमयेत्साधकोत्तमः ॥ कुलचूडामणौ । एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं हविष्याशी दिवा शुचिः । लक्षं रात्रौ तथा लक्षं महाशौचपरायणः ॥ रात्रौ जपैकमात्रेण दक्षिणा सिद्धिदा भवेत् ॥ ९ ॥

अब दक्षिणकालिका देवीके अन्यान्य सब मन्त्र कहे जाते हैं। क्रीं यह एक एकाक्षर मन्त्र है, यह महामन्त्र सब अभिलाषित फल प्रदान करता है । ह्रीं यह एक दूसरा एकाक्षर मन्त्र है, इस मन्त्रसे देवीकी आराधना करनेपर साधक सब शास्त्रोंमें ज्ञानलाभ कर सकता है। इस मन्त्रकी पूजाप्रणाली यह है यथा–प्रथम सामान्य विधिके लिखे नियमानुसार प्रातःकृत्यादिसे लेकर प्राणायामतक कार्य करके पूर्वोक्त ऋष्यादिन्यास वर्णन्यास और कराङ्गन्यास करे । इन दोनों मन्त्रोंका कराङ्गन्यास यह है । यथा–ॐ क्राँ अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि। ॐ क्राँ हृदयाय नमः इत्यादि । अथवा ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि । ॐ ह्राँ हृदयाय नमः इत्यादि। इस पूजाके अन्यान्य सब कार्य पूर्वलिखित रीतिसे करने चाहिये। एकाक्षर मन्त्रके विषयमें सिद्धेश्वरतन्त्रोक्त ध्यान यह है। देवी शवारूढ अर्थात् मुरदे पर स्थित, महाभयानक आकृतिवाली, भयंकर दांतोंवाली, वर देनेमें निरत, हँसमुखी और तीन नेत्रवाली हैं । इनके हाथमें खोपडी और कतरनी विद्यमान हैं, बाल खुले और जीभ इनकी लहलहाती रहती है, यह वारंवार रुधिर (खून) पान करती हैं । इनके अन्य दोनों हाथोंमें वर और अभयमुद्रा है, देवीका इस प्रकार ध्यान करना

चाहिये। उक्त एकाक्षर दोनों मन्त्रके पुरश्चरणमें एक लाख जप करना उचित है। इस मन्त्रके पुरश्चरण सम्बन्धमें सिद्धेश्वरतन्त्रमें लिखा है कि देवीका ध्यान करके यथाविधि एक लाख मन्त्र जपे और विधानुसार जपका दशांश होम करे। कुलचूडामणिमें लिखा है कि हविष्याशी साधक दिनमें पवित्र होकर एक लाख मन्त्र जपे और रात्रिमें भी इसी प्रकार एक लाख मंत्र जपना चाहिये। रात्रिकालमें जप करनेपर दक्षिणकालिका देवी मंत्रकी सिद्धि प्रदान करती हैं ॥ ९ ॥

कालीतन्त्रे। विद्यारत्नं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने। मायाद्वयं कूर्चयुग्ममैन्द्रान्तं मादनत्रयम् ॥ मायाबिन्द्वीश्वरयुतं दक्षिणे कालिके पदम्। संहारक्रमयोगेन बीज सप्तकमुद्धरेत् ॥ एकविंशाक्षरो ज्ञेयस्ताराद्यः कालिका मनुः। इन्द्रस्य समीपम् ऐन्द्रं रेफः ॥ तथा च तन्त्रे। माये क्रोधौ त्रयः कामा वह्न्यन्ते रतिसंयुताः। बिन्दुयुक्ता महेशानि संबोधनपदद्वयम् ॥ सप्त बीजानि संहारैः स्वाहान्तः प्रणवादिकः ॥ इत्यत्र स्फुटमाह तथा च प्रणवं मायाद्वयं कूर्चद्वयं निजबीजत्रयं दक्षिणे कालिके निजबीजत्रयम्। कूर्चद्वयं मायाद्वयं इत्येकविंशाक्षरः। अस्याः पूजादिकं दक्षिणावत्कार्यम्। पुरश्चरणं तु लक्षजपः। तन्त्रोक्तत्वात्। होमस्तु तद्दशांशतः। विश्वसारे। स्वाहान्तश्च त्रयोविंशत्यक्षरो मन्त्रराजकः। विना प्रणवं देवेशि द्वाविंशत्यक्षरो भवेत् ॥ स्वाहां विना चैकविंशत्यक्षरः कामदो मनुः। विंशत्य-

र्णा महाविद्या स्वाहाप्रणववर्जिता ॥ ध्यानपूजादिकं सर्वं दक्षिणावदुपाचरेत् ॥ भैरवतन्त्रे । कामबीजद्वयं देवि दीर्घहुङ्कारमेव च । त्र्यक्षरी सा महाविद्या चामुण्डाकालिका स्मृता ॥ तन्त्रे । अथ वक्ष्ये महाविद्यां सिद्धविद्यां महोदयाम् । भैरवेण पुरा प्रोक्ता कालीहृदयसंज्ञिता ॥ अस्या ज्ञानप्रभावेण कलयामि जगत्त्रयम् । प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य हृल्लेखाबीजमुद्धरेत् ॥ रतिबीजं समुद्धृत्य पपञ्चमभगान्वितम् । ठद्वयेन समायुक्ता विद्याराज्ञी प्रकीर्तिता ॥ रतिबीजं निजबीजं । तथा च चामुण्डातन्त्रे रत्याद्या कालिका पातु द्वाविंशाक्षररूपिणी इत्येक वाक्यात् ॥ तेन प्रणवो मायाबीजं निजबीजं पपञ्चमभेकारसंयुक्तं वह्निवल्लभा । अस्याः पूजाप्रयोगः ॥ प्रातः कृत्यादिकप्राणायामान्तं कर्म विधाय ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् । यथा अस्य मन्त्रस्य भैरवऋषिर्विराट्छन्दः सिद्धकाली ब्रह्मरूपा भुवनेश्वरी देवता निजबीजं बीजं लज्जाबीजं शक्तिः । वर्णन्यासकरांगन्यासौ च दक्षिणावत्। ध्यानं तु। खड्गोद्भिन्नेंदुखण्डस्रवदमृतरसाप्लावितांगी त्रिनेत्रा सव्ये पाणौ कपालाद्गलदसृजमथो भुक्तकेशी पिबन्ती ॥ दिग्वस्त्रा बद्धकाञ्ची मणिमयमुकुटाद्यैर्युता दीप्तजिह्वा पायान्नीलोत्पलाभा रविशशिविलसत्कुन्तलालीढपादा ॥ एवं ध्यात्वा दक्षिणावत् सर्वं कार्यम् ॥ पुरश्चरणं तु एकविंशतिसहस्रजपः । तदुक्तं कालीतन्त्रे

जपेद्विंशतिसाहस्रं सहस्रैकेन संयुतम् ॥ होममेत्तद्दशांशेन मृदुपुष्पेण मन्त्रवित् ॥ १० ॥

कालीतंत्रमें लिखा है कि हे कमलानने ! सबमें प्रधान मंत्र कहता हूं आप एकाग्र चित्तसे सुनिये । ॐ ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं। इस मंत्रको दक्षिणकालिकाका एकविंशत्यक्षरमंत्र जानना चाहिये । इस मन्त्रोद्धारका प्रमाण अन्यान्य तन्त्रोंमें भी लिखा है । दक्षिणकालिकाकी पूजाप्रणालीके क्रमसे इस मंत्रकी पूजा इत्यादि सब कार्य करने चाहिये । तंत्रमें कहा है कि एक लाख जपसे इस मंत्रका पुरश्चरण होता है । जपका दशांश पुरश्चरणांग होम करना चाहिये। विश्वसारतंत्रमें लिखा है कि इस मंत्रके अंतमें स्वाहा यह दोनों अक्षर जोडनेपर तेईस अक्षरका मंत्र होता है। यथा-ॐ ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा । इस तेईस अक्षरवाले मंत्रका प्रणव छोडकर देनेपर द्वाविंशाक्षर अर्थात् बाईस अक्षरका मंत्र होता है । यथा-ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा । उक्त त्रयोविंशाक्षर मंत्रके अंतका स्वाहापद अलग करनेपर एकविंशाक्षर (इक्कीस अक्षरका) मंत्र होगा । यथा-ॐ ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं यह मंत्र सब कामनाओंका फल देनेवाला है । त्रयोविंशाक्षर मंत्रान्तर्गत प्रणव और स्वाहापद परित्याग करनेपर विंशाक्षर मंत्र होगा । यथा-ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ

क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं। इन सब मन्त्रोंका ध्यान पूजादि दक्षिणकालिकाकी पूजापद्धतिके क्रमसे करना चाहिये। भैरवतंत्रमें लिखा है कि क्रीं क्रीं हूँ यह तीन अक्षरका मंत्र चामुण्डाकालिकाके साधनमें प्रशस्त है। अन्यान्य तंत्रोंमें लिखा है। शिवजी बोले हे प्रिये! अब महामन्त्र कहता हूं इस महोदय मन्त्रको पूर्वकालमें श्रीभैरवदेवने कहा था इस मंत्रका नाम कालीहृदय है। इसी मंत्रको जानलेनेके प्रभावसे मैं तीनों जगत्को संकलन (सृजन) करता हूं। ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा यह मन्त्र सब मन्त्रोंका राजा कहकर प्रसिद्ध है। चामुण्डातन्त्रोक्त रत्याद्या कालिका पातु इत्यादि वचनके सहित प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य इत्यादि वचनकी एकवाक्यतावशतः यह मंत्र उद्धृत हुआ है। इस मन्त्रकी पूजाप्रणाली यह है यथा पूर्वोक्त सामान्य पूजापद्धतिके नियमानुसार प्रातःकृत्यादिसे आरंभ करके प्राणायामतक कर्म समापन करके ऋष्यादि न्यास करना चाहिये। यथा मस्तकमें भैरव ऋषये नमः, मुखमें विराट् छंदसे नमः, हृदयमें सिद्धकाली ब्रह्मरूपा भुवनेश्वरी देवतायै नमः, गुह्यमें क्रीं बीजाय नमः, पादयोः ह्रीं शक्तये नमः। फिर पीछे दक्षिण-कालिकाकी पूजापद्धतिके क्रमानुसार वर्णन्यास और कराङ्गन्यास करना चाहिये। इस देवीका ध्यान यह है यथा खड्गोद्भिन्न इंदुखण्डसे जो अमृतकी धारा गिरती है, इस अमृतके रससे देवीका सर्वांग भीज गया है। यह तीन नेत्रवाली और इन्होंने बांये हाथमें नरमुण्ड धारण किया है इस मुंडसे जो खूनकी धारा टपकती है देवी उसके पान करनेमें नियुक्त है देवी खुले

बालवाली और नग्न है इनकी कमर मेखलासे घिरी हुई हैं और वह मणिमय मुकुटादि गहनोंसे विभूषित है इनके देहकी कान्ति नीलकमलके सदृश और लपलपाती हुई जीभ अग्निके शिखाके समान दीप्तिशाली है। देवी सूर्यचंद्रविराजित दो कुण्डल धारण करके आलीढ चरणसे विद्यमान है इस प्रकार देवीका ध्यान करके दक्षिणकालिका देवीकी पूजापद्धतिके अनुसार समस्त पूजाकार्य करे। इक्कीस हजार जपनेसे इस मंत्रका पुरश्चरण होता है। कालीतंत्रमें लिखा है कि साधक इस मंत्रके पुरश्चरणमें इक्कीस हजार जपकर सिरसके पुष्पोंसे जपका दशांश होम करे॥१०॥

मतांतरम्।

विश्वसारे। मूलबीजं ततो माया लज्जाबीजं ततः परम्। महाविद्या महाकाल्या महाकालेन भाषिता॥ वर्गाद्यं बह्निसंयुक्त रतिबिन्दुसमन्वितम्॥ एतत्त्रयं वह्निवल्लभा॥ निजबीजत्रयं फट् वह्निवल्लभा॥ निजबीजत्रयं कूर्चं लज्जा पुनस्तान्येव वह्निवल्लभा॥ वाग्भवं नमो मूलबीजं पुनस्तदेव कालिकायै वह्निवल्लभा॥ एतासां पूजाप्रयोगः प्रातःकृत्यादिप्राणायामान्तं विधाय ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् यथा—दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दः कालिका देवता। शिरसि दक्षिणामूर्तिर्ऋषये नमः। मुखे पंक्तिच्छंदसे नमः। हृदि कालिकायै देवतायै नमः॥ ततो ध्यानम्। चतुर्भुजा कृष्णवर्णा मुण्डमालाविभूषिता॥ खड्गं च दक्षिणे पाणौ बिभ्रतीन्दीवरद्वयम्॥ कर्त्रीं च

खर्परं चैव क्रमाद्वामेन बिभ्रती॥ द्यां लिखन्तीं जटामेकां बिभ्रती शिरसा द्वयीम्॥ मुण्डमालाधरा शीर्षे ग्रीवायामथ चापराम् । वक्षसा नागहारं च बिभ्रती रक्तलोचना॥ कृष्णवस्त्रधरा कट्यां व्याघ्राजिनसमन्विता। वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम्॥ विलाप्य सिंहपृष्ठे तु लेलिहानासवं स्वयम्॥ साट्टहासा महाघोररावयुक्ता सुभीषणा॥ एवं ध्यात्वा अन्यत्सर्वं दक्षिणावत्कुर्यात्। पूर्वोक्तानां मन्त्राणां सर्वं दक्षिणावत्कार्यम्। अस्यपुरश्चरणं लक्षद्वयं जपः। अन्यासां मन्त्रवर्णसंख्यलक्षजपः। निजबीजद्वयं मायाद्वयं दक्षिणकालिके वह्निवल्लभा निजं कूर्चं लज्जा दक्षिणे कालिके फट् मूलबीजद्वयं लज्जाद्वयं दक्षिणे कालिके पूर्वषड्बीजानि वह्निवल्लभा॥ एतासां पूजाप्रयोगः। प्रातःकृत्यादि प्राणायामान्तं विधाय ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्। एतासां दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिश्छन्दः दक्षिणकालिका देवता। अन्यत्सर्वं दक्षिणावत्॥ निजबीजं वह्निवल्लभा। भैरवोऽस्य ऋषिः। निजबीजद्वयं कूर्चद्वयं लज्जायुगं वह्निवल्लभा। निजबीजं कूर्चं लज्जा वह्निवल्लभा। अस्य पंचवक्त्र ऋषिः। मूलत्रयं कूर्चद्वयं लज्जाद्वयं वह्निवल्लभा। मूलबीजं दक्षिणे कालिके वह्निवल्लभा। निजबीजं कूर्चद्वयं मायां पुनस्तानि वह्निवल्लभा॥ मूलद्वयं कूर्चद्वयं लज्जाद्वयं पुनस्तान्येव वह्निवल्लभा। निजबीजत्रयं लज्जाद्वयं कूर्चद्वयं पुनस्तान्येव वह्निवल्लभा॥ हृदयं वाग्भवं मूलद्वयं कालिकायै।

ठद्वयम् । हृदयं पाशद्वयं अङ्कुशद्वयं फट् स्वाहा कालिके कूर्चम् । एतासां ऋष्यादिकं पूजादिकं च दक्षिणावत् । पुरश्चरणं लक्षजपः । एतासां विद्यानां प्रमाणं विश्वसारे । अथ पंचाक्षरीं वक्ष्ये शृणुष्व कमलानने । प्रजापतिं समुद्धृत्य वह्न्यारूढं ततः प्रिये ॥ चतुर्थस्वरसंयुक्तं नाना बिन्दुविभूषितम् । बीजत्रयं क्रमेणैव तदन्ते वह्निसुन्दरी ॥ पंचाक्षरी महाविद्या कथिता पद्मयोनिना । षडक्षरीं महाकालीं वक्ष्यामि शृणु पार्वति ॥ बीजत्रयं समुद्धृत्य अस्त्रमन्त्रं समुद्धरेत् । वह्निजायावधिप्रोक्ता विद्या त्रैलोक्यमोहिनी ॥ अष्टाक्षरी महाविद्या कथ्यते परमेश्वरि । बीजत्रयं क्रमेणैव पुनर्बीजत्रयं सुधीः ॥ स्वाहान्ता कथिता विद्या चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ एकदशाक्षरी विद्या कथ्यते परमेश्वरि ॥ वाग्भवं हृदयं पश्चाद्वह्न्यारूढं प्रजापतिम् । चतुर्थस्वरसंयुक्तं बिन्दुनादविभूषितम् ॥ द्विगुणं च ततः कृत्वा ङेऽन्तं च कालिकापदम् । स्वाहांता कथिता विद्या प्रिये एकादशाक्षरी ॥ ऋषिः स्याद्दक्षिणामूर्तिश्छन्दः पंक्तिरुदाहृतम् । परात्परतरा शक्तिः कालिका देवता स्मृता ॥ एकादशाक्षरी विद्या कालिकायाः सुदुर्लभा । लक्षद्वयं जपेद्विद्यां पुरश्चरण कर्मणि । अन्यासां वर्णलक्षं स्यात्कथितं पद्मयोनिना ॥ अन्यासामुक्तपञ्चाक्षरीप्रभृतीनाम् । अस्या ध्यानम् । चतुर्भुजां कृष्णवर्णामित्यादि ॥ मूलबीजं ततो मायां लज्जाबीजं ततः परम् । दक्षिणे कालिके चेति तदन्ते वह्नि-

सुन्दरी ॥ एकादशाक्षरी काली चतुर्वर्गफलप्रदा । दशाक्षरी महाविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ कवचं मूलबीजाद्यं तदन्ते भुवनेश्वरी । दक्षिणे कालिके चेति अस्त्रान्ता समुदीरिता ॥ ११ ॥

विश्वसारतन्त्रमें दक्षिणकालिकाके जो सब मन्त्र लिखे हैं। वह सब मन्त्र कहता हूं यथा—क्रीं ह्रीं ह्रीं महाकालीका यह महामन्त्र स्वयं महाकालने कहा है। क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा। क्रीं क्रीं क्रीं फट् स्वाहा। क्रीं क्रीं क्रीं हूँ ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा। ऐं नमः क्रीं ऐं नमः क्रीं कालिकायै स्वाहा इन सब मंत्रोंकी पूजाप्रणाली यह है। यथा–पूर्वकथित सामान्य पूजा-पद्धतिके नियमानुसार प्रातःकृत्यादिसे प्राणायामपर्यंत कार्य करके ऋष्यादिन्यास करना चाहिये। इस ऋष्यादिन्यासका मंत्र और प्रणाली मूलमें स्पष्ट लिखी है। मूल लिखित मन्त्रसे ऋष्यादि न्यास और पूर्वोक्त प्रकारसे कराङ्गन्यासादि करके देवीका ध्यान करना चाहिये। देवी चार भुजावाली काले वर्णवाली और मुण्डमालासे विभूषित हैं। दाहिनी ओरके दोनों हाथोंमें खड्ग और दो नील कमल तथा बांई ओरके दोनों हाथमें इन्होंने कतरनी और खप्पर धारण किया है। देवीके मस्तकपर दो जटा हैं, उनमें एक आकाशको छू रही है। इनके मस्तक और गलेमें मुण्डमाला तथा वक्षस्थल(हृदय)में नागहार विराजमान है। नेत्र लालवर्ण, कमरमें काला वस्त्र और व्याघ्राजिन धारण करके शवरूपी श्रीमहादेवजीके हृदयपर बांया पैर स्थापनपूर्वक

दाहिना पैर सिंहकी पीठपर स्थापन किया है। स्वयं आसवपानमें आसक्त अट्टहासयुक्त भयंकर शब्दवाली और भयंकर आकृतिवाली है। इस प्रकार ध्यान करके दक्षिणकालिकाकी पूजाके क्रमानुसार समस्त पूजा कार्य करे। दो लाख जपनेसे इस मंत्रका पुरश्चरण होता है। अन्यान्य मन्त्रोंमें मन्त्रान्तर्गत वर्णसंख्या जितनी हो, उतनेही लाख जपनेसे इस मन्त्रका पुरश्चरण होगा। क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा। क्रीं हूँ ह्रीं दक्षिणकालिके फट्॥ क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। इन सब मन्त्रोंकी पूजाका प्रयोग यह है। यथा-पूर्वलिखित सामान्य विधिके नियमानुसार प्रातःकृत्यादिसे प्राणायामपर्यन्त कर्म करके ऋष्यादिन्यास करे। शिरसि दक्षिणामूर्तिऋषये नमः, मुखे पंक्तिछन्दसे नमः, हृदये दक्षिण-कालिकायै देवतायै नमः। अन्यान्य पूजाका क्रम दक्षिणकालि-काकी समान जानना चाहिये। क्रीं स्वाहा इस मन्त्रसे भैरव ऋषि हैं। अन्यान्य पूजाओंका कार्य दक्षिणकालिकाके समान जाने। क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा इस पञ्चाक्षर मंत्रके पंचवक्त्र (शिव) ऋषि हैं, केवल इतनीही विशेषता है। अन्यान्य सब कार्योंको पूर्ववत् करना चाहिये। क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। क्रीं दक्षिणकालिके स्वाहा। क्रीं हूँ हूँ ह्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं स्वाहा। क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ स्वाहा। नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।

नमः आँ आँ क्रों क्रों फट् स्वाहा कालिके हूँ। इन सब मंत्रोंका ऋष्यादि न्यास और पूजादि दक्षिणकालिका देवीकी पूजापद्धतिके क्रमानुसार करनी चाहिये। एक लाख जपनेसे इन सब मन्त्रोंका पुरश्चरण होता है। विश्वसारतन्त्रमें जो सब प्रमाण लिखे हैं वेही सब प्रमाण यहां ग्रंथकारने उद्धृत किये हैं। उक्त तंत्रमें लिखा है कि हे कमलानने! अब पञ्चाक्षर मंत्र कहता हूं आप सुनिये। क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा यह पञ्चाक्षर मंत्र स्वयं पद्मयोनि ब्रह्माजीने कहा है। हे पार्वती! कालिका देवीका षडाक्षर मंत्र कहता हूं सुनिये। क्रीं क्रीं क्रीं फट् स्वाहा यह मंत्र तीनों लोकको मोहित करनेवाला है। हे परमेश्वरि! अष्टाक्षरमंत्र कहा जाता है। क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा यह अष्टाक्षर मंत्र चतुर्वर्ग अर्थात धर्म अर्थ काम मोक्ष प्रदान करता है। हे परमेश्वरि! एकादशाक्षर मंत्र कहा जाता है ऐं नमः क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा इस मंत्रके दक्षिणामूर्ति ऋषि, पंक्ति छंद, ह्रीं शक्ति और कालिका देवता हैं। कालिका देवीका यह एकादशाक्षर मंत्र अति दुर्लभ है। इस मंत्रके पुरश्चरणमें दो लाख जपना चाहिये। पंचाक्षर इत्यादि अन्यान्य मन्त्रोंके पुरश्चरणमें मंत्रमें जितने वर्ण हों उतनेही लाख जपना चाहिये। इस मंत्रकी पूजामें पूर्वोक्त (चतुर्भुजां कृष्णवर्णां) इत्यादि ध्यान करना चाहिये। दक्षिण-कालिका देवीका अन्य एकादशाक्षर मंत्र यह है क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा। यह एकादशाक्षर मंत्र धर्म अर्थ काम और मोक्ष यह चतुर्वर्ग प्रदान करता है। चतुर्वर्ग फलदायक दशाक्षर मंत्र यह है क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके फट् ॥ ११ ॥

अथापरां प्रवक्ष्यामि विद्यां विंशतिवर्णिकाम्। यस्याः प्रसादमात्रेण भवेद्भूमिपुरन्दरः ॥ मूलबीजद्वयं ब्रूयात्ततः कूर्चद्वयं वदेत् । लज्जाद्वयं समुद्धृत्य सम्बुद्ध्यन्तपदद्वयम् ॥ पूर्ववत् षट् तथा बीजान्यन्ते च वह्निसुन्दरी । ऋषिः स्याद्दक्षिणामूर्तिः पंक्तिश्छन्द उदाहृतम् ॥ देवता कथिता सद्भिः काली दक्षिणपूर्विका ॥ १२ ॥

अब विंशतिवर्णात्मक (बीस अक्षर) मंत्र कहा जाता है। इस मंत्रके प्रसादसे साधक पृथ्वीमें इंद्रके समान हो सकता है। क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा । इस मंत्रके दक्षिणमूर्ति ऋषि पंक्ति छंद और दक्षिण-कालिका देवता हैं ॥ १२ ॥

अथापरां प्रवक्ष्यामि विद्यां त्रिभुवनेश्वरीम्। निजबीजं समुद्धृत्य तदन्ते वह्निसुन्दरी ॥ भैरवोऽस्य ऋषिः प्रोक्तः सर्वतन्त्रसमन्वितः ॥ अष्टाक्षरी तु या प्रोक्ता सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥ निजबीजद्वयं कूर्चद्वयं लज्जाद्वयं ततः । स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्वकामफलप्रदा ॥ निजं कूर्चं तथा लज्जा तदन्ते वह्निसुन्दरी । पञ्चाक्षरी महाविद्या पञ्चवक्त्र ऋषिः स्मृतः ॥ नवाक्षरीं महाविद्यां शृणुष्व कमलानने । निजबीजत्रयं कूर्चयुग्मं लज्जायुगं ततः ॥ स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्वसम्पत्करी मता ॥ १३ ॥

अब अन्य मंत्र कहा जाता है। क्रीं स्वाहा इस मंत्रके भैरव ऋषि हैं। सर्वतंत्रसम्मत अष्टाक्षर मंत्र यह है क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा यह अष्टाक्षर मंत्र सब कामनाओंका फल देनेवाला है। क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा इस पञ्चाक्षर मंत्रके पंचवक्त्र ऋषि हैं। हे कमलानने! नवाक्षरी विद्या सुनो। क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। इस नवाक्षर मंत्रसे देवीकी आराधना करनेपर साधक सर्व सम्पत्ति प्राप्त करता है ॥ १३ ॥

अथापरां प्रवक्ष्यामि विद्यां तां च नवाक्षरीम्। मूलबीजं समुद्धृत्य सम्बुद्ध्यन्तपदद्वयम् ॥ स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्वशत्रुक्षयङ्करी ॥ १४ ॥

अब अन्य नवाक्षर महामंत्र कहता हूं। क्रीं दक्षिणेकालिके स्वाहा इस नवाक्षर महामंत्रके द्वारा दक्षिणकालिका देवीकी आराधना करनेपर साधकके सब वैरियोंका नाश हो जाता है॥ १४॥

अथ चाष्टाक्षरीं विद्यां शृणुष्व कमलानने। निजबीजं ततः कूर्चं ततो मायां समुद्धरेत् ॥ पुनस्तानि समुद्धृत्य स्वाहान्ता मोक्षदायिनी ॥ १८ ॥

हे कमलानने! अब अन्य अष्टाक्षर महामंत्र सुनिये। क्रीं हूँ ह्रीं क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा इस अष्टाक्षर महामंत्रके जपनेपर साधक मुक्तिपद पा लेता है ॥ १५ ॥

अथापरां प्रवक्ष्यामि दशतत्वसमन्विताम्। मूलद्वयं कूर्चयुग्मं तथा लज्जाद्वयं ततः ॥ पुनस्तान्येव बीजानि

तदन्ते वह्निसुन्दरी। चतुर्दशाक्षरी विद्या चतुर्वर्गफल-प्रदा ॥ ब्रह्मत्रयं समुद्धृत्य रतिवह्निसमन्वितम्। नाना-बिन्दुसमायुक्तं कूर्चलज्जाद्वयं ततः ॥ पुनः क्रमेण चोद्धृत्य वह्निजायावधिर्मनुः। षोडशीयं समाख्याता विद्या कल्प-द्रुमोपमा ॥ मायातन्त्रे ॥ हृदयं वाग्भवं देवि निजबी-जयुगं ततः। कालिकायै पदं चोक्त्वा तदन्ते वह्नि-सुन्दरी ॥ तन्त्रान्तरे ॥ नमः पाशाङ्कुशौ द्वेधा फट् स्वाहा कालि कालिके। दीर्घतनुच्छदं काली मनुः पंच-दशाक्षरः ॥ एतेषां पूजनं देवि दक्षिणावत्सुरेश्वरि। लक्षसंख्यं जपं कुर्यात् पुरश्चरणसिद्धये ॥ एतासां पूजा-यन्त्रं कालीतन्त्रे। आदौ त्रिकोणं विन्यस्य त्रिकोणं तद्बहिर्न्यसेत्। ततो वै विलिखेन्मन्त्री त्रिकोणत्रयमुत्त-मम् ॥ ततो वृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः। वृत्तं विलिख्य विधिवल्लिखेद्भूपुरमेककम् ॥ कुमारीकल्पे ॥ मध्ये तु चैन्दवं चक्रं बीजमायाविभूषितम् ॥ १६ ॥

अब दशतत्वसमन्वित अन्य मंत्र कहा जाता है। क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। इस चतुर्दशाक्षर महामंत्रके द्वारा देवीकी पूजा करनेपर साधक चतुर्वर्ग (धर्म अर्थ काम मोक्ष) फल प्राप्त करता है। क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। यह षोडशाक्षर मंत्र कल्पवृक्षकी समान है। साधक जो जो कामना करके इस मंत्रको जपता है, उसकी वही वही अभिलाषा पूर्ण होती है। मायातंत्रमें यह मंत्र लिखा है नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा। तंत्रांतरमें

दक्षिणकालिका देवीका जो पञ्चदशाक्षर मंत्र लिखा है वह यह है नमः आँ क्राँ आं क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं। दक्षिणकालिकाकी पूजापद्धति अवलम्बन करके उक्त मंत्रोंकी पूजादि करे। एक लाख जपसे इन सब मंत्रोंका पुरश्चरण होता है। इन सब मंत्रोंकी पूजा यन्त्रके सम्बंधमें जो सब प्रमाण कालीतंत्रमें लिखे हैं, वे सब वचन इस स्थानमें ग्रंथकारने उद्धृत किये हैं ॥ १६ ॥

अथ गुह्यकाली।

तत्र विश्वसारे। अथ वक्ष्ये महेशानि विद्यां सर्वफलप्रदाम्। चतुर्वर्गप्रदां साक्षान्महापातकनाशिनीम् ॥ सर्वसिद्धि प्रदा नित्यां भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्। गुह्यकालीं महाविद्यां त्रैलोक्ये चातिदुर्लभाम् ॥ इन्द्रादिरूढं वर्गाद्यं रतिबिन्दुसमन्वितम्। त्रिगुणं च ततः कृत्वा ईशानं च समुद्धरेत् ॥ षष्ठद्वयसमायुक्तं नादबिन्दुकलान्वितम्। द्विगुणं च ततः कृत्वा ईशानद्वयमुद्धरेत् ॥ वामाक्षि वह्निसंयुक्तं नादबिन्दुकलायुतम्। तद्गुह्ये कालिके प्रोक्त्वा चाथवा दक्षिणे वदेत् ॥ सप्तबीजं ततः पूर्वं क्रमेण योजयेत्ततः। वह्निजायावधिः प्रोक्ता विद्या त्रैलोक्यमोहिनी ॥ अथवेति गुह्ये कलिके दक्षिणे कालिके वा मन्त्रः ॥ कामबीजं ततः कूर्चं तदन्ते भुवनेश्वरी। गुह्ये च कालिके चेति तथा बीजद्वयं भवेत् ॥ स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता। एषा तु षोडशी

प्रोक्ता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ अस्यार्थः । आदौ निजबीजं ततः कूर्चं माया ततः सम्बोधनपदद्वयम् । ततो निजबीजद्वयं कूर्चद्वयं वह्निवल्लभा । कामबीजद्वयं हित्वा भवेद्विद्या चतुर्दशी ॥ अस्य मन्त्रस्येति शेषः ॥ सप्तबीजं पुरा प्रोक्तं गुह्येऽन्ते कालिके पुनः । स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥ एषापि चतुर्दशाक्षरी । अस्या नामादिपदं हित्वा दक्षिणे चेत् तदा पञ्चदशाक्षरी । तथा च ॥ दक्षिणेपदमाभाष्य भवेत्पंचदशाक्षरी ॥ तथा ॥ काकबीजं परित्यज्य अथवा षोडशाक्षरी ॥ एतेन षोडशाक्षरविद्यायाः कामबीजाभावेन पंचदशाक्षरी भवति ॥ कामबीजं समुद्धृत्य सम्बुद्धयन्तपदद्वयम् ॥ पुनः कामं तदन्ते च दद्याद्वह्नेश्च सुन्दराम्॥ एषा नवाक्षरी विद्या गुह्यकाल्याः समीरिता । दक्षिणेपदमाभाष्य भवेद्विद्या दशाक्षरी ॥ एतासां पूजनं तु तत्रैव ॥ पूर्ववन्न्यासवर्गं तु पूर्ववत् पूजयेच्छिवाम् । पूर्ववच्च जपेद्विद्यां सर्वं पूर्ववदेव हि ॥ बलिदानं यथामन्त्रं पूर्ववत्परिकल्पयेत् ॥ बलिमन्त्रस्तु । ऐं ह्रीं एह्येहि जगन्मातर्जगतां जननि गृह्ण गृह्ण मम बलिं सिद्धिं देहि देहि शत्रुक्षयं कुरु कुरु हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं फट् फट् ॐ कालिकायै नमः फट् स्वाहा । गुह्यकाल्या अयं बलिमन्त्रं । एह्येहि गुह्यकालिके मम बलिं गृह्ण गृह्ण मम शत्रून् नाशय नाशय खादय खादय स्फुर स्फुर छिन्धि छिन्धि सिद्धिं

देहि देहि हूँ फट् स्वाहा । अथायं वासनमन्त्रः । ॐ सदाशिवमहाप्रेताय गुह्यकाल्यासनाय नमः ॥ १७ ॥

अब गुह्यकालीका मन्त्र और पूजाकी प्रणाली कही जाती है। विश्वसार तन्त्रमें लिखा है कि हे महेशानि ! सर्वफलदायक धर्मार्थकाममोक्षदायिनी महापातकनाशिनी सर्वसिद्धिदायिनी सनातनी भोग और मोक्ष देनेवाली महाविद्या गुह्यकालीके मंत्रादि कहता हूं । यह महाविद्या त्रिभुवनमें अत्यंत दुर्लभ है । गुह्य-कालिका देवीका मन्त्र यह है । क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। गुह्यकालिकाका अन्य मंत्र यह है यथा-क्रीं हूँ ह्रींगुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा । इस षोड-शाक्षर मन्त्रसे आराधना करनेपर देवी साधकको चतुर्वर्गफल (धर्मार्थकाममोक्ष) प्रदान करती हैं इस देवताका चतुर्दशाक्षर मन्त्र यह है यथा क्रीं हूँ ह्रीं गुह्ये कालिके हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। अन्य चतुर्दशाक्षर मन्त्र यथा-क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके स्वाहा। यह चतुर्दशाक्षर मन्त्र सब तन्त्रोंमें गुप्त रक्खा गया है । पूर्वोक्त चतुर्दशाक्षर मन्त्रका गुह्ये यह पद त्याग कर दक्षिणे इस पदको जोडनेपर पंचदशाक्षर मन्त्र होता है । सो यह है क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा ॥ अन्य प्रकारसेभी पंचदशाक्षर मन्त्र होता है। पूर्वोक्त षोडशाक्षर मन्त्रका प्रथम बीज त्याग देनेपर पञ्चदशाक्षर मन्त्र होता है । यथा-हूँ ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। गुह्य कालिका देवीका नवाक्षर मन्त्र यह है क्रीं गुह्ये कालिके

क्रीं स्वाहा । उक्त देवताका दशाक्षर मन्त्र यह है क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा । दक्षिण कालिकाकी पूजापद्धतिमें लिखे नियमानुसार न्यासादि करके पूजा और बलिदान करे। बलिदानमें कुछेक विशेषता है, पूर्वनियमानुसार बलि उत्सर्ग करके ऐं ह्रीं एह्येहि इत्यादि मन्त्रसे बलि निवेदन करे। आसनके मन्त्रमेंभी कुछेक विशेषता है जोकि मूलके देखनेसे विदित हो जायगी॥१७॥

भद्रकाल्यादयो विद्याः कथ्यन्ते शृणु पार्वति। कामबीजादिकं बीजं सर्वं पूरा परे यजेत् ॥ भद्रकालीं तथा ङेऽन्तां बीजमध्ये नियोजयेत् । स्वाहान्ता कथिता विद्या विंशद्वर्णात्मिका परा ॥ चतुर्वर्गप्रदा विद्या भद्रकाली शुभावहा ॥ सप्तबीजं समुद्धृत्य श्मशानकालिचेत्तथा ॥ पुनर्बीजं क्रमेणैव स्वाहान्ता सर्वसिद्धिदा । विंशत्येकाधिका विद्या श्मशानकालिका मता ॥ बीजानि चोच्चरेत्पूर्वं महाकालिपदं ततः। तदन्ते सप्तबीजानि स्वाहान्ता सर्वसिद्धिदा ॥ विंशत्यर्णा महाविद्या महाकाल्याः प्रकीर्तिता एतासां पूजनं जपश्च दक्षिणावत् । विशेषस्तु भूपुरे इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत् । भूपुरस्य चतुर्द्वारे विष्णुं शिवं सूर्यं गणेशं पूजयेत् । तद्यथा॥ भूगृहे लोकपालांश्च तदस्त्राणि च तद्बहिः। भूपुरे च चतुर्दिक्षु पूजयेत क्रमतः सुधाः ॥ विष्णुं शिवं तथा सूर्यं गणेशं पूजयेत्ततः ॥ यन्त्रस्तु ॥ त्रिकोणं चैव षट्कोणं नवकोणं मनोहरम् । त्रिवृत्तं साष्टपत्रं च सकिंजल्क समन्वितम् ॥ भूपुरत्रितयारूढं यानिमण्डलमण्डितम् ।

त्रिपंचारमिदं प्रोक्तं सर्वतन्त्रे प्रकीर्त्तितम् ॥ त्रिकोणं त्रिकोणाकारमित्यर्थः । ध्यानं तु ॥ महामेघप्रभां देवीं कृष्णवस्त्रपिधायिनीम् । ललज्जिह्वां घोरदंष्ट्रां कोटराक्षीं हसन्मुखीम् ॥ नागहारलतोपेतां चन्द्रार्द्धकृतशेखराम् । ब्यां लिखन्तीं जटामेकां लेलिहानासवं स्वयम् ॥ नागयज्ञोपवीताङ्गीं नागशय्यानिषेदुषीम् । पञ्चाशन्मुण्डसंयुक्तं वनमालां महोदरीम् ॥ सहस्रफणसंयुक्तमनन्तं शिरसोपरि । चतुर्दिक्षु नागफणावेष्टितां गुह्यकालिकाम् ॥ तक्षकसर्पराजेन वामकङ्कणभूषिताम् । अनन्तनागराजेन कृतदक्षिणकङ्कणाम् ॥ नागेन रसनाहारकल्पितां रत्ननूपुराम् । वामे शिवस्वरूपं तत कल्पितं वत्सरूपकम् ॥ द्विभुजां चिन्तयेद्देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् । नरदेहसमाबद्धकुण्डलश्रुतिमण्डिताम् ॥ प्रसन्न वदनां सौम्यां नवरत्नविभूषिताम् । नारदाद्यैर्मुनिगणैः सेवितां शिवमोहिनीम् ॥ अट्टहासां महाभीमां साधकाभीष्टदायिनीम् ॥ ब्यां लिखन्तीं जटामेकां इति ध्यायन्तीमिति शेषः ॥ अनन्तं शिरसोपरि दधतीमिति शेषः— गुह्येत्युपलक्षणम् ॥ १८ ॥

अब भद्रकाल्यादि देवताका मंत्र और पूजाकी प्रणाली इत्यादि कही जाती है क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा यह बीस वर्णवाली शुभदायक भद्रकाली देवी साधकको चतुर्वर्ग प्रदान करती है। श्मशानकालिका देवीका मंत्र यह है क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं श्मशानकालि क्रीं क्रीं क्रीं

हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। इस इक्कीस अक्षरके मंत्रसे श्मशानकाली देवीकी पूजा करे महाकालीका मंत्र यह है क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं महाकालो क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा इस वीस अक्षरके मंत्रसे महाकाली देवीकी पूजादि करे। पूर्व लिखित दक्षिणकालिका देवीकी पूजापद्धतिके क्रमानुसार इन भद्रकाली इत्यादि देवताओंकी पूजा करे। इन देवियोंकी पूजामें विशेषता यही है कि यंत्रके भूपुरमें इंद्रादि दश दिक्पाल और वज्रादि अस्त्र भूपुरके चतुर्द्वारमें विष्णु, शिव, सूर्य और गणेश भूगृहमें लोकपाल बाहिरी भागमें देवीके अस्त्र, भूपुरके चारों ओर पूर्वादि क्रमसे विष्णु शिव सूर्य और गणेशजीकी पूजा करे। इसी प्रकार यंत्रमेंही गुह्यकाली, भद्रकाली, श्मशानकाली और महाकाली इन चारों देवताओंकी पूजा करनी चाहिये। इनका यंत्रसंबंधी किसी प्रकारका भेद नहीं है। इस यंत्रके अंकित करनेकी रीति यह है कि प्रथम त्रिकोण षट्कोण और नवकोण अंकित करके उसके बाहर तीन वृत्त और केशरसहित अष्टदलसंयुक्त पद्म अंकित करके तीन भूपुरवाला चतुर्द्वारसंयुक्त योनिमंडलस्वरूप यंत्र अंकित कर लेना चाहिये। यह त्रिपश्चार यंत्र सब यंत्रोंमें प्रसिद्ध है। इस प्रकारसे यन्त्र अंकित करके फिर ध्यान करना चाहिये। देवताकी आकृति इस भांति है देवी गाढ मेघके समान कृष्ण-वर्ण, पहरावा कृष्ण वस्त्र, जीभ लाल दांत अत्यन्त भयंकर, दोनों नेत्र कोटरमें घुसे हुए, मुख हास्यपूर्ण, गलेमें नागहार, कपालमें अर्द्धचंद्र और मस्तकमें आकाशगामिनी जटा विराजमान है। यह आसवपानमें आसक्त है। नागका यज्ञोपवीत धारण करके

नागकी शय्यापर विराजमान है। इनके गलेमें पञ्चाशन्मुण्डसंयुक्त बनमाला उदर बहुत बडा और मस्तकपर हजार फनवाला अनन्त नागराज है। गुह्यकालिका देवी चारों ओरसे नागफण-वेष्टिता हैं इन्होंने तक्षकनागराजद्वारा वामकंकण, अनन्त नाग-द्वारा दक्षिण कंकण नागनिर्मित तगडी और रत्नजडित पाजेब धारण करी हैं। वामभागमें शिवस्वरूप कल्पित वत्स हैं। देवीके दो हाथ हैं और दोनों कान नरदेहसंयुक्त दो कुण्डलोंसे मण्डित हैं मुख प्रसन्न और आकृति सौम्य है। नवरत्न विभूषिता शिवमोहिनी देवीकी नारदादि मुनिगण सेवा करते हैं। अट्टहास और महाभयंकरी देवी साधकको अभिलाषित फल प्रदान करती हैं। इस ध्यानमें गुह्य यह पद उपलक्षण मात्र है। भद्रकाली इत्यादिकी पूजा भी इसी ध्यानसे करनी चाहिये ॥ १८ ॥

इति श्यामाप्रकरण समाप्त।

उच्छिष्टगणेशमन्त्रः।

ॐ हस्ति पिशाचिनि खे ठद्वयं। तन्त्रांतरे॥ हस्ति पदं समुच्चार्य पिशाचिनिपदं ततः देवराजसनेत्रं च कान्तमी॰स्वरान्वितम ॥ वह्निजायावधिर्मन्त्रस्ताराद्यः सर्वकामदः ॥ प्रणवस्थाने गमिति केचित्। हस्ति पिशाचिनि खेऽग्नि वनिता गं तदादित इति तत्त्वबो-धात्। तथा॥ सारभूतमिमं मन्त्रं न देयं यस्य कस्य-चित्। गुह्यं सर्वागमेष्वेव हितबुद्ध्या प्रकाशितम्॥ तथा॥ न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासो विधीयते। यथे-ष्टचिन्तया मन्त्रः सर्वकामफलप्रदः ॥ १ ॥

अब उच्छिष्टगणेशका मंत्र और पूजाप्रणाली कही जाती है ॐ हस्ति पिशाचिनि खे स्वाहा यही उच्छिष्टगणेशका मंत्र है इस मन्त्रोद्धारके जो सब प्रमाण अन्यान्य तन्त्रोंमें लिखे हैं वे यहां ग्रंथकारने मूलमें उद्धृत किये हैं कोई कोई कहते हैं गं हस्ति पिशाचिनि खे स्वाहा यही उच्छिष्ट गणेशका मंत्र है। सब मन्त्रोंका सारभूत उच्छिष्टगणेशका मंत्र जिस किसी साधारण व्यक्तिको न देवे यह मंत्र संपूर्ण तन्त्रोंमें गुप्त है जगत्‌के हितकी कामनासे प्रकाशित हुआ है इस देवताकी आराधनामें तिथि वारादिका कोई नियम नहीं है और उपवासादिभी करना नहीं पडता। जो पुरुष जिस जिस कामनासे इस देवताकी आराधना करता है, उसका वही वही मनोरथ पूर्ण होता है ॥ १ ॥

अथ प्रयोगः ।

प्रातःकृत्यादि प्राणायामान्तं विधाय ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् । शिरसि सुघोरऋषये नमः । मुखे निबिडगायत्रीच्छन्दसे नमः । हृदि उच्छिष्टगणपतये नमः । ततः प्रणवेन कराङ्गन्यासो कृत्वा ध्यायेत् रक्तमूर्तिं गणेशं च सर्वाभरणभूषितम् । रक्तवस्त्रं त्रिनेत्रं च रक्तपद्मासने स्थितम् ॥ चतुर्भुजं महाकायं द्विदन्तं सस्मिताननम् । इष्टं च दक्षिणे हस्ते दन्तं च तदधःकरे॥ पाशाङ्कुशौ च हस्ताभ्यां जटामण्डलवेष्टितम् । ललाटे चन्द्ररेखाढ्यं सर्वालङ्कारभूषितम् ॥ एवं ध्यात्वा करस्थपुष्पैर्मूलेन शिरसि सम्पूज्य बहिःपूजामारभेत् । अष्टदलपद्मं लिखित्वा पूजयेत् । तत्र प्रथमं मूलेनार्घ्यं संस्थाप्य,

दशधा मूलं प्रजप्य, तेनोदकेनात्मानं पूजोपकरणं चाभ्युक्ष्य, पुनर्ध्यात्वा, अष्टदलपद्ममध्ये स्थापयेत्। ततः पञ्चोपचारैः संपूज्य पत्रेषु पूर्वादि ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा। एवं एकदन्ताय स्वाहा। लम्बोदराय विकटाय विघ्नेशाय गजवक्राय विनायकाय गणपतये, मध्ये हस्तिमुखाय। सर्वत्र स्वाहान्तता। पुनर्देवं त्रिः सम्पूज्य, यथाशक्ति जपं कृत्वा समर्प्य, बलिरूपनैवेद्यमुपनीय॥ ॐ उच्छिष्टगणेशाय महाकालाय एष बलिर्नमः इति बलिं दत्त्वा, आचमनीयादिकं दद्यात्। विशेषफलकांक्षिभिः पुनः ह्रांह्रींह्रैंह्रूं फट् स्वाहा इत्यनेन बलिं दद्यात्। ततः पुष्पमेकं दक्षिणदिशि क्षिप्त्वा, क्षमस्वेति विसर्जयेत्॥ अस्य पुरश्चरणं षोडशसहस्रजपः। तथा च॥ कृष्णां चतुर्थीमारभ्य यावच्छुक्लचतुर्थिका। सहस्रं हि जपेन्नित्यं योषिन्नियमपूर्वकम्॥ स्नापयेन्मधुना नित्यं नैवेद्यं गुडपायसम्। भुक्तोच्छिष्टौ जपेन्नित्यं गणेशोऽहं सदा प्रियः॥ श्वेतार्कणाकृतिं कृत्वा रक्तचन्दनकेन वा। प्रतिष्ठायाङ्गुष्ठमात्रं द्विजाग्निगुरुसन्निधौ॥ जप्त्वा षोडशसाहस्रयं सिद्धमन्त्रो भवेद्ध्रुवम्॥ योषिदिति योषिदुपगमने नियमपुरःसरमित्यर्थं। नतु त्यागनियमः। अप्रङ्गादनौचित्यादनाचान्त इति दर्शनात्॥ उच्छिष्टश्चाशुचिर्भूत्वा जपपूजनमाचरेत्। अनुच्छिष्टेन सिध्येत तस्मादेवं समाचरेत्॥ इति तन्त्रान्तरवचनाच्च। केषांचिन्मते पूजा नास्ति मनसा जपेत्। केषां-

चिन्मते कराङ्गन्यासौ न स्तः। गणेशोऽहमिति पूर्वोक्तं चिन्तयेत्। गर्गमते विजने वने स्थित्वा रक्तचन्दनानुलिप्तताम्बूलमुखोच्छिष्टमुखो जपेत्। केषांचिन्मते सर्वालङ्कारभूषितः सर्वावस्थासु जपेत्। अन्यमते, सम्पूज्य मोदकं चर्वयन् भृगुमते फलमश्नन्। विभीषणमते मांसनैवेद्यं दत्त्वा तदेव खादयन्॥ २॥

उच्छिष्टगणेशकी पूजाप्रणाली यह है यथा प्रथम तो सामान्य विधिके अनुसार प्रातःकृत्यादिसे प्राणायामपर्यन्त संपूर्ण कार्य सम्पादन करने चाहिये। ऋष्यादि न्यासका मंत्र और प्रणाली मूलमें स्पष्ट रूपसे लिखी है फिर ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ मध्यमाभ्यां वषट् ॐ अनामिकाभ्यां हुँ ॐ कनिष्ठाभ्यां वौषट् ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् और ॐ हृदयाय नमः ॐ शिरसे स्वाहा ॐ शिखायै वषट् ॐ कवचाय हुँ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इस प्रकारसे कराङ्गन्यास करके फिर ध्यान करना चाहिये। उच्छिष्टगणेशकी मूर्त्ति रक्तवर्ण सब प्रकारके गहनोंसे विभूषित पहिरावा लाल वस्त्र और नेत्र इनके तीन हैं यह लाल कमलके आसनपर विराजमान हैं इन देवताके चार हाथ शरीर बड़ा दो दांत और मुख सदा हास्ययुक्त हैं दाहिनी ओरके ऊपरी हाथमें वरमुद्रा और नीचेके हाथमें एक दांत विद्यमान है। बांई ओरके ऊपरी हाथमें फांसी और नीचेके हाथमें अंकुश है। इस देवताका मस्तक जटामण्डलसे घिरा हुआ है। ललाटमें अर्द्ध चन्द्र विराजमान है। इस प्रकारसे देवताका ध्यान करके हाथका पुष्प अपने मस्तकपर स्थापनपूर्वक

आवाहन करना चाहिये। प्रथमतः मूलमन्त्रसे अर्घ्य स्थापनपूर्वक उस अर्घ्यके ऊपर मूलमन्त्र दश वार जपकर उस अर्घ्यके जलसे पूजाके उपकरण द्रव्य और अपने शरीरपर छींटे देवे और फिर दूसरी बार देवताका ध्यान करके अष्टदल पद्ममें स्थापन करना चाहिये। पीछे पञ्चोपचारसे देवताकी पूजा करके अष्टदल पद्मके पूर्वादि पत्रमें ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा इत्यादि मूललिखित देवताओंकी पूजा करे। अनन्तर पद्ममें ॐ हस्तिमुखाय स्वाहा। इस मन्त्रसे पूजा करे। फिर तीन बार मूल देवताकी पूजा करके यथाशक्ति मूलमंत्र जपता हुआ जप समर्पण करे फिर बलिरूप नैवेद्य लाकर (ॐ उच्छिष्टगणेशाय) इत्यादि मूललिखित मन्त्रसे बलि निवेदन करनी चाहिये। फिर आचमनीय जल निवेदन करे। विशेष फलकी अभिलाषा करनेवाला पुरुष पुनर्वार ह्रां ह्रीं ह्रैं ह्रूं फट् स्वाहा इस मन्त्रसे बलि निवेदन करे। अनन्तर एक पुष्प दक्षिण दिशामें फेंककर (क्षमस्व) यह कह विसर्जन करना चाहिये। इस मन्त्रके पुरश्चरणमें सोलह हजार जप करना चाहिये उसका विशेष नियम यह है कृष्णपक्षकी चौथसे आरंभ करके शुक्लपक्षकी चौथतक स्त्रीके सहयोगमें प्रतिदिन एक हजार जपना चाहिये। प्रतिदिन देवताको मधु (शहत) से स्नान कराकर गुड पायसको नैवेद्य प्रदान करे। भोजनोपरान्त विना आचमन किये उच्छिष्ट (जूंठे) मुखसेही इस देवताका मन्त्र जपना चाहिये। सफेद आक अथवा लाल चन्दन द्वारा अंगुष्ठ प्रमाण उच्छिष्ट गणेशकी प्रतिमूर्त्ति बनाकर उस मूर्त्तिमें प्राणप्रतिष्ठापूर्वक ब्राह्मण अग्नि और गुरुके समीप सोलह हजार मन्त्र जपनेपर

मंत्रकी सिद्धि होती है। उच्छिष्ट मुखसे और अशुद्ध अवस्थासे इस देवताका मन्त्र जप और पूजा कार्य करे। तन्त्रान्तरमें लिखा है कि उच्छिष्ट मुख (अशुद्ध मुख) से इस देवताका जप और पूजादि कार्य करनेपर मंत्रकी सिद्धि होती है। किसी किसी तंत्रके मतानुसार इस देवताकी आराधनामें पूजा करनेकी आवश्यकता नहीं होती केवल मानसिक जपही करना चाहिये। अन्यान्य तंत्रोंके मतानुसार कराङ्गन्यास न करे। (स्वयं मैंही गणेश स्वरूप हूं) इस प्रकार चिन्ता करके जप करे। गर्गमुनि कहते हैं कि निर्जन वनमें बैठकर रक्तचन्दन लिप्त तांबूल चावते चावते जप करना चाहिये। अन्यान्य तंत्रोंमें लिखा है कि साधक सब प्रकारके गहनोंसे विभूषित होकर सदा जप करे। अन्य तन्त्रके मतानुसार देवताकी पूजा करके लड्डू भक्षण करता हुआ जप करे। भृगु मुनिके मतानुसार उच्छिष्ट गणेशकी आराधनामें फलभोजन करता हुआ जप करे। विभीषण कहते हैं कि मांसद्वारा नैवेद्य प्रदान करके उस नैवेद्यको भोजन करता हुआ जप करे ॥ २ ॥

अथात्र प्रयोगः ।

राजद्वारे तथारण्ये सभायां गोत्रसंसदि । विषादे व्यवहारे च संग्रामे शत्रुसङ्कटे नौकायां विपिने वापि द्यूते च व्यसने तथा । ग्रामदाहे चौरविद्धे सिंहव्याघ्रादिसङ्कटे ॥ स्मरणादेव देवस्य सर्वं वै विद्रुतं भवेत् । तत्सर्वं नश्यति क्षिप्रं सूर्येणैव तमो यथा ॥ तथा ॥ सद्योच्छिष्टगणेशश्च यक्षराजेन धीमता । आराधितः

सोपहारैः सम्यगिष्टफप्रदः एवं कृत्वा व्यवस्थां तु तद्धनेश्वरतां गतः। अपामार्गसमिद्धोमे सौभाग्यं लभते ध्रुवम्॥ अष्टोत्तरशतैर्मन्त्री मूलमन्त्राभिमन्त्रितम्॥ तथा॥ वानरास्थिसमुद्भूतं कीलितं मंत्रमन्त्रितम्। निखनेन्मंदिरे यस्य भवेदुच्चाटनं परम्॥ अथ वीथ्यां खनेद्यस्य क्रयविक्रयणं हरेत्। निखनेच्छौंण्डिकागारे तन्मद्यं वैकृतं भवेत्॥ वेश्यागृहे तु निखनेद् ग्राहकं लभते न सा। कन्यागृहे तु निखनेन्न विवाहो भवेद्ध्रुवम्॥ मानुषास्थिसमुद्भूतं कीलकं चाभिमंत्रितम्। निखनेन्मंदिरे यस्य मरणं तस्य निश्चितम्॥ उद्धृते तु भवेत् स्वास्थ्यमिति सर्वस्य सम्मतम्। यस्य नाम्ना जपेन्मंत्रं सहस्रं स वशो भवेत्॥ पंचसहस्रहोमेन उद्वहेत वरां स्त्रियम्। सहस्रदशहोमेन राजा सद्यो वशो भवेत्॥ लक्षजापेन राजेव द्विलक्षे राजपंक्तयः। दशलक्षेण तद्राष्ट्रं वश्यं तस्य च सर्वथा॥ अणिमादिमहासिद्धिः कोटिहोमान्न संशयः। खेचरत्वं भवेन्नित्यं सर्वज्ञत्वं च जायते॥ मंत्रं लिखित्वा शिरसि कण्ठे वा धारयेद्यदि। सौभाग्यं सर्वरक्षा च भवेत्तत्र सुनिश्चितम्॥ ३॥

उच्छिष्ट गणेशका विशेष प्रयोग यह है। यथा-राजद्वार वन सभा गोत्रसमाज विवादव्यवहार युद्ध शत्रुसंकट नौका कानन द्यूतक्रीडा विपत्काल ग्रामदाह चौरभय और सिंहव्याघ्रादिका भय उपस्थित होनेपर इस देवताको स्मरण करनेसे सूर्यके द्वारा जिस प्रकार अंधकारका नाश होता है उसी प्रकार सब विघ्नोंका

नाश हो जाता है। बुद्धिमान् यक्षराज कुबेर सदा विविध उपहारोंके द्वारा इन उच्छिष्ट गणेशकी आराधना करते थे उसी आराधनाके बलसे वे अभिलाषित फल लाभ करके धनेश्वरत्वको प्राप्त हुए हैं। मूल मंत्रसे एक सौ आठ वार अभिमन्त्रित करके चिरचिरेकी समिधद्वारा इस देवताका होम करनेपर साधक सौभाग्य लाभ करता है। बन्दरकी हड्डीका बना कीलक उच्छिष्ट गणेशके मंत्रसे अभिमन्त्रित करके जिस किसी मनुष्यके घरमें गाड दिया जाय, उस मनुष्यका उच्चाटन होता है। यही कीलक किसी बाजारमें गाड देनेपर वहां क्रय विक्रय (खरीदना बेचना) इत्यादि व्यवहार नहीं होता, कलालके घरमें यह कीलक गाड देनेपर उस घरमें रक्खी हुई सुरा (शराब) बिगड जाती है। किसी वेश्याके घरमें यही कीलक गाड देनेपर उस वेश्याका कोई आदर नहीं करता। किसी क्वारी कन्याके घरमें इस कीलकको गाड देनेपर उस कन्याका विवाह नहीं होता। मनुष्यकी हड्डीका कीलक उक्त मन्त्रसे अभिमंत्रित करके जिसके घरमें गाड दिया जाय, उस मनुष्यकी निःसन्देह मृत्यु होती है। वह कीलक उखाड लेनेपर उक्त दोषकी शांति हो जाती है। जिसका नाम उच्चारण करके उक्त मंत्र एक हजार जपा जाय वह मनुष्य अवश्य वशीभूत होता है विवाहकी कामना करनेवाला मनुष्य यदि पांच हजार मन्त्र जपे तो वह उत्तमा स्त्री लाभ कर सकता है। इसी मन्त्रसे दश हजार होम करनेपर तत्काल राजा वशीभूत होता है। उच्छिष्टगणेशका मन्त्र एक लाख जपनेपर राजा दो लाख जपनेपर राजवर्ग और दश लाख जपनेपर राजाके समस्त राज्य वशीभूत

होते हैं। इसी मन्त्रसे एक करोड होम करनेपर साधकको अणिमादिक अष्टसिद्धि प्राप्त होती हैं आकाशमें विचरनेकी सामर्थ्य उत्पन्न होती है और सर्वज्ञता लाभ होती है यही मन्त्र भोजपत्रपर लिखकर कण्ठमें अथवा मस्तकमें धारण करनेपर साधकके सौभाग्यकी वृद्धि और सर्वत्र रक्षा होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३ ॥

इति मुरादाबादनिवासिपंडितकन्हैयालालमिश्रकर्तृकसं-
गृहीत और अनुवादित उच्छिष्टगणेशसाधन संपूर्ण।
इति अष्टसिद्धि समाप्त।

पुस्तक मिलने के स्थान–

१. खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, खेतवाडी–बम्बई.

२. गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, कल्याण–बम्बई.

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक–वाराणसी (उ. प्र.)

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.